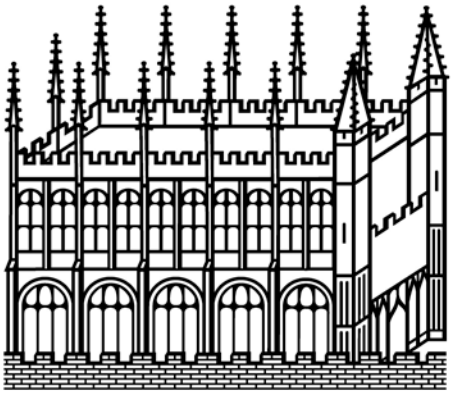


Bodleian Libraries

UNIVERSITY OF OXFORD

This book is part of the collection held by the Bodleian Libraries and scanned by Google, Inc. for the Google Books Library Project.

For more information see:

http://www.bodleian.ox.ac.uk/dbooks




This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 2.0 UK: England & Wales (CC BY-NC-SA 2.0) licence.

Hindi Sahj 3

13. D. 46.

Indian Institute, Oxford.

The Lucknow Sparks Library.
Presented
by
Munshi Newul Kishore.

Kṛishṇa-sāgara.

Krishnasagar

# कृष्णसागर

कृष्ण सागर

श्री महिलु प्रसाद वकील के पुत्र श्री राधा कृष्ण
चरणारविन्द मधुप ज़िलअ गयाजी स्थान
टेकारी निवासि हाल बासी स्थान हज़ारी बाग़
ज़िलअ हज़ारी बाग़ मुन्शी जगन्नाथ सहायकृत

## जिसमें

भूभारहरणार्थ सुरवरकरणार्थ राधा कृष्णजी के उत्तम
चरित अति सरस दोहा चौपाई आदि छन्दों में सज्जनों के
मनोरञ्जनार्थ वर्णित हैं

## स्थान तरवनऊ

दूसरी बार ग्रन्थ कर्त्ता से शोधित होकर

## मुन्शी नवलकिशोर के छापेख़ाने में छपा

मार्च सन् १८८० ईसवी ॥

# विज्ञप्ति

इस महीने अर्थात् मार्चसन् १८८० ई० पर्य्यन्त जो पुस्तकें बेचने लियेतैय्यार हैं वह इससूचीपत्रमें लिखी हैं और उनका मोल भी बहुत किफायतसे घटाकर नियत हुआ है परन्तु व्यापारियों के लिये और भी सस्ती होंगी जिन को व्यापार की इच्छा हो वह छापे खाने के मुहूर्त मिम अथवा मालिक के नाम खत भेज कर कीमत का निर्णय करलें॥

| नामकिताब | नामकिताब | नामकिताब |
|---|---|---|
| व्याकरण और जोतिष। | अमृत सागर बड़ी | महिम्नस्तोत्र |
| सिद्धान्त चन्द्रिका | अमर विनोद | श्रीगोपाल सहस्र नाम |
| लघुकौमुदी | जगद्विनोद | शिवार्च्चन |
| मुहूर्त्तचिन्तामणि सारिणी | औषधि सङ्ग्रह कल्प | सप्तशतीहरी |
| शीघ्र बोध | वल्ली | भगवद्गीता |
| पाराशरी सटीक | निघण्टु भाषा | भागवती गीता |
| मुहूर्त्त गणपति | वैद्यदर्पण | श्री मद्भागवत सटीक |
| सङ्ग्रह शिरोमणि | रामविनोद | जलकूलन |
| जातक चन्द्रिका | कोष और इतिहास। | हनुमान बाहुक |
| लघु जातक भाषाटी० स० | शिवसिंह सरोज | सुरत सागर |
| भाषा जातकालङ्कार | सामुद्रिक | ब्रह्मसार |
| संस्कृत जातकालङ्कार | गणित काम धेनु | परमार्थसार |
| जातकाभरण | कमीशन बड़ोदा | प्रेम सागर |
| मुहूर्त्तदीपक | शब्दार्थ कोष | सूर सागर |
| हीरा मकरन्द | अमरकोष प्रथम काण्ड | राग प्रकाश |
| मुहूर्त्तचिन्तामणि | अमरकोष तीनों काण्ड | भक्तमाल |
| मुहूर्त्तमार्त्तण्ड | भाषाटीका सहित | अवधयात्रा |
| वैद्यक | अनेकार्थकोष | कथा गङ्गाजी |
| शार्ङ्गधर | ब्रज विलास | रामायण टेपकी |
| वैद्यजीवन | दुर्गापाठ मूल | रामायण जिल्द बन्धी |
| वैद्यमनोत्सव | दुर्गापाठ सटीक | रामायण तुलसी कृत पक्की |
| अमृत सागर छोटी | अपराध भञ्जन स्तोत्र | रामायण तुलसी कृत स० |

# कृष्णसागर

کرشن ساگر

श्री महिप्सु प्रसाद वकील के पुत्र श्रीराधाकृष्ण
चरणारविन्द मधुप ज़िलअ़ गयाजी स्थान
देकारी निवासि हाल वासी स्थान हज़ारीबाग़
ज़िलअ़ हज़ारीबाग़ मुन्शी जगन्नाथ सहाय कृत

## जिसमें

भूभार हरण सर्व्व सुख करण राधाकृष्णजी के उत्तम
चरित्र अति सरस दोहा चौपाई आदि छन्दों में सज्जनोंके
मनोरञ्जनार्थ वर्णित हैं

## स्थान लखनऊ

दूसरी बार ग्रन्थ कर्त्ता से शोधित होकर

## मुन्शी नवलकिशोर के छापेख़ानेमें छपा

मार्च सन् १८८० ईसवी ॥

श्रीगणेशायनमः

## सूची पत्र छप्पै॥

अथ्या प्रथम संहार बाल दूजो अस्तुति सुर। तीजे जन्मन हरि उपाध चौथो कंसासुर॥ पंचम उतसौ जन्म षष्ठ महं पुतना मारी॥ सप्तम तृणा संहार चरित सिसु अष्टम भारी॥ दावरि बंधन नवम महं दशमो जमलार्जुन तरन॥ श्री कृष्ण सागर को सूचि पत्र सुनिये सुजान जन॥१॥ एकादश वध वत्स वका द्वादसहिं अघाजस॥ त्रयोदश ब्रह्मा हरन चच्छ दस चतुर विनयतस॥ धेनुक वध दस पंच षोड़सो कालीदमनो॥ धुंधुक वध दस सप्त प्रलंब अष्ट दस हननो॥ उन विंसो पावक समन विंस सरद पावस वरन॥ श्री कृष्ण॥२॥ एक विंसो गोपी परम द्वाविंस हरन चिर॥ द्विज नारी जांचन त्रविंस चौविस पूजन गिर॥ व्रज रक्षन पच्चीस विंस षड़ शक व्रज वासी॥ सप्त विंस अस्तुति सुरेस कीन्ही अविनासी॥ अष्ट विंस दधि दान ज्यों उनतिस रास विलास भन॥ श्री कृष्ण॥३॥ तीसहि गोपी विरह एकतिस कथन विरह तिन्ह॥ बत्तिस मिलन गुपाल रास तें तिस में जस किन्ह॥ चौंतिस में वध संख चूड़ पैंतिस गोपिन गित॥ छत्तिस नारद मिलन सैंतिसहिं व्योमा की गति॥ अरतिस व्रज अक्रूर कह कीन्हों वर

नन आगमन ॥ श्री कृष्णा ॥४॥ उन चालिस अक्रूर द·
रस चालिस अस्तुति तेहि ॥ एक तालिस में रजक वधन
व्यालिस भय कंसहि ॥ तेंतालिस वध व्याल कंस चौ·
वालिस मारे ॥ पैंतालिस संखवा संघार कीन्हो असुरारे
॥ छेयालिस ऊधो के गमन श्री वृन्दा वन महं चरन ॥
श्री कृष्णा ॥ ५॥ सैंतालिस परबोध गोपिका ऊधो रा·
ई । अरतालिस अक्रूर भवन जिमि गवन कन्हाई ॥ है
पुर्वार्द्ध समाप्त अध्या उनचासत मों ॥ जरासिंध की हा·
र भई जस पंचासत मों ॥ एकावन मुच कुंद कहं जैसे·
भौ उद्धारतन ॥ श्री कृष्णा ॥ ६॥ बावन में रुकमिनि सं·
देस तिरपन तेहि हरनो ॥ रुकमिनि मंगल चवन प·
चपन हि संवर मरनो ॥ छप्पन सतभा विवाह संताव
न जैसे ॥ सतधन्वा को भा संहार वरने सब तैसे ॥ अ·
ठावन जैसे प्रभुहिं पंच विवाह भयो करन ॥ श्री कृष्णा
॥७॥ उन सठ भौमा वधन साठ जिमि रुकमिनि रू·
पा ॥ एक सठ रुकुमनि पात बासठहिं सपना ऊषा ॥
तिरसठ ऊषा चरित चौसठहि नृग की मुक्ती ॥ पैंसठ
राम गमन व्रज में देखन तिन्ह भक्ती ॥ छासठ में पौंड्री·
क वध सरसठ में द्विविदो मरन ॥ श्री कृष्णा ॥८॥ अर
सठ साम्ब विवाह उन तरहिं माया दरसन ॥ सत्तर पां·
डव के संदेस एक तर हरि पहुंचन ॥ जरासिंध को वध

वहत्र तेहतर नृप छोड़न ॥ चहुंतर वधसिसु पालप-
चतरहि मानहि तोड़न ॥ मुर्छा छे हतर में भद्र जावि-
धि ते श्री परदुमन ॥ श्री कृष्ण ॥ ७ ॥ सत हत्तर वध
साल्व अठतरहिं सूत संघारन ॥ विल वल हतन उना-
सि असी सूहाम सिधारन ॥ एकासीमें तेहि दरिद्रता
दूर कीन्ह हरि ॥ व्यासी में कुर क्षेत्र गमन तिय गीत
तिरासरि ॥ चौरासी वसुदेव मख पंचासी दरसन सुत-
न ॥ श्री कृष्ण ॥ ९० ॥ हरन सुभद्रा भयो छेयासिमें सो
किय गायन ॥ सत्तासी संवाद देव ऋषि अरु नारायन
॥ अठासी भस्मा वध और सुर भेदन वासी ॥ नव्वेमें
विस्तार वंस श्री पति अविनासी ॥ जगन्नाथ याविधि
कियो सूचनिका को संपुरन ॥ श्री कृष्ण सागर को सू-
चि पत्र सुनिये सुजान जन ॥ ९१ ॥ ✣ ✣ ✣ ✣

॥ इति सूची सम्पूर्णम् ॥



श्री गणेशायनमः।

# अथ कृष्णसागर

लिख्यते

## सोरठा

बन्दौं प्रथम गणेश ॥ जो दिनकर सम ज्ञान तम।
जासु कृपा लवलेश ॥ विमल बुद्धि नर पावहीं।
बन्दौं बहुरि महेश ॥ उमा सहित करुणा सदन
सुमिरत मिटत कलेश ॥ होहु प्रसन्न सो मोहिंपर
पद पंकज तनु प्रणाम ॥ रमा रमण पालनजयत
क्षीरसिन्धु जेहि धाम ॥ बसहु सो मेरे उर सदन
श्री गुरु पद अरविन्द ॥ वन्दौं महि शिर टीकजो
देहिं ज्ञान असि वृन्द ॥ दरशि भजत जेहि मोहरिपु
जिन बिनु तरन कोय ॥ अति अपार यह भवजलधि

करहु कृपा गुरु सोइ । जेहि बरणों प्रभु चरित शुचि

## चौपाई

बन्दौं चारों वेद सुहाये । ॥ सो विधि जो यह जग उपजाये
प्रणऊं चित्र गुप्त निज देवा ॥ उधरहि नर करि अल्पहि सेवा
कार्तिक यम बुतिया जो अहई । करि पूजा नर अति सुख लहई
करि पूजा जो बिप्र जेवावै । अन्न समय हरि लोक सिधावै
नृप पापी सो दास भामा । पुष्य चढ़ाइ गयो हरि धामा
एक पुष्य ते तरे सो राजा । जो पूजहिं करि भक्ति सुकाजा
तिन्हकर फल जग वरणि सकतको । बिनु पूजा सुख लहत जगत को
पाप पुन्य कहं करहि जो लेखा । मोपर करहु सो कृपा विशेखा
छमिये सदा मोर अपराधू । महिमा जिन्ह कर अगम अगाधू

## सोरठा

बन्दौं मुनि समुदाय ॥ शुक व्यास पुनि नारदा
बालमीक कवि राय ॥ प्रणवौं शेष औ सारदा
बन्दौं संत समाज ॥ जो सहि दुख तन आपनो
करत जगत हित काज । सदा नाम प्रभु जापनो

## दोहा

बन्दौं पुनि भक्तन चरण । जिन्ह समान नहिं कोय
जिन के वश प्रभु आप हैं । महिमा विदित न गोय

## चौपाई

बन्दौं तुलसी दास गुसाईं । सूर दास पुनि तिन्ह कहं नाईं

वन्दौं सब गुण धाम कबीरा ॥ माधो दास बहुरि मनि धीरा।
ऐसेहि और सकल जो अहहीं। नाम अग्नि जस अघ बन दहहीं
करि प्रणाम अस विनय सुनावौं। दीढ भक्ति हरि के पद पावौं॥
प्रणऊँ बहुरि पिता अरु माता। जो सब सज्जन जग सुख दाता
जो प्रभु चरित देखि हरषाहीं। औ गुन त्यागि गुणहिं मन लाहीं
होहु प्रसन्न देहु वर दाना। करौं कथा श्री कृपा बरवाना
हरि प्रेरित मोहिं भद्र अभिलाषा। कहौं कथा यदु वर की भाषा
पर नहिं भक्ति चरण भगवाना। दूजे नहिं कछु संस्कृत जाना।
तातें वरणत मन सकुचाई। पंख विना किमि विहग उड़ाई
धनि धनि मारवनलालउजागर। जो जग हित गायो सुख सागर।
तेहि तें श्याम करौं चौपाई। विपुल ग्रन्थ भाषा चल पाई॥

## सोरठा

हौं सब विधि मति मन्द। नरण चहौं यदु भव जलधि
गाद चरित व्रज चंद। छमहु ढिठाई कविन्ह मम

## चौपाई

छन्द विधान एक नहिं जाना। मन मानन करौं हरि गुण गाना।
यदपि काव्य गुण है कछु नाहीं। तदपि श्याम श्याम है मन माहीं
तुलसी दास वचन जिय आनी। भनित मोरि आदरि हैं ज्ञानी
सब गुण रहित कुकवि कृत बानी। राम नाम यश अंकित जानी।
सादर कहहिं सुनहिं बुध ताही। मधुकर सरिस संत गुण ग्राही॥
प्रणऊँ कलियुग नारद सुरसरि। आई जग महँ पावन पद हरि

मज्जन पान छुटै अघ ढेरा। आशिष देहु जानि निज चेरा
हरिद्वार अरु गंगा सागर। काशी सदा बसहिं जहँ शंकर
बन्दौं मथुरा गोकुल ग्रामा। जहं जन्मे हरि हलधर स्यामा
बन्दौं ब्रह्म घाट जहं नाथा। मृतिका खाई बालन साथा
वृन्दावन जहँ धेनु चराये। यमुना तट जहँ रास मचाये
कदंब वृक्ष जापै चढ़ि मोहन। टेरत गाय सखा सब गाहन
गिरि गोवर्द्धन जेहि हरि पूजा। जिन्ह समान नहिं कोउ सुर दूजा
बन्दौं वंशी वट सुख दाई। राधा कृष्ण कुण्ड शिर नाई
वट भंडीर लाल वन मधुवन। जेते वन सब जीव सुहावन॥

## दोहा॥

बरसाने जहँ राधिका। जन्म लीन्ह सुख धाम
नन्द गाँव श्री नन्द को। गह श्यामा अरु श्याम

## चौपाई

बन्दौं बहुरि हरि का धामा। बहुरि रहे जहँ सब अभिरामा
बन्दौं पुनि वसुदेव के चरणा। पाये सुत प्रणतारत हरणा
अरु देवकी कृष्ण की माता। जिन्ह के दुख हरि कंस निपाता
नन्द यशोदा परम सुशीला। जिनहिं दिखाये हरि करि लीला
करौं बहुरि रोहनि पद वन्दन। जो माता श्री द्विविद निकंदन
कृत्योदा वृष भानू ज्ञानी। जिनकी सुता राधिका रानी
बन्दौं उग्रसेन जुरि पानी॥ करहु कृपा किंकर अनुमानी
बन्दौं नाद कृष्ण पद माथा। ग्वाल बाल अरु सखियन साथा

श्री दामा सुबाहु अरु मंगल। अर्जुन मधुमोज सौ मण्डल
यह सब सखा कृष्ण सँग रहहीं। राधा दल सखियन नो अहहीं

## दोहा

तिन के पद मैं वन्दऊँ। सदा पाणि युग जोरि
श्रीमति ललिता श्यामला। सो चन्द्रावलि गोरि

## चौपाई

प्रणऊँ पुनि बलदेव के चरणा। ऊधो सहित पाप कलि हरणा
वन्दौं कृष्ण नाम यदुराई। जेहि जपि तरे खलन बहुताई
सारद गाइ न सकहि प्रतापू। कोटिन पाप कटत जेहि जापू।
सो प्रभु भजिय छुटत अघ मोरा। यद्यपि पाप कुण्ड मन बोरा।
जानौं नहिं कुछ भजन प्रभाऊ। विषयी काज सदा मन भाऊ।
अब आयउँ प्रभु सरण विचारी। तुम सरणागत के भय हारी।
छमहू सकल मोर अपराधा। वरणौं चरित सप्रेम अबाधा॥

## दोहा

तुम प्रभु पावन पातकी। हम तिन्ह कर सरदार
अब आयों तुम्हरे सरण। किमि नहिं होय उवार

## चौपाई

प्रथम भक्त द्विज सेवक ज्ञानी। निज कुल गृह दीपक गुणखानी
वासिन्हे मोकाम देकारी ॥ शहर शहर घाटी पगुधारी।
देव चन्द लाल मोर पराजा। भए वकील न्ह में सिरताजा॥
बहुरि हमारी बागहि आये। दर्शन बहुरि सो कामहि पाये।

राज करन लागे नर नाहूं। पुनि कछेहर लगिगे दिन काहूं
तृषित भएतहँ मिलान पानी। आश्रम एक मुनिज्ञानी
भिंडी ऋषी नाम मुनिकेरा। रहें ध्यानमें सो यति ढेरा॥
कलि के वश नृप तिविचारी। गर्व भयो मुनि कहँ बड़ भारी
यहिते नहिं देखा मम कोरा। दण्ड देन चाहिय कछु घोरा
परो हतो एक मृतक भुजंगा। डारि दियो मोढ़ मुनि के अंगा
टूटो नहिं तदपि मुनि ध्याना। ऐसे हते चिंतत भगवाना॥

दोहा

ऋषि गण के बालक बहुत। खेलत गये समीप
तिन्ह महँ जाके कह्यो एक। मुनि बालक से छीप

चौपाई

मुनि के सुत शृंगी ऋषि नामा। कौशिक तीर खेलन के धामा
पितु की दशा सुनत जब भयऊ। तुरत नीर चुल्लुक में लयऊ।
दीन्हो श्राप भूप कहँ भारा। यही सर्प होय काल तिहारा
सप्तम दिन तोहि काटत जीवू। याते होत अवश्यक मीचू।
देई श्राप गयो पितु पाहीं॥ कह्यो सकल हर्षित मन माहीं
सुनि मुनि कह्यो उचित नहिं कीन्हा। दया श्राप राजा कहँ दीन्हा
यह राजा क्षति शय हित कारी। रहें राज सब प्रजा सुखारी।
सेवक ऋषि द्विज संतन केरा। दीन्हों ताही श्राप घनेरा॥

दोहा

होत जगत उपहास मम। तदपि उचित यह बानि

चाहिय कहन सो भूपको। कर परलोक सोचानि

## चौपाई

शिष्य एक तहँ मुनी पठावा। सो राजा को हाल जनावा।
उरग डारि नृप जबरहँ आयो। मुकुट उतारत ज्ञान हि पायो।
कंचन महँ कलि युग कर वास। रहा मुकुट मम सोद हुलास।
ताते डारेउ व्याल हिं ग्रीवा। केहि विधि उबरब अघ की सींवा।
मुनि सुत श्राप भयो हित मोरा। अस कहि गयो रानि की ओरा।
अब मैं बन सब राज सत्यागी। मुक्ति यतन करूं होइ विरागी।
रानी गण बरजन जब कीऊ। उचित जानि संतोष हिं धीरऊ

## दोहा

नृप बन गयो विराग है। पुत्र को दीन्हो राज।
व्यास पराशर आदि सब। आए चरविन्ह समाज

## चौपाई

जब शुक मुनि आए जहँ राजा। उठे देखि सब मुनिन्ह समाजा
कह नृप ठाढ़ भयो किमि देखी। ते कहँ हैं दीन्हें बुद्धि विशेषी।
आयु बढ़े नहिं कछु मनुसाई। ज्ञान बढ़े सोद अहै बड़ाई।
ताते ठाढ़ भयों दीन्हें देखी। सुनि हर्षित भय भूप विशेषी
कह नरेश सुन व्यास कुमारा। कैसे होत उबार हमारा॥
अघ है घोर समय है थोरा। कह मुनि सुनहु वचन अब मोरा
सप्त दिवस है तुमहिं नरेशा। मुक्ति होत सरा महँ विनु क्लेशा
भयो मुक्त खड्ग चपाला॥ एक मुहूर्त महँ सुनहु भुवाला।

कहूं भागवत सुनु चित लाई। यातें मुक्ति लहहु सुखदाई।

दोहा

जिमि धर्मन में वेषाव। पुन्य मध्य जिमि दान।
तिमि पुराण में भागवत। भव सागर जल जान

चौपाई

तबहि लगे सुनन चित लाई। कहन लगे मुनि कथा सुहाई
पंच दिवस बीते भूपति को।।। सुनत भागवत दायक गति को
नवम स्कन्ध कथा मुनि गाई। तब बोले राजा शिर नाई।।
कहिय कथा प्रभु कृपा अवतारा। जो हरिहैं कुल पूज्य हमारा।।
अश्वत्थामा अस्त्र चलायो। मोहिं माता को मारन धायो।।
तहँ प्रभु कीन्ही मोरि सहाई। गर्भ माँह मोहि लिये बचाई।।
कह मुनि सुनु राजा हितकारी। भक्ति देखि तव भएउँ सुखारी।
पंच दिवस अन जल नहिं कीन्हा। अधिक परिश्रम निजतन लीन्हा
अंजलि करहु कथा तब गाऊं। लीला कृष्ण की सकल सुनाऊं

दोहा

कह नृप शमिय कथा प्रभु। किएउँ श्रवण तेपान
गई क्षुधा मन की सकल। कहहु कथा भगवान।

# अथ कथा प्रारम्भः

चौपाई

तब शुक करि श्री कृष्ण के ध्याना। लगे करन प्रभु चरित बखाना।।

यदुवंशी भज माना राजा ॥ तेहि कुल सूरसेन शुभसाजा।
यह राजा भा अति बल वाना। नवो खण्ड जीत्यो नृप नाना।
पूरि रही जग में तेहि करणी। ताकरि नारि मरिख्या वरणी।
पंच सुता अरु दश सुत जयऊ। बड़ सब सें वसुदेव जो भयऊ
रोहिणि भद्र वसुदेव की नारी। पटरानी तहँ द्वादश चारी॥
देवकी पुनि देवक की कन्या। अति सुन्दरि सो त्रिभुवन धन्या
तेहुतें व्याह भयो वसुदेवा ॥ कंस दुरदी हरषे सब देवा ॥
नभ वानी तहँ भई नृपाला। तेहितें उपजत कंस कोकाला
अष्टम गर्भ में देवकि नारी ॥ तातें भयो दुरित सो भारी।

## छन्द

तातें भयो सो दुरित भारी हृदय महँ अति डरपऊ।
करि बंदि साला बन्द दम्पति अधिक उर आनँद भरा।
तहँ पार ब्रह्म अनादि सब घट वासि श्री भगवान ने
अवतार लीन्हों कृष्ण नाम से कौन कवि शोभा भने

## सोरठा

नव बोलत भय राय। कैसे जायो कंस क्षय॥
कैसे गए कन्हाय ॥ ॥ मथुरा तें गोकुल नगर
सुनि बोले शुक देव ॥ सुनु राजा गुण ज्ञान निधि
कहब कथा हम से उ। जन्म कंस औ हरि गवन

## चौपाई

यदु वंशी आहुक नृप नामा ॥ रहो भूप मथुरा सुख धामा॥

भै द्वि सुत उग्रसेन श्री देवक। बड़ उग्रसेन साधु द्विज सेवक।
काल भयो आहुक को जबही। उग्रसेन भै राजा तबही॥॥
नाम पवन रेखा तिन कीनिय। धर्म शील आयसु कारी पिय।
एक दिन है पवित्र सो नारी। मंजन करि रजस्वला विचारी।
पति आयसु लै करण विहारी। चढ़ि रथ बन संग सखियन सिधारी
चहुँ दिशि सुमन रहे तहँ फूली। विविध प्रकार बोल खग बोली
मन्द सुगंध ठंड बह व्यारी। अरु यमुना की लहरें न्यारी।

## दोहा

देखि सुहावन बन घना। छाँड़ि के संग सहेलि।
अति गह्वर बन में गई। रानी तहाँ अकेलि॥
रजनी चर इक तहँ मिला। नाम दुर्मलिक ताहि।
देखि रानि के रूप सो। मोहित भा मन माहि।

## चौपाई

उग्रसेन को वेष सो धरेऊ। संग करन की इच्छा करेऊ।
बहु विधि समुझायो तोहि रानी। माना नहिं निशिचर दुखदानी
जो नर करहि दिवस मह संगा। धर्म शील तेरो वहिं अभंगा।
काम विवश निशिचर नहिं मानी। निज पति जानि तजी तोहि रानी।
भोगउ प्रान्त धरासि निज वेल्का। देखि रानि भइ लज्जित विशेषा
धिक तोहि मातु पिता गुरु केरे। जो उपजायो बुधि दिय तोरे॥
पति व्रत धर्म विगारहि जोई। जन्म अनेक नर्क लह सोई॥
सुनि बोला निशिचर अभिमानी। देजनि मोहि आप तू रानी॥

कोख बन्द देखउ मैं तोरी ॥ मनमहँ शोच भयो अति गोरी।
जन्महिं सुत एक अति बल वाना। नवो खण्ड जीतिहि नृपनाना।
लै अवतार लड़ाहि प्रभु तासे। पूरण ब्रह्म कृष्ण सुख रासे
पूर्व्व जन्म मोहिं बध हनुमाना। कालनेमि निशिचर जगजाना
अबएहि जन्म दियेउँ सुत तोरा। अस कहि गयो असुर गृह ओरा

दोहा

अस हरि इच्छा जानिके। इत रानी धर्म सेतु ॥
गर्दू सहेलिन के निकट। पूँछा ते सब हेतु ॥

चौपाई

देखि सहेलिन भंग सिंगारा ॥ पूछन लगी चकित एक बारा।
कह रानी तोहि संगहि त्यागी। गयी घने बन परम अभागी।
मिला एक बानर मग माहीं ॥ सोइ सतायो मोहि मकनाहीं।
सुनि चेरिन उर भय अति भयऊ। रथ चढ़ाइ मन्दिर लै गयऊ ॥
दशम मास बीते जब रानी। जायो पुत्र महा बल खानी ॥
जेहि अवसर सो जन्म न लागे। तारन मही खसे नभ त्यागे ॥
महि कंपन आँधी बहु चलेऊ। अंधकार दिन निशि सम भयेऊ
शुक्ल त्रयोदशि माघहि मासा। जन्म वृहस्पति वार प्रकासा ॥

छन्द

भौ जन्म नव नृप योनपिन को कहो करन विचारही
ते कह्यो शोचि विचारि नृप से कंस नाम पुकारही ॥
यह होत अति बल वन्त सकल समाज भूपन जीतके

लेदूराज सकलतिहार होवत निश्चरन सबभीतके
हरिभक्त संत समाज द्विजके होत दुखदायक सदा
तव पारब्रह्म कृपाल लय अवतार दै हैं द्विज मुदा
यहि मारि सबगुणधाम प्रभुजी भारमहिके टारिहैं
निजभक्तगण सब सुखी करिहैं निश्चरन संहारिहैं

## सोरठा

सुनि नृप उरभा सोग। दय दय दर्व बिदा किये
सभी योत खिन लोग। अरु विप्रन सन्मानिके

## चौपाई

कंसहिं लगे करण प्रति पाला उग्रसेन नृप दीन दयाला॥
भया कंस जब षट वर्ष केरे। लगा करन उतपात घनेरे।
मथुरा के बालक जो पावै। तिनहिं मारि गिरिकंदरनावै
काहु बहाना करि अस्नाना। लाद हतें यमुना हर षाना॥
पावे जेहि अपने तें बढ़ के। ताहि बधे छाती पर चढ़के।
कीन्हेसि सकल प्रजान दुखारी। कहन लगे ते सकलविचारी
यह नहिं वीर्य्य नृपति धर्मीको। लिये असुरकोदजन्म कहींको

## दोहा

परजा के दुख देखिके। समुझायो नृपताहि
तदपि न समुझे असुरकछु। रही कुमतिमनमाहि

## चौपाई

अष्ट वर्ष को भयोसो जब हीं। लड्यो मगध के नृप सेतब हीं

मगध भूप जाना मन माहीं। मोते अधिक बली यह आही।
निज दुइ सुता विवाही ताको। करि विवाह आयो मथुरा को।
लगा कहन निजपितुहिं सुनाई। राम नाम तुम लेहु न कोई।
कह नृप मम कर्त्ता है सोई ॥ बिना जपे कैसे हित होई ॥
तब तेइ भाषा जपन उमेशू ॥ तजेउ न राम के नाम नरेशू ॥
राज पिता को तब लै लीन्हो। राव प्रजान को आयसु दीन्हो
करो न कोइ जप तप मख दाना। लेहु न राम नाम नहिं ध्याना।

## दोहा

मम आयसु जो टारि है। तुरत हि वधि हौं ताहि।
कंस के आयसु भयउ जब। काहेन धर्म पराहि ॥
कहुं न होत शुभ कर्म तहँ। जीतेउ नृप सब ठौर ॥
कटक लेइ नव सो चल्या। चलन इन्द्र की ओर ॥

## चौपाई

इन्द्रहि जीतन चला सो जबही। मंत्री एक बुझायो तबहीं ॥
दइ रहा उग्रसेन समय के ॥ तजो आस तुम इन्द्र विजय के।
सत आश्व मेध यज्ञ बिनु कीन्हे। इन्द्रासन कोउ सकहिन लीन्हे
बल अभिमान तुमहिं बड़ भारी। गर्व करत सब ही को टारी ॥
कुंभ करण रावण बल बाना ॥ नाश किये तिन हूं अभिमाना।
मंत्री के हित वचन सुनत ही ॥ तजेसि दुरासा और कुमति ही
हरि भक्तन सब दुख अति पावैं। सो असुरन सँग राज चलावैं ॥
सुनु नृप कंस के राजहि भारी ॥ भये संत जब ऋषिन दुखारी ॥

दोहा

यज्ञ करन नहिं पावकोउ। नहीं भजन भगवान॥
अति व्याकुल धरणी भई। गई इन्द्र के थान॥

चौपाई

कंस कुमति बहु विधि सो करणी। गौ स्वरूप धारण करि धरणी
शक्र गये पुनि ब्रह्मा पासा। विधि तिन्ह सहित गये कैलासा
जानि हृदय शिव असुर संघरिहैं। कंस मारि महि भार उतरिहैं।
कहि शिव नहिं हम विधि यह योगू। टारि सकहिं जो महि कर सोगू
तब देवन मिलि गये तहां पर। क्षीर सिन्धु में श्रीपति जहां पर
लगे करन अस्तुति जुरि पानी। करहु कृपा महि के दुख जानी

छन्द

जै जै हरि मीन स्वरूप धरम।
जै जै हरि कच्छप रूप वरम।
जै जै हरि ग्राह पतित पावन।
जै जै सुख धामा श्री वामन।
जै जै प्रभु रामा श्री राम हरे॥
निज भक्तन हेतु स्वरूप धरे॥
जब जब पावे महि दुख भारी
तब तब करु असुरन संहारी

दोहा

देख्यो व्याकुल देव सब। अरु महि के दुख जानि।

संहारहु निशिचर सकल। कंस असुर दुख दानि।
नभ आकाश वाणी भई। सबहिं कलेश विचार
सब असुरन को मारिहौं। लेहू मनुज अवतार॥

सोरठा

जन्म मरण नहिं देव। तदपि लेउँ अवतार जग।
दीन्हेउँ वर वसुदेव। देखि के तप तिय के सहित
अपर दियउँ वर नन्द। देखि के तप नारी सहित
जन्मों नहं आनन्द। दूनैं दिखावों बाल सुख

चौपाई

मारों कंस अधर्मी राजा॥ ॥ घोर सकल निशचरन सब भाजा।
देवी घोर देव गण जेते। ॥ यदु कुल जन्म लेहु सब तेते
चरित देखि मम व्रज सुख लेहू। धरहु सकल गोपन की देहू
चार रूप धरि पुनि मैं आउँ। सुनि हरषित गे सुर निज ठाउँ
गर्ग बहोरि मही निज आना। तीय सहित किन्नर सुर नाना
जन्म लीन्ह व्रज मण्डल आयो। यदु वंशी अरु गोप कहाये
वेद ऋचा विधि आयसु पाई। गोपी तन प्रगटीं व्रज आई
सुनु रूप कहुं अब ब्याह देवकी। जो माता श्री कृष्ण देवकी॥

दोहा

उग्रसेन के अनुज सुत। देवक जाके नाम॥
चारि पुत्र ताके भये॥ सब कन्या छवि धाम

चौपाई

दीन्ह बिवाह सो छवों सुताको। श्री वसुदेव भक्ति रीवों को ॥
सप्तम कन्या भई देव की ॥ हर्ष दानि जनु सकल देवकी
कंसादिक दश सुत बल वाना। उग्रसेन के भै जग जाना ॥
देवकि व्याह योग जब भयऊ। व्याह तिलक वसुदेव हिं गयऊ
तब वसु देव के पितु सुर सेना। पहुंचे लय बरात मुद दैना ॥
कंस सहित निज पितु सुख कन्दा। आयो निज दल सहित अनन्दा
करि परिछा अधिक देवकी। व्याह भई निज बहिन देवकी ॥
कौन कहै कवि शोभा व्याहा। जाहि उदर जन्मे जग नाहा ॥

छन्द

जन्में उदर तें नाथ जेहि तेहि व्याह शोभा को भने
देइ भूप श्री वसुदेव को सत अष्ट दश रथ मुद मने
अरु चारि सहस गयंद त्रै दश पंच सहस तुरंग को
संतयुग दासी दास भूषण दीन्ह सब बहु रंग को

सोरठा

विदा किये सुख मानि। सूर सेन वसुदेव को ॥
ज्ञाती गण सनमानि। देइ द्रव्य अरु वस्त्र बहु
आपुहिं बनि रथ वान। पहुंचावन देवकि चल्यो
कंसासुर बल वान ॥ अति अभिमान निधान पुनि

चौपाई

कंस बहां से रथे हंकावा ॥ मथुरा तें कछु दुर जब आवा
नभ वानी भूपति भद्र तह वों। कंस रहा हांकत रथ जहवों ॥

जेहि दूं पहुँचावसि महिपाला। तेहि श्रष्टम सुत है तव काला।
भया कंस सुनि परम दुखारी। मारन धावा बहिन सुकारी॥
देखि सभय भे हृदय दुखारी। बोलि न सकहिं कंस भय भारी
तब वसुदेव लगे समुझावन। नारि वधे श्रति पाप भयावन
सकहिं न रोकि मृत्यु कहँ केहू। काह नारि वधि श्रपयश लेहू
बल नहिं प्रगट नारि के मारे॥ कंस भयो सुनि परम दुखारे।

दोहा

कंस कह्यो वसुदेव सुनु। करिहौं व्याह तेहारि॥
या विधि दूसर नारि से। जनि मन होहु दुखारि।

चौपाई

पुनि विप्रन तेहि श्रति समुझावा। तदपि न कछु ताके मन श्रावा
कह वसुदेव पुत्र जे होइ हैं॥ सो सब लाइ तुमहिं दिखैहैं
कंस सुनी वसुदेव कि बानी। श्रावा फिरि तब गृह श्रभिमानी
गत दिन कछुक पुत्र जब भयऊ। तब वसु देव निकट लै गयऊ
कंस भयो श्रानन्दित चेरखी॥ निज हित लगि तिन के पग पेखी
फेरि दिये वसुदेव के बालक॥ कंसासुर रजनी चर पालक।
श्राइ कहा नारद मुनि तब हीं। कंस पुत्र तिन्ह फेरो जब हीं।
निज श्ररि को कस हे तुम फेरो॥ तबहि विचार हृदय नहिं हेरो

दोहा

श्रष्ट चिन्ह रिंच वाइ के गीनन भाख्यो सोइ॥
श्रादि श्रन्त वा मध्य से। गिना तो श्राठे होय॥

या विधि आठों पुत्र में ॥ करि न सकहु पहिचान
कौन तुम्हारो शत्रु है ॥ केहि ते होयत हानि॥

चौपाई

नारद मुनि अस कहिगे तबहीं। मथुरा गोकुल के नर सबहीं
देव सकल लीन्हो अवतारा। इन्ह महँ है सब शत्रु तुम्हार
अस सुनि कंस नसीचर घोरा॥ सकल बधन पठयो तिन्ह ओरा
देहु सिरावन तिनहि के जाहू। मथुरा गोकुल महँ जे पाहू।
तिनहिं सँघारहु बालक समेता। जाहु सकल लगा करन अचेता
बोलि तबहिं वसुदेव मुरारी॥ हति दीन्हा बालक मुद भारी

दोहा

रम्पति को दिय क़ैद करि। बन्दी शाला माहं॥
बड़ो निदर्दी कंस नृप। असुरन को जो नाह॥

इति श्री कृष्णा सागरे शुकदेव परीक्षितसं-
म्वादे श्री कृष्णदासजगन्नाथकृते
बालबधो नाम प्रथमोऽध्यायः

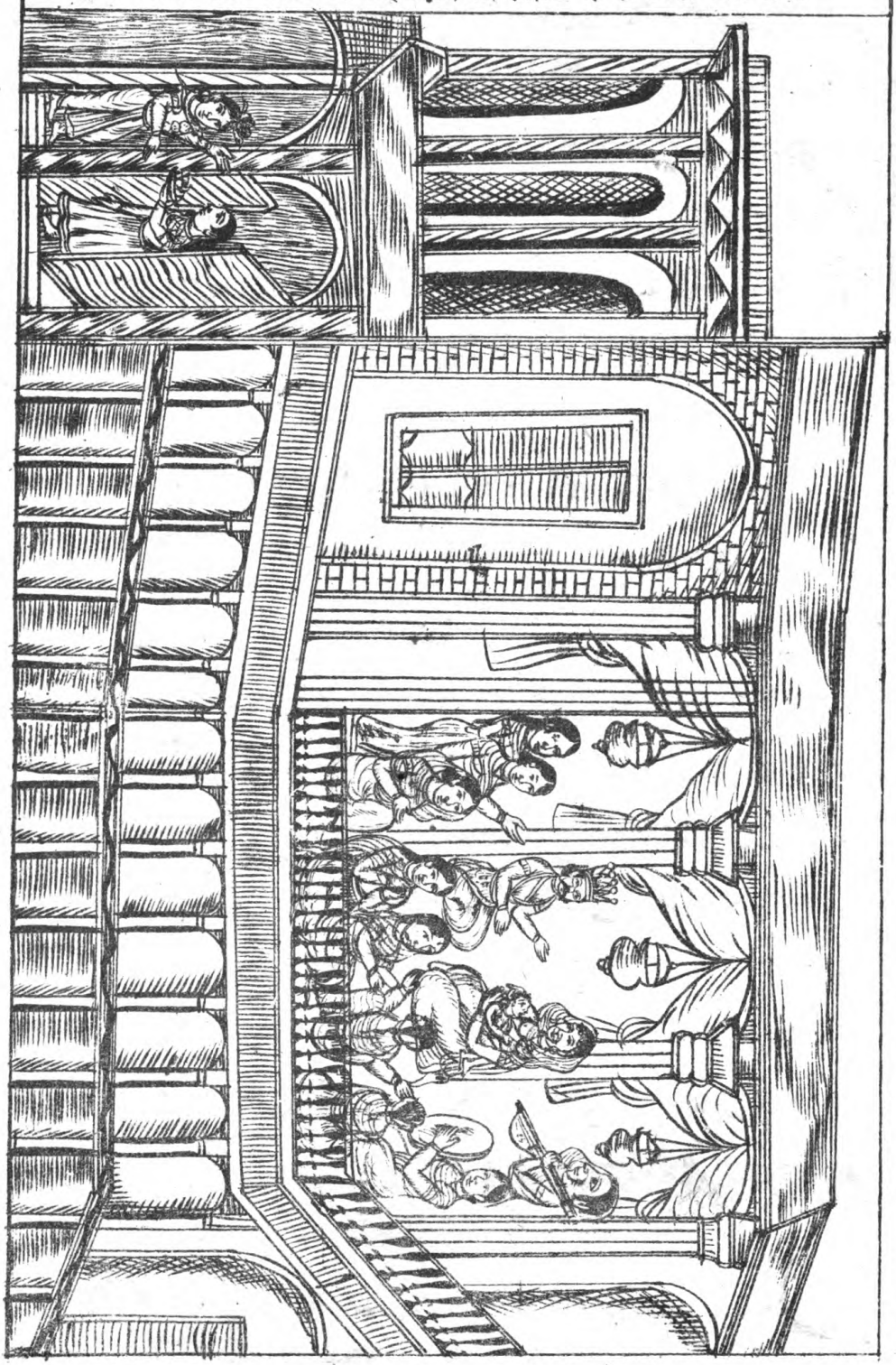
दोहा॥

छो बालक वसुदेव के। या विधि हत्यो मुरारि॥
अरु तहँ असुरन करन लग। सकल उपद्रव भारि।

चौपाई

भजा दुरित भय देखत काला। भाजे सकल देश पंचाला॥
तब वसुदेव रोहिणी नारी॥। भेजी गोकुल माहँ मुरारी॥

॥श्री कृष्णजी को गोद में लेकर यशोदा और नन्दजी का प्रसन्न होना और गोपियों का गाना व शिवजी का वास्ते दर्शन के आना॥



नन्द सिव दूत के हित कारी ॥ निजगृह रखी सिव की नारी ॥ ॥
कह परिक्षित सुनु मुनि वरज्ञानी। नारद मुनि हौ ज्ञान के खानी॥
देवकी सुत काहे वध पाये ॥॥ कह शुक देव सुनहुँ मन लाये
पूर्वजन्म के सुकृत नशे हैं ॥। देखि पाप अति हरि जग एहैं।
तुरतहिं कंस असुर को मारे॥ सुर मुनि संतन को दुख टारें॥
यहि लगि नारद मुनि अस कयऊ। आगे कथा सुनहुँ जस भयऊ।

दोहा

षट सुत जब वसुदेव के। हत्यो कंस दुख दान॥
तब दम्पत लागे करन॥ विनय सुनहुँ भगवान।

चौपाई

षट सुत मोर संघारेउ कंसा॥ करन चहत है अब निरवंसा।
सुनि अस हरि निज हृदय विचारा। अब चाहिय लेनो अवतारा
श्री बल देव होय अब लक्ष्मण। भरत प्रद्युम्न अनुरुद्ध शत्रुहन।
सीता होइ रुक्मिणी नारी ॥। वासुदेव ह्वै हम तन धारी ॥
अस विचारि देवकी अवधानहिं॥ अस्थिर किये बलदेव सुजानहिं
तब माया ते कहेउ विचारी ॥। करस्वि गर्भ तुम देवकि नारी॥
धरहु रोहिनी गर्भ में नाही ॥। तुम जन्महु गोकुल यशुदाही
हमहुँ देवकी गृह अवतरिहौं। गोकुल जादू सबहिं सुख करिहौं।

दोहा

दुर्गा देवी नाम तोहि ॥। होत विदित संसार ॥
पुरिहिं मनोरथ सकलनर। पूजा करत निहार ॥

जेहि जननि हरि माया ॥ करिहि गर्भ सो नारि।
रखी उदर में रोहिणी। सो उन जाने पारि ॥

## चौपाई

देवकि को पुनि स्वप्नो दीन्हों। गर्भ तेहार करिब हम लीन्हों
रख वास सब कंस सुनावा। ॥ गर्भ गिरन सुनि अति सुख पावा
अथम गर्भ के हाल सुनन को॥ भेज्यो सब रख वार गवन को
सावन चतुर्दशी बुध वारा ॥ ॥ भयो जन्म रोहिणी कुमारा
राजन सावन शुक्ल में जब हीं॥ जन्मे श्री बल देव जी तब हीं।
माया रही गर्भ यशुदा के ॥ ॥ देवकी उदर रहे हरि आके॥
रहे गर्भ में यदुपति जब हीं ॥ देवकी बदन दिव्य भा तब हीं
प्रथम एक दिन क़ैद हो बन ते। गई देवकी यमुन भवन ते ॥

## दोहा

रह्यो दिवस सो वर्त्त को। गर्द करन अस्नान॥
नंद रानी आवत भई॥ तेहि क्षण सोद अस्थान

## चौपाई

जा विधि हती कंस की करणी॥ सकल देवकी वहु विधि वरणी
कह यशुमति सुनु सखि वचमोरे। निज सुत दै पालव सुत तोरो
अस कहि सो निज भवन सिधारी। दूत फिरि आई देवकि नारी॥
अथम गर्भ करन विध्वन्सा ॥। दिये बैठाइ पाहरू कंसा ॥
कर पग महँ बेरी दै डाला ॥। दिये द्वार ताला पै ताला ॥
आदरो हरहिं गो उप वासा॥ छायन अस उर में हरि त्रासा

जहाँ जहाँ सो असुर निहारत॥ काल स्वरूप लखत हर आरत
खात पियत सोवत अरु जागत। चलत फिरत कहुँ चैन न लागत
पूरण दिवस गर्भ जब आयो॥ तबहिं शोनकृति शय उर छायो
दीन्हों हेरि तेहि अवसर सपना। करहु न चिन्ता कछु मन अपना
सपदि हरव दुख लै औतारी। जागि उठे दोनो मुद भारी॥
कहत देवकी हृदय विचारी॥ चहिय धर्म तजि सुत रखवारी
कह वसुदेव क़ैद में अहऊं॥ वचन उपाय कौनविधि कहऊं

दोहा

देवकी के दुख देखिके। ब्रह्मा औ शिव आय॥
गर्भ स्तुति लागे करन। विनय सुनाय सुनाय।
सपदि लेहु औतार प्रभु। हरु धरणी को भार।
कोउ नही देखेउ तिन्हैं। निज निज लोक पधार

इति श्री कृष्ण सागरे शुकदेव परीक्षित सम्वा॰
दे श्री कृष्णदास जगन्नाथ कृते गर्भ
स्तुति वर्णनो नाम द्वितीयो
अध्यायः २

दोहा

राजन हरि को जन्म दिन। जब आयो सुख मूल
विविध वरण बोलत खगन। फूल रंग बहु फूल

चौपाई

सब के मन महँ भयउ हुलासा। नाम हुँ रहेउ न दुख कर वासा

सरिसर माहँ नीर भरि आए। विप्रन यज्ञ करत हरषाये॥
देवन्ह दुन्दुभि लगे बजाना। गंधर्वनि लागे यश गाना॥
भादौं वदी निशा अँधियारी। दिन बुध रोहिणि नखत विचारी
मध्य निशा तिथि अष्टमि पावन। ऐसे समय भये मन भावन।
हरिव चतुर्भुज रूप सुहानी॥ शंख चक्र गदा अम्बुज पानी
मोर मुकुट कुण्डल अति सोहत। जलज नयन शशि बदन मनोहर
हेम वरण पीताम्बर काछें। उर माला शोभित तन आछें
देखि रूप तिन्ह कहँ भा ज्ञाना। हरि अवतार गये पहिचाना
करि अस्तुति देवकि वसुदेवा। तुम प्रभु सकल देवके देवा।
जब भक्तन पावत दुख भारी। धरि एक रूप लेहु अवतारी
शेष सकहिं महिमा नहिं गाई। सो हम से कैसे कहि जाई॥

दोहा

बोले हरि मोहिं जाहु ले। सपदिहिं गोकुल ग्राम
यशुदा की ले बालिका। आवहु आपन धाम॥

चौपाई

माता कहेउ तात यह रूपा। अन्तर ध्यान करहु सुर भूपा।
तब हरि बाल रूप किय धारन॥ लगे करन रोदन दुख टारन
किये संकल्प सहस दश गाई। लिये पुत्र कहँ उरहि लगाई
कहत देवकी अब पति जाहू॥ गोकुल में बालक धरि आहू
वहाँ रोहिणी नारि तिहारी॥ अपर यशोदा सखी हमारी।
कह वसुदेव जाउँ मैं केहि विधि। फिरत मीचर पाहरु यहि विधि।

ऐसे वचन करत उच्चारा ॥ । आपु हि आपु गये खुलि द्वारा
टूटि गई कर पग की बेरी ॥ भै अचेत रखवार निदेरी ॥
अस महिमा देखत सुर देवा ॥ राखा सूप माहिँ वसुदेवा ॥

## छन्द

धरि सूपमें श्री कृष्ण को वसुदेव गोकुलमें चले।
भा देवकी उर शोच जनि कोउ पंथ में निशिचर मिले
पहुँचे जबहिँ यमुना निकट भा शोचतब दारुण सही
हैं सिंह पीछे गुंजरत आगे नदी यमुना बही ॥
हरि समुरि देखत भै यमुन जल पदछुवन उमड़त भयो
लै माथ तें सो सूप को कछु ऊर्ध तें ऊँचो कियो ॥
आयो जबै नासा निकट तबत्रास अति उर में छये
हरि देखि भय को यमुन रुचिलखि चरण को नीचे किये

## दोहा

चरण छुआये नीरते ॥ करत भये हुंकार ॥
छुवत थाह यमुना भई। वसुदेव उतरे पार ॥

## सोरठा

पहुँचे नंद के धाम ॥ खुले द्वार देखा तहाँ
चले सुवा घन श्याम ॥ संग महरि लै बालिका

## चौपाई

जानत रही न यशुमति हाला। पुत्री जनम भयो केहि काला
कारण माया मोहनि डाली। रहे अचेत सब नींद बेहाली

कन्या लै वसुदेव जब आये। तब देवकि मन में हरषाये॥
बालक दीन्हा कंस के हाथा। अब भल कीन्हों है यदुनाथा
समाचार वसुदेव सुनाये॥ जा विधि कन्या कोलै आये
नन्द गेह के दर खुलि पाये। पुत्री ले हरि दिये सोवाये॥

दोहा

पुनि विवाह ना विधि लग्यो। कर पद गयो बंधाय
रोवन लगी सो बालिका॥ पाहरु कंस सुनाय॥

इति श्री कृष्ण सागरे शुक देव परीक्षित सम्वादे श्री कृष्ण दास जगन्नाथ कृते श्री कृष्ण जन्म ग्रहणो नाम तृतीयो

१ध्यायः ३

दोहा

कंस सुना हरि जन्म भा। धावा नंगे माथ॥ ॥
पुत्री लै बोलत भयो॥ रिपु आयो अब हाथ

चौपाई

कहत देवकी सुनु रे भाई॥ छव बालक मम दीन्ह नशाई
छाँडहु एक सुता यह मेरी॥ यही अन्न की सुखद घनेरी।
याहि देखि मन अति सुख पाऊँ। तिन्ह सब मरन सोक बिसराऊँ
माना नहिं कछु निष्ठुर नाहा। लै कन्या महि पटकन चाहा
धरि पद पटकन चहेउ सो जबहीं। छूटि प्रगट देवी भई तबहीं॥
अष्ट भुजी सुन्दर महरानी॥ बोली सुनहु कंस अभिमानी

जनमि चुका ब्रज शत्रु तिहारा कंस भया सुनि परम दुखारा

दोहा

जाइ देवकी निकट तब। बोला विनय सुनाइ।
क्षमा करहु अपराध मम। मन के दुख बिसराइ।
बंदि छोडि घर लाइके। बहु विधि आसन कराय
विदा कियो तिन्ह कंस नृप। ते निज गृहमें आइ॥

चौपाई

अब द्रव्य गो कीन्ही दाना। बहु विधि विप्रन किय सन्माना।
इहाँ देव रिपु घर में आई॥ कहेउ निश्चरन को बुलवाई।
देवन सब छल हमते कीन्हो। चहिय युद्ध करि तिन्ह दुख दीन्हो
मंत्री कहत सुनहु गोसाईं॥ तुमते सुर कर सकत लड़ाई
नारायण रहे सिन्धु में सोये॥ ब्रह्मा ध्यान सदा मन खोये॥
शिव न सकत तजि संग भवानी। मोरे मत तुम सुनु सुख दानी।
मारहु सब मुनि अरु बालक को। तिन्हमहँ मारहु निज घालक को

दोहा

बाल वधन सब निश्चरन। तुरतहिं कंस पठाय।
या विधि पातक करतही। गय सब सुकृतन धाय

इति श्री कृष्ण सागरे शुकदेव परीक्षित
सम्वादे श्री कृष्ण दास जगन्नाथ
कृते कंस उपद्रव वर्णनो नाम
चतुर्थोऽध्यायः॥४॥

## दोहा

वासुदेव को तात जब। यशुदा संग सुलाय॥
आये मथुरा नगर में। जागत देखी माय॥

## चौपाई

हरषित नन्दहिं हाल जनाये। पुत्र होन सुन सो तहं आये॥
देखि कृष्ण के रूप सोहावन। नन्द यशोदा भये सुदित मन।
नान्दी मुख सराद्ध तब कीन्हा। निगम मांह जिमि आपसु दीन्हा
श्याम सुंदर के तेज कृपाला ॥। भया प्रकाशित गेह गुवाला॥
गोपी ग्वाल सुना जब हाला। किये मंगलाचार निहाला॥
सकल परस्पर बोलहिंबानी। बन में जादु न कोउ सयानी॥
नन्द राय के बालक जाये ॥। आदु सकल मिलि देहु बधाये

## सोरठा

प्रात होत जब नन्द। बोलि योतषि न द्विजवर
पूछा हृदय आनन्द। पुत्र जनम साद्धतलगन
तेकह सुनु नंद राय। दूसर हरिहैं बाल तव।
गोपी नाथ कहाय ॥ टरिहैं महि के भार यह

## चौपाई

नन्द वचनसुनि अतिसुख पाये। द्विलक्ष गैया दान कराये ॥
चाँदी अरु सोनन की धाड़ा ॥ दुग्ध दही दे भरि भरि भाड़ा॥
नर्तक याचक आदिक जेते ॥ विदा कीन्ह दय दय धन तेते।
गोप गोपि सब देन बधाये ॥ भूषण विविधपहिर तहं आये॥

चोली लहँगा कोसुम रंगा॥ सारी सोहर शोभित अंगा।
कंचन थार मणिन की बाती। आरति करन लगी हरषाती
कहहिं यशोमति पद शिरनाई। दिखा देहु मोहि कुँवर कन्हाई
मुख उघारि यशुमति दिखरावहि। दरशन करि जन्म फल पावहि

## छन्द

पावहिं जनम फल औ निछावर रत्न मणि कर हौंघना
है धन्य तेरो भाग यशुमति कहहिं सब हरषित मना।
ते कीन्ह दधि काँदो मुदित मन गो कुला दधि वहि चला
सब देव मुदित विमान बैठे सुमन वर्षहिं रवि लखि विला

## सोरठा

भाग सराहहिं देव॥ धन गोकुल के वासिनर
दरश करहिं सब केव। जोन आव अज ध्यान में

## चौपाई

ताहि समय योगी के रूपा। आये धरि महेश सुर भूपा॥
भिक्षा ले निकसी नँद रानी। नहिं कछु काम भीरव जो ज्ञानी
कृष्णहिं दरश देरवा बहु ज्ञानी। दरश पाइ फिरि गये निदानी॥
राजन षष्ठी दिन जब आवा॥ नन्द मुदित उपरोहित बुलावा
भले वस्त्र तब दम्पति पीन्हे॥ पीत वसन कृष्णहि ननदीन्हे
कमर ते अजीर लिप वाये॥ मोतिन तें चौका पुरवाये॥
रवि कृष्ण को गोद यशोदा। लागी पूजन करन प्रमोदा।
तब वृष भानु आदि गोकेतू। आये वस्त्र लेप हरि हेतू॥

दोहा

सब गोपी अरु गोपके ॥ बहुविधि दियसुख नन्द।
विदा किये सन्मानि के॥ तेरहु गये अनन्द॥

चौपाई

बन बाये तब पुनियक पालना ॥ मातु झुलावत कहि कहि लालना
पौढ़े कृष्ण पालने माहीं ॥ ॥ हरश पाय गोपिन हरषाहीं ॥
जब ते जन्म भयो हरि केरा ॥ छायो गोकुलमें सुख ढेरा ॥
नन्द सुनी जब कंस की बाता ॥ पठवा निश्चर बाल निपाता॥
भेंट लेहु मथुरा में आये ॥ ॥ दुग्ध दधी भाँडन भरि लाये॥
ग्वाल बाल गवने संग ताको। भेंट देहु बहुरे यमुना को ॥ ॥
भेंटे तब वसुदेव हुँ आके ॥ कहन लगे तिन्ह नन्द सुनाके

दोहा

तुम समान मोहि मित्र नहिं। किये भलाई अनेक
अरुणो धार नहिं हो सकूँ। पलटा करूँ जो एक॥

चौपाई

कहहु कुशल तुम गोकुल गाऊ। यशुदा सुत मोहि रिण बल दाऊ॥
ग्वाल बाल सब गाय समेता॥ नन्द कहा हैं भल सब जेता॥
एक शोक मोरे मन भारी॥ षट सुत कंस दियो तोहि मारी
कह वसुदेव कर्म की रेखा॥ टारि न सक कोउ जो विधि लेखा
निश्चर गण बहु कंस पठाये॥ तुम हूँ हो यह नगर मेँ आये॥
जाहु सघदि सुधि लेहु वहाँ की॥ जोन करें निश्चर कछु बाँकी॥

सोरठा

विदा भये नन्द राय ॥ सरवा न मोहि विसारिहु
बोले नन्द सुनाय ॥ बहुरि मिलेंगे आइ के

इति श्री कृष्ण सागरे शुकदेव परीक्षित
सम्वादे श्री कृष्ण दास जगन्नाथकृते
श्रीकृष्ण जन्मोत्सववर्णनोना
मपञ्चमोऽध्यायः ५

दोहा ॥

कंस आमित निशिचर पठे तदपि रहा प्रभुत्रास
यातें पुत्ना राक्षसी ॥ पठई करन विनास ॥

चौपाई

ते सब रहे विपति बहु करते। चली बहुरि पुत्ना तहँ फिरते
लगी विचार करन मन माहीं। पुत्र भयो गोकुल यशुदा हीं
गोपी रूप तुरत सोइ धरेऊ। कुच महँ विष सिंदुर शिर भरेऊ
गई निसंक नन्द के गेहा ॥ यशुमति बैठारी करि नेहा।
जाना है कोउ देवकी नारी। आई है देखन बनवारी ॥
पलने भूलत रहे मुरारी ॥ नयन मूँदि तेहि देख विचारी ॥
कपट रूप यह निशिचरि भाई। भलो भयो जो मम गृह आई

दोहा

जो यह जाती आन गृह। करती अधिक उपाधि
अब फल पावत कपट को। गोपी होन कि साध

## चौपाई

लगी कहन सो सुनु नँद रानी। पुत्र होन सुनि अति सुख मानी
कंस मोहि देखन सुत तोरे॥ अति हर्षित पठई सुन मोरे॥
यशुदा बालक को दिखराई। पलने में मेरो यदु राई॥॥
जाइ सो दुग्ध पियावन लागी। कृष्ण हतन को परम अभागी
पीयत प्राण खिचन प्रभु ताके। लगी कहन यशुमति सो वाँ के।
यह बालक यमदूत समाना। अस कहि उडी सो मग असमाना
छाडा नहीं तदपि यदुराई॥ बाहर ग्राम गिरी अकुलाई।
प्रगटि विकट तेहि रूप निशिचरी। छो क्रोस मांह जब परी॥॥
अमित विटप टूटे तहँ राया॥ गोकुल वासी उर भय छाया॥

## दोहा

यशुमति शब्द सुनत गई। पलने निकट डेराइ।
पाया नहिं जब लाल को। गई देखन तहँ धाइ॥

## चौपाई

देखा कृष्ण लाल तेहि छाती। फिरी उठाइ चकित बहु भाती।
दुग्ध पान तब हरि नहिं करेऊ। यशुदा देखि शोच उर भरेऊ
गोपिन तब गो पुच्छ धराई॥ झारन लगे नन्द सुत आई॥
तब हरि दुग्ध पान लग करना। मिटा सभी कह शोच अदरना
आ तहिं नन्द तहाँ पर गयऊ। पुत्रा मरन जहाँ पर भयऊ॥
रहा भाग मम धन्य गुवाला॥ यातें जो बच गयो गोपाला॥
षट सहस्त्र गोदान कराये॥॥ कृष्ण हाथ ते तब नँद राये॥

## छन्द

तब नन्द ग्वायसु पाय ग्वालन लास पुत्ना जादू के
करि खंड खंड जलाद दीन्हो उडु सुगंध वसादू के
कह भूप सुनहु मुनीश सोहै पान कर अमिष सुरा
केहि कारणे अस गंध गमकी कहत मुनि हर्षित गिरा
तेहि दुग्ध पान कन्हाद कीन्हा चरण तेहि छाती धरे
किमि गंध है न सुगंध ऐसी नाथ हाथ से जो मरे॥
करि वैर पुत्ना प्रभु संहारन आद वेष बनाद के॥
तेहि मुक्ति दीन्ही कृपा सागर भजहि जो मन लादू के

## सोरठा

तिनहिं कथा नहिं कोय। जगन्नाथ सक वरणि कर
कहहिं सुनहिं नर जोय। भक्ति मुक्ति ते पावहीं॥

इति श्री कृष्ण सागरे शुकदेव परीक्षित सम-
वादे श्री कृष्ण दास जगन्नाथ कृ-
ते पूतना बधो नाम षष्ठोऽ
ध्यायः ६

## दोहा

कह नृप बाल चरित प्रभु। और कहहु मुनि राय।
कह मुनि पुत्ना मरण जब। सुना कंस दुख दाय॥

## चौपाई

लिये बोलि सब सुभट नुरन्ना। यह बालक मोहि मारत अन्ना।

बीरा लेहू जो मारण योगू ॥ सो अब जाहु मिटा वहु सोगू ॥
श्री धर विप्र एक तहँ रहेऊ ॥ सो दूध धन की कंस से कहेऊ ।
धरि बृध वेष तहाँ तेह गयेऊ ॥ यशुमति हिज लखि आसन दयऊ
कह हिज जन्म नन्द के लाला । भयो हृदय आनन्द विशाला
देखन आयउँ सुत अति मोदा । देखरावहु मोहि सपदि यशोदा
कहत यशोमति यमुन नहादूँ । आद देखा वब कुंवर कन्हादूँ ।
यमुन करन अस्नान सोगदजव । विप्र गयो श्री कृष्ण निकट तव
देखि श्याम ताकरि चतुरादूँ । जिह्वा दीन्ह मरोरि गहादूँ ॥

दोहा

दधि भांडे फोरे बहुत । दधि तेहि बदन लगादूँ
दधि जननी जब देखऊँ । दधि लगि आधि करि मादूँ

चौपादूँ

सकेउन बोलि सयन करि कहदूँ । यह सब चरित कृष्ण के अहदूँ
दूनहिं सकल भांडन दधि तोरे । मम सुत मरिव पुनि जीअ मरोरे
समुझि वचन बोली हरि जननी । सकल बाल की करिअस करनी ।
तुरत ताहि गृह ते निसरायो ॥ लज्जित होय कंस पहँ आयो ॥
निश्चय दृढ कंसे मन भयऊ । मम बैरी यह बालक जयऊ ॥
काका सुर कहँ तुरत पठावा ॥ कृष्ण हतन सो गोकुल आवा ।
बहुरि नासु ऐरी हरि गीवा ॥ यविधि बधि यदुपति बल सीवा ॥
दीन्हो फेंकि कंस अस्थाना ॥ देखि भया सो शोक निधाना ॥
सकटा सुर कहँ बहुरि पठावा । पवन रूप ह्वै गोकुल आवा ॥

कृष्ण लाल कहँ देखा जबही। मन में कथन लागु शठतबही।
यह बालक पुत्ला कहँ मारी॥ मम कर वचत नशब का कारी
सकट रहा तेहि पर चढ़ि गयऊ। कृष्ण चरण एक मारत भयऊ
निसरा प्राण गिरा सो ताहीं॥ कंस स्थान रहा नृप जाहीं॥
सकटा पर तेहि हता मुरारी॥ सकटा सुरभा नाम सुरारी॥

## छन्द

सकटा गिरा दधिभाण्ड फूटा नदीदधिकी वहि चली।
सुनि शब्द नन्द रुग्वाल धाये पुनि यशोदा हूँ मिली।
मन चकित ते सब कहन लागे बज्र पात भयो सही।
दधिभंड शनि पर चंड फूटे वहि गये मारवन मही।

## सोरठा

सप्त विंश दिन वयस। मे मारेहु हरि सकट को।
आगे सुनहु नरेश॥। गुण गाथा श्रीकृष्णकी

## चौपाई

पलने निकट ग्वाल के बाला। खेलत रहें सो मुदित विशाला
ते सब कहा सुनहुँ नंद राये॥ कृष्ण लाल यह सकट गिराये
कछु विस्वास काहु नहिं कीन्हा। बालक जानि न केउ चित दीन्हा
पंच मास के कान्ह भये जब॥ तृण वर्त्त निश्चर आयो तब
जोन समय सो गोकुल आवा॥ अंधकार तहँ चहु दिशि छावा।
दूरि खसे तव वृक्ष पवन ने॥ ठाढ़ गिरेउड़ि सकल भवनने
रहो खेलावत पुत्र यशोदा॥॥ आगन महँ शनि हृदय प्रमोदा

कृष्ण देह कीन्ही तहँ भारी॥ दीन्ह सुलाय तुरत मह तारी
लागी करन भवन को काजा। तब निश्चर सो अघ के साजा
धरि नभ माहँ उड़ा इक योजन। नन्द यशोदा दिक गे खोजन॥
नन्द यशो मति रोहणि ग्वाला। व्याकुल भे जब सब व्रज वाला
तब तेहि नन्द हार यदुराई॥ दीन्हा पटकि मुक्ति तेइ पाई॥
तृणा वर्त्त को जब हरि मारा। भयो बिगत तब सब अंधियारा

दोहा

नन्द यशो मति ग्वाल सब। तब देखे घर आय॥
एक तमीचर वध कियो तेहि छाती यदु राय॥

चौपाई

देखि भई सब कह मन माना। तृतन जन्म कृष्ण को जाना॥
लिय यशुमति हरि गोद उठाये। ता दिन हूं बहु द्रव्य लुटाये॥
कहत नन्द तब हृदय विचारी। सत्य वचन पति देवकि नारी॥
मोसन कहा रहा जो तब हीं। सो सब गोचर चक्षुभ अब हीं
निशिचर गण अब बहुत सतावहिं। नहिं जानो को करत सहावहिं॥
पुत्रादिक हति श्री यदु राये॥ तिन्ह कर छूटि बहुरि गृह आये
यशुमति निकट सखिन तब आई। बोली सुन तुम यशुमति माई।
कृष्ण हुते तोहि काज भलारी। लज्जित भई सुनत मह तारी॥
राखन लगी संग वन वारी॥ लगी दुलारन हृदय सुखारी॥

दोहा

खेलत दिन एक श्याम सुख। तहँ सखि तीनहू लोक

डारे देवकि छाड़ मुख। भाजननी उर शोक ॥
गुणिन बोलि भरवन लगी। व्याघ्र नखी पहिराय
जगन्नाथ के नाथ को। जेहि भय काल डेराय।
इति श्री कृष्णा सागरे शुकदेव परीक्षि
त संम्वादे श्री कृष्ण दास जगन्ना
थ कृते तृणा वर्त्त वध वर्णो
नो नाम सप्तमो ऽ
ध्यायः ७

दोहा॥

भूपति कंस के त्रास से। जन्म भेद बलदेव ॥
काहू तें भाषा नहीं ॥ हरि पितु श्री वसुदेव॥

चौपाई

नाम धरन तिन्ह मनअनुमानी। गर्गाचार्य्य सकल गुणखानी
निज उपरोहित बोलि पठाये। सो हर्षित गोकुल में आये ॥
मिले नन्द ने हाल जनाये ॥ ॥ सो मुनि अधिक हृदय हरषाये
सपदि दीन्ह बैठन कहँ आसन। जोरिपाणियुग जाविधि दासन।
लगे कहन बड़ भाग हमारे। दरश पाद्य अति भयो सुखारे।

दोहा

मम बालक एक श्याम मुनि। तेहु न धरायो नाम
करि किरपा तेहु नाम धरु। उपरोहित सुख धाम

चौपाई

कहत मुनीश नाम सुत तोरा। धरत्यों पर यक संशय मोरा।
कंस सुनत जब ऐसी बानी॥ जानत तब देवन दुखदानी॥
निज बालक वसुदेव पठाये। नाम करन उप रोहित आये॥
याते कछु न जना वन कामा॥ गुप्त धरा बहु निज सुत नामा
राखा तब बलदेव के नामा। श्री राम सब गुण के धामा॥
श्री दाऊ कालिन्दी भेदन॥ हरु बल भद्र बली सं कर्षन।
हलधर रेवति रमण आदि बहु। होत नाम बलदेव के जानहु
सुनहु नन्द जी बाल तुम्हारा। पर ब्रह्म लीन्हो अवतारा॥
ए दोउ बाल संग अवतरहीं। सुरमुनि भक्तन के दुख टरहीं
तप प्रताप तुम पायहु दूनहीं। महिमा सकल सुनत हो जिनहीं

दोहा

प्रथम लीन्ह वसुदेव गृह। जन्म तुम्हारे लाल।
वासुदेव भा नाम तेहि। जगत सुखद रक्षपाल

चौपाई

दूनहि नाम परगटत घनेरे। करिहैं जब कौतुक बहु तेरे
जन्म कुण्डली दीन्ह बनाई। राखा नाम कृष्ण यदुराई॥
बहु आदरि वसुदेव पुरोहित। विदा किये दै द्रव्य यथोचित
मथुरा नगर गर्ग मुनि आये। समाचार वसु देवहु पाये॥
यहां चरित बहु बाल दिखाई। कृष्ण देहि सुख निज पितु माई
प्रगट भये जब दरशन मुरारी। तब जननी आनन्दित भारी॥
मिसरी खीर हविष ते पावन। शुभ साइति कीन्ही अन प्रासन

विप्रन दान बहुत तहँ पाये ॥ दम्पति हरषि कुटुम्ब रिलाये

दोहा

धरिगो पुच्छ हरिहलधर। उठहिं गिरहि अगनाद्
व्रज वनिता हरि सुंदरता। आवहि देखन धाद्।

चौपाई

तत्क्षण एक विप्र तहँ आवा। नँद रानी तेहि अन्न पठावा॥
तुरतहि द्विज तहँ हविष बनावा। नयन मूँदि हरि ध्यान लगावा
तब श्री कृष्ण निकट तेहि जाद्। लगे करन भोजन हरषाद्।
तेद् यशुमति कहँ हालजनावा। तोहि बालक मम हविष जुठावा
तुरत यशोमति दूसर दीन्हा। बहुरि कृष्ण ताही विधि कीन्हा
तृतिय वार यशुदा रिसियाद्। काहे खात हविष तुम जाद्
सुनहु मातु सो मोहि बुलावा॥ प्रेम सहित पुनि ध्यान लगावा
तब मैं तासु निकट चलि गयऊ। मुदित हृदय भोजन तेहि पयऊ
सुनि द्विज कहँ भो ज्ञान विशाला। अस्तुति करन लगो नन्दलाला

सोरठा

हौं प्रभु लिय अवतार। पहि चान्यो नहिं कछु मम
अस कहि गेह पधारे॥ अचरज माना मातु पित
खेलत हते संग ग्वाल। दिन एक संकर्षन हरी।
तहँ द् श्री गोपाल॥ खाद् मृतिका भूप सुन

चौपाई

अब लो कह्यो श्री दामा ग्वाला। जाद् कह्यो यशुमति सो हाला

सुनि जननी अति अचरज मिस आई। डाटन लागी श्री यदुराई
बोले हरि मही नहिं खाई॥ मृषा कही को तोसन आई
सुनि जननी सोइ ग्वाल बतावा। हरि पूछा तेइ नहि कहि धावा
तदपि न भा विश्वास यशोदा। खोले हरि तब वदन प्रमोदा
तीनहुं लोक बहुरि तहं देखी। लच्छित भइ नंदरानि विशेषी
नन्दराय से कही सो तबहीं। भाषा भयो गर्ग सति जबहीं
ज्ञान भयो तब नन्द की रानी। त्रिभुवन पति श्री कृष्ण को जानी

तब हरि हृदय विचार किय। करिहौं लीला ढेर
पुनि सुत कर जानन लगी। ज्ञान लीन्ह हरि फेर।

## चौपाई

एक समय हल धर के साथा। खेलत रहे हरि त्रिभुवननाथा
तिन्ह संग भये विगार मुरारी। रुदन करत गे जहं महतारी
सुनु माता मोहि दयदयगारी। चिढ़ वत हैं बल देव पुकारी।
कछु नठि कान ताहि पितु माता। मथुरा जनमि जुरेव यहु नाता
गोर पिता अरु माता गोरी॥ तुम हौ श्याम माल के चोरी॥
ग्वाल चाल पुनि तोहि अनुहारी। मोहि पुकारत दय दय गारी
कह जननी तुम बालक मोरे। खेलहु निशंक नदी हे खोरे
सुनि हरि हृदय परम सुख माना। बहुरि खेलन गे तोहि अस्थाना
साझ समय खेलन जब जाहीं। कह जननी तहं जावहु नाहीं
होवा काटि लेत डर भारी। या विधि रोकत श्री बन चारी॥

दोहा

कर्नवेध अरु मुंडन ।। पुनि हरि कीन्हो नन्द ।।
पंच वर्ष के कृष्ण भे। तब अति हृदय अनन्द

सोरठा

ग्वाल बाल के साथ। गोकुल अरु व्रज की गली
लगे खेलन यदुनाथ ।। व्रजवाला मोहिनि निरखि

चौपाई

देखि सुंदरता मोहन सब ही। निज निज घर लैजाइ के तब ही।।
लगे खेलावन मारवन हंसि के। तब हरि परकि गये दुधरसिके।।
पाइ सून गृह सब व्रज वाला। संग लेइ सब गोप के बाला।।
दुध दधी सब देत लुटाई ।। खवन लगीं तब सीक चढ़ाई।
जेहि नहिं पाइ सके यदुराये। तुरतहिं कृष्ण उपाय बनाये।।
धरि पीढ़ा ऊखल ताही पर।। बाल चढ़ाइ आप तेहि ऊपर
मुरली तें मटु की कहूं फोरी।। सखी एक पकरी हरि चोरी।।
मारवन चोर नाम हरि धरेऊ।। जननी तें चुगली अस करेऊ।।
तब बालक मम दूध गिराई।। आपहुं खात औ देत लुटाई
तब हरि बोलि उठे तेहि औसर। मम कर किमि पहुंचे सीकन पर
झूठ कहत यह बात बनाई। उलटि मोहि निज गृह लै जाई

छन्द

लै जाइ निज गृह कोउ सखि चूमत वदन हरषाइ के।
सखि कोउ मारि कपोल। कोउ सखि दृचत दामन धाइ के

मोहि कहत कृत्य करन सखीको देत दुख दारुण महीं
अरु देत उलटि उरा हनो कहि खाइगे मारखन महीं ॥

सोरठा

सुनि माता हरि बात । तिन्ह करि बात सुपास मुहि
उर विश्वास न ज्यात ॥ गोद उठा लिये कृष्णा को

चौपाई

या विधि गोरस खात भुवाला। गोपिन के गृह जाइ गोपाला।
सखियां वचन सुनत चित चोरा। लज्जित हृदय फिरै गृह ओरा
देत उराहन जाय सखिन जब। कहैं सखिन से नंद रानी तब॥
तुमहिं करहु कछु हृदय विचारा। किमि सिकछु बलभुवाल हमारा
ज्ञान कोऊ बालक गोपाला ॥ करत होत उत्पात विशाला ॥
पलटा लेहु जो मानहु नाही॥ याधरि लावहु जब हरि जाही
ते लज्जित हर्षित पुनि गईं ॥ धरन उपाव कृष्णा के ठईं ॥

दोहा

राजन कोउ व्रज बाम जब। निज गृह हरि को पाय।
पूछत कयों आये कहां ॥ तब बोलत यदुराय ॥
निज गृह धोखे आइ के। खायउं मदुकि उघारि।
धरन जो चाहत कोउ हरि देत नयन महं डारि ॥

सोरठा

जब सो नयन उघारि। देखन चाहत श्याम को
तब लौं कृष्णा सिधारि। अति प्रात निजगृह आइके

## चौपाई

सुनि नंदरानि बुझावत भारी। नीलरक्त गौ के तुम अधिकारी।
जाहु न आन गोप गृह केहू। वृथा चोराद् के अपयश लेहू
देत उराहन सब व्रज नारी ॥ निजसुत खानन दे महतारी॥
बहुरि जो अस कबहूं तुम करिहौ। नन्द दण्ड दीन्हें दुख भरिहौ॥
बड़ सुत होइ के चोर कहाई। अति सपूत निजपितहि हंसाई॥
तब बोले हरि अब नहिं जाई। तिन्ह गृह खेलन सुन तुम माई
अस कहि तदपि न छाड्यो जाना॥ एक सखी पकड़ो भगवाना॥

## छन्द

धरि कृष्णउलहनन निकट यशुमति देन ज्यों ग्वालिनि चली।
तब रची माया नाथ यहतेहि पुरुष कर गहवा भली।
नहिं जानि सो माया मुरारी नन्द तिय सेकहने लगी॥
इत भये अन्तर ध्यान यदुपति जननि कहनवरिस पगी

## सोरठा

सुन ग्वालिनि अज्ञान। निजपति को श्रीकृष्ण कह
दीरघ हार जिय मान॥ ह्वै लज्जित गृह को चली

## चौपाई

नाहू दिन जननी समुझावा॥ पर प्रभु के मन कछु नहिं आवा
बहुरि गये एक ग्वालिनि के घर। रही सोइ सो तहं सय्या पर॥
धरि झोंटी बांधी चर पाई॥ मारवन खान लगे यदुराई॥
लागे दधि मटु की फोरन जबहि। शब्द सुनत गोपी जागी तबहि॥

चोटी बंधन देखि पुकारी ।। धाई सुनत सरिवन नहँ सारी।।
हरि कहँ गहि माता पहँ लावा। सकल चरित माता पहँ गावा
मारवन स्वाद मटु किया फोरी। आज पकड़ि पायौं मैं चोरी ।।
चोटी बाँधि उपाधि मचावत। ऐंचत चीर जहाँ कहुं पावत ।।
लज्जित ह्वै यशुदा लगि बोलन। खायो लेडु सो देहुन खोलन
सो गोपी निज भवन सिधारी। लगी कृष्ण डाँटन महतारी।
मानत नहिं कछु सिखवन मोरा। मारयव बाँधि तोहि अब चोरा।
सुनु माता मे मोहि ले जाहीं ।। धरि धरि घरके काज कराहीं।।

दोहा

नँदरानी सुनि चुप रही। लीला करि बन वारि।
जगन्नाथ सुख याहि विधि। देतेपितु महतारि।।

इति श्री कृष्ण सागरे शुकदेवपरीक्षित
सम्वादे श्री कृष्ण दास जगन्नाथ
कृते बाल चरित्र वर्णा
नोनाम अष्टमो
ऽध्यायः ८

दोहा

एक समय दधि मथ नरहि। नन्द भामिनी भुवास्त
आद् गये अति क्षुधित नहँ। मुरली धर गोपाल।।

चौपाई

मारवन लाद् यशो मति मार्द्। लगी खिलावन श्री यदुराई

ताहि समय माया हरि करेऊ। उबलन दुग्ध तहाँ पर भयऊ॥
तुरत यशोमति देखवन धाई। दहाँ विचारत भय यदुराई॥
मोतें अधिक दुग्ध को चाही॥ माता गई उठावन ताही॥
क्रोधातुर लै बासन मारवन। काढि काढि लागे प्रभु चारवन
ग्वाल बाल कह सुनहु कन्हाई। मम गृह बहुत दूध तुम खाई॥
आज आपने गृह के मारवन। देहु सकल ग्वालन को चारवन
तब ऊखल बैठे यदुराई॥ ॥ चहुँ दिशि ग्वाल बाल समुदाई
बहु बासन दधि फोरि गिराई। आपु खात औरनिन्हहिं खिलाई
ताहि समय नंद रानी आई॥ देखि ताहि गये सकल पराई॥

दोहा

ह्वै क्रोधित नंद महरितब। लेइ सखिन को साथ॥
पाछे माता कृष्ण की। आगे भागत नाथ॥ ॥

चौपाई

सक्यो न कोउ धरन यदुराई। मातु दुखी लखि गये धराई॥
बाँधन कारन कृष्ण मुरारी॥ लाग्न रजु पठवा महँ तारी॥
सुनत सखिन जहँ पाये जेते॥ लाये निकट यशोमति तेते॥
तदपि कृष्ण बंधन नहिं भयऊ। दो दो अंगुलि सब घटि गयऊ
जननी रुचि लखि गये बँधाई। यशुमति सब गोपिन समुझाई
खोलहु नहिं ऊखल तेहि हीं। तब हँसि बोली गोपिनतिन हीं
बहुत बात तुम हमहिं बुझाई। आज आप पकड़े यदुराई॥

दोहा

अलख अगोचर जगत पति जो अज ध्यान न आह्
जगन्नाथ सो भक्ति वश। बँधेउ ऊखली माह॥

चौपाई

यशुमति बाँधि गई जब यदुपति। भा पछितावा सखिन कहँ तब अति
दधि कारण प्रिय प्रान बँधाई॥ हृदय दुखित यशुदा पहँ आई॥
क्षमा करहु अपराध जो अहई। सुनि क्रोधित हरि जननी कहई।
बहुत उराहन दीन्ही मोही॥ जाहु आज नहि छाड़ब ओही
ते लज्जित निज गेह सिधाई॥ सुनतहिं तहँ आये हरिभाई
सोउ यशोमति बहु समुझाई। तदपि न खोला ओ यदुराई॥
गय बलदाउ निकट तब भाई। कहन लगे अस हरिहिं सुनाई
तुम हौ प्रेम के वश सुनु भ्राता। बँधा गये भक्तन सुख दाता॥

दोहा

तुम्हरी महिमा अगम है। अस कहि प्रेम समेत॥
तहँ ते सकर्षण गये॥ गुण निधि ज्ञान निकेत

सोरठा

या विधि शोचहि आप नल कूवर अरु मणि ग्रीव॥
तनय कुवेर के आप॥॥ नारद ते भय दुख दोउ
दूनहि उधारन काज॥ हम बँधिगे यह ऊखली
दूनहिं उधार व आज। नाम जिनहि यमलार्जुन
व्रज वासी के दाम॥॥ गये बँधि हरि भक्त हित
दामोदर भा नाम॥ याहीं तें यदुवीर कहँ॥

इति श्री कृष्ण सागरे शुकदेव परीक्षित
सम्वादे श्री कृष्ण दास जगन्ना-
थ कृते दाम बंधनो नाम
नवमो ऽध्यायः ९

## सोरठा

कह नृप सुन मुनि राय। भयो आप कैसे तिनहिं
सो मोहि कहहु बुझाय। कहन लगे शुकदेव तब

## चौपाई

कह मुनि दोउ बालक कुबेर के। मृग सम मद मृगपति अहेर के
मद माते गंगा तट जाई ॥ ॥ संगतियन विहरन लगु राई॥
विहरत समय देव ऋषि आये। गर्व विवश ते शिर नहिं नाये॥
शोचा मुनि एमे निर लज्जित ॥ करिहैं अघ नामहु को नहिं हित
नाते भागहु अघ कर दूरवा ॥ जाय होहु गोकुल दोऊ रूरवा
सुनत आप गिरिगे मुनि वरणा। कब प्रभु होत हमारो तरणा
बोले मुनि जब हरि अवतरिहैं। बाल चरित करि के तब तरिहैं
सुन नृप सोइ आप ते होऊ ॥ गोकुल माह वृक्ष तन होऊ॥
ताते घुस कत गे यदुराये ॥ ॥ ऊखल नाद दोउ मध्य गिराये
भये प्रगट जड़ ते तसु दो नर॥ अस्तुति करन लगे मुरलीधर
हे प्रभु अखिल लोक के नायक। मन विपति भंजन सुखदायक
कान्ह कृपा नारद मुनि भारी॥ याते दरशन भयउ मुरारी ॥
तुम्हरे भजन होत नर ज्ञानी॥ तुम ते विमुख अंध जिमि प्रानी

सुनि हरि कहा मागु वर दाना। नवधा भक्ति मांगि भगवाना॥

दोहा

पाद मनोरथ भूप तव। दोनो होद् अशोक॥
चढ़ि बिमान शिरनाद्के। गे कुबेर के लोक॥

इति श्री कृष्णा सागरे शुकदेव परीक्षित
सम्वादे श्री कृष्णा दास जगन्ना-
थ कृते यमलार्जुन मोक्ष
वर्णनो नाम द्वा-
त्रिंशोऽध्यायः३०

दोहा

वृक्ष गिरन को शब्द सुनि। आई नन्द किनारि।
तेहि विच हरि को देखिके। कीन्ही घोर पुकारि॥

चौपाई

सुनत पुकार महर तहँ आये॥ यशुदा कहँ अति श्रम मिलि जाये
कृष्णा हि खोलि के गोद उठाये। हर्षित भै गोपन समुदाये॥
मातु लेद् पुनि श्री यदुवर को। गद्हरि सुमिरि मुदित निज घरको
कहत नन्द यह तरुन पुराने। कैसे गिरे कहहु सब स्याने॥
ग्वाल बाल महँ कह एक बानी। दून्हे गिराये जन सुख दानी।
बालक जानि न कोउ विश्वासे। तब यदुवीर कहत माता से
भूख लगी भोजन नहिं कीन्हों। मारवन रोटि यशो मति दीन्हों

दोहा

राजन जब नंद नंद के। आवा गांठ को वर्ष॥
नन्द किये बहु दानतब। अति हरषाति उर हर्ष॥
नन्द कहत उप नन्दसे। नहिं सुख गोकुलग्राम
जहँ सुख गो मानुषमिले। कहहू तेसी ठाम॥

चौपाई

कह उप नन्द नन्द सों बाता। वृन्दावन थल सुख के दाता।
जहँ राजत भूधर गोवर्धन॥ नन्द सुनत तहँ वपो मुदितमन
गोपी ग्वाल रहे नृप जेते॥॥ बसे सकल वृन्दा वन तेते॥
पंच वरष के कृष्ण भयेजब। कहन लगे नन्द भामिनिसों तब
हमहुँ चरावन गो वन जैहों। संग हि ग्वाल बाल फिरि ऐहों।
हरि जननी कह सुनुसुत बाता। हैं बहू अनुचर गो सुख दाता
तिनहिं जाद् करि है रख वारी। हरि माना नहि तव महतारी॥
बोलि ग्वाल समुझावन लागी। कृष्ण को संग न कबहूं त्यागी
सदा रखहु संग श्री हलधर को। जीवन धन मोहिं नंद कुँवर को॥
अस कहि दीउ भ्राता संग ग्वाला। भेजी यशुमति मुदित विशाला
लगे यमुन तट धेनु चरावन॥ बाँटि बाँटि दल अपन अपन
मारवन गेंदी मातु पठाई॥॥ वन कलेउ हलधर यदुराई॥

दोहा

वृन्दा वन में रहन के। सुना कंस जब हाल॥
कृष्ण हनन पठवा तबहि। वत्सा सुर विकराल॥

चौपाई

वत्स रूप धरि लगा सो चरना। जहाँ रहे प्रण तारत हरना ॥
अन्तर यामी श्री भगवाना ॥ कपट रूप कहँ गे पहिचाना॥
चरण घुमाइ वृक्ष जड़ पटका। तुरतहिं प्राण तहाँ तेहि सटका
पुनि तेहि भाइ बकासुर आवा। बक स्वरूप तेइ किये बनावा
धरि हरि ओठ चरण ते दबावा। करते चिर के स्वपुर पठावा ॥
सब देवन अति भयउर हरषे। सुमन बहुत नभ के मग बरषे
ओरहु लगे बजावन बाजा ॥॥गरजेउ असुर मरत अति राजा

## छन्द

जब प्राणा जान समय बकासुर शब्द किय एक मेघसे ॥
सुनि आय हल धर ग्वाल संग बक बधन देखि अधिक हँसे
हरि विमल कीरति कहत ग्वालन कृष्णा के संग घर गये
निज भवन ओरहु नन्द से कहि सकल मन हर्षित भये॥

## सोरठा

जाइ सुनाये ग्वाल ॥। वत्स बकासुर के वधन।
सुनत नन्द तेहि काल। दान दिबाये कृष्ण से।

## चौपाई

गोकुल तजि वृन्दा बन आये। तहँ पुनि निश्चर कंस पठाये॥
अब मति जाहु कृष्णा बन माहीं। अति उत्पात निशा चर लाहीं
कह हरि हम खेलब घर माई॥ मंगा देहु मोहि भवर चकाई
तुरत हि माता चकइ मगाई॥ खेलन लागे श्री यदु राई॥
गोपी सब हरि देखन आवें ॥ निज कुच चकई श्याम बझावें

तिन्हे हरष उर अन्तर भारी॥ देहि हृदय बाहर ने गारी॥
कोइ जामुन बेचन प्रभु पासा। आवै मुदित दरश की आसा॥
जामुनि लेइ देत हरि नाजा॥ सो सब होत मणिन समराजा॥
लोभ विवश ते प्रभु पहँ आवैं। मन मोहन नव मोद बढ़ावैं॥

दोहा

भूपति पूरब जन्म में॥ किय ग्वालन बहु पुण्य
जो नहिं आवत ध्यान अजनेहि संग खेलत धन्य
इति श्री कृष्ण सागरे शुकदेव परीक्षित
सम्वादे श्री कृष्ण दास जगन्नाथ
कृते वत्सासुर बकासुर बधो
नाम एका दशो ऽध्या
यः॥ ११॥

सोरठा॥

एक दिवस संग ग्वाल। पावन यमुना तट निकट
जहाँ रहे गोपाल॥ मज्जन तहँ राधा गईं॥

चौपाई

मोहित मैं देखत हरि ताही। राधहू मोहित मन माहीं॥
कह्यो कृष्ण काकी तू कन्या। कबहू न देख्यों त्रिभुवन धन्या
सुनि बोली वृष भानु दुलारी। हौं ननया वृष भान मुरारी॥
कह हरि कबहुँ कबहुँ मम पासा। आवहु खेलन संग हुलासा।
गईं सुनत राधा गृह ओरा॥ चित लगि रह्यो सुरति चित चोरा

करि मातातें विविधि बहाना॥ आवें निकट तहां भगवाना॥
माता तें करि गर्द बहाना ॥॥ गो दुहान को यक दिन ठाना
आई मिलन जहां यदुराई ॥ खरका में रह कुंअर कन्हाई

दोहा

हरि माया तब अस रची। कीन्ही बहु अंधियारि
राधा तेतेहि अवसर। बत गही मुद भारि॥

चौपाई

तम देखी राधा अकुलानी। तब यदु वर लीला अस ठानी
आपु वस्त्र राधा के लीन्हा। पीताम्बर राधा कहँ दीन्हा॥
गये गेह अपने भगवाना॥ राधा गर्द भूप वर साना॥
जब हरि भवन गये अति मोदा। देखि तिनहिं अस कहति यशोदा
करि तुम प्रीति संग कोउ नारी। आयो पहिरि नाहि की सारी॥
कह हरि सुनु माता मम बाता। यमुना तट हूँ गाइ चराता॥
पीताम्बर ताके तट धरे। ॥ सखी एक तहँ मज्जन करे॥
धेनु एक नहँ गर्द भदुक के॥ धोरवे पहिरि भजी सो धड़के
मैं जानू सोऊ ब्रज नारी॥ ॥ लावउँ वस्त्र बदलि मद्दनारी
अस कहि गवन भवन तें कीन्हा। नाहि बदलि माया ने दीन्हा
जननी पहँ सोइ लाइ दिखावा। उर विश्वास यशो मति आवा

दोहा

निज गृह जब राधा गर्द अति भय कंपित गात॥
मातु कृत्योदा देखि तेहि। लगी पुछन कुशलात

सोरठा

कह राधा सुनु माय ॥ गए दुहावन धेनुवन
तहाँ सर्प एक आय ॥ डस्यो सुता एक गोपकी

चौपाई

भारि दीन्ह तेहि श्रीवन वारी। भई सचेत तबहिं सो नारी ॥
ताके भय आतुर मैं आऊँ ॥ अब नहिं जादव तजि निज गाऊँ
कहत कीर्त्ति हम प्रथम हि तोही॥ बरजत रहीं न मानेसि मोही॥
चलत समय निरखसि असमाना। पांव धरसि अन देखे थाना॥
कबहुँ जात यमुना अस्नाना॥ कबहूँ खरका धेनु दुहाना॥
याविधि मातु बहुत समुझाई। राधा के उर बस यदुराई ॥
गए हरि धाम पुकारन कारन ॥ सुनतहि आये दनुज संघारन।
कह माता से यदु कुल राई ॥ रहेउ कबहुँ मैं पंथ भुलाई
सखी एक मोहि पंथ दिखवाई। आजु सोइ सखि मम गृह आई
आयसु देहु आव मम गेहा। दिये निदेश मातु भरि नेहा ॥
तब श्यामा गए हरि गृह माही। पूछन लगी महरि नित ताही

सोरठा

कोहे पितु अरु मातु ॥ काहे नाम तिहार कहु
भानु कीर्त्ति पितु मातु॥ नाम हमारो राधिका।

चौपाई

हरि जननी सुनि कह हरषाई। मैं जानी तुमरे पितु माई॥
पिता रवोट कुल बन्नी माई ॥ सुनि बोली राधा सुतु काई॥

मम पितु कीन्ह खुटाई कैसे। कह बुझाइ सबहिं मोहिं तैसे॥
सुनि अस वचन कृष्ण महतारी। अति आनंदित हृदय विचारी
चाहिय करन विवाह हरी से। अरु श्यामा अति प्रेम भरी से॥
अस उर भाषि शृंगार सजाई। अंचल महँ दै बहुत मिठाई॥
कह हरि मातु वचन रस सानी। आइ सदा तुम प्रेम की खानी॥
खेलहु संग कृष्ण मुरली धर। श्यामहु कहा खेलन मुसुकाकर
तेहि क्षण राधा गेह सिधारी। किये सिंगार देखि महतारी॥
पूछन लगी शृंगार को कीन्हो। राधा समाचार कहि दीन्हो॥
सुनि कल्योदा भई सुखारी॥ याहू अस निजहृदय विचारी॥
चाहिय करन कृष्ण सों ब्याहू। दोउ जोरी राधा जग नाहू॥॥

दोहा

अस विचारि वृष भानु से कही ब्याह की बात
सुनि तिय कवच प्रेम युत हरष केहु नहिं जात

चौपाई

राधा खेलन लगी हरि संगा। श्यामा श्याम खेलहिं बहुरंगा
कौन कहै कवि शोभा जोरी॥ श्याम कृष्ण तन राधा गोरी।
राधा कह गो दुहन विहारी॥ हरष समेत दुहे वन वारी॥
एक दिवस जब गाइ दुहाई। राधा अपने गेह सिधाई॥
पंथ मिली एक सखी सयानी। पूछन लगी सुनु राधा रानी॥
कत रे आजु धेनु खरव वारे। जो दूही गो नन्द दुलारे॥
कृष्ण नाम सुनतहि महि गिरी। गिरत समय तेहि कह दुख भरी

डस्यो स्याम सर्प मोहि आई। सो सखि कहत कीर्ति से जाई।
बहुत गुनी से मातु भरावा॥ मंत्र तंत्र कछु काम न आवा॥
गई कीर्ति नव यशुदाहीं। कहहु कृष्ण को भारन जाहीं
यशुदा सुनी मंत्र हरि आवा॥ तुरतहि भारन संग पठावा॥
गे हरि जबहिं राधिका देखा। छूटि गयो विष तनविशेषा
कछु पढ़ि हरितन वेन छुवाई। है सचेत नव अंग छिपाई॥
राधा कहें हरि सुखविषलागा। श्याम स्वरूप देखिविषभागा
लीन्हो हरि कहें गोद उठाई। दीन्ह कीर्ति नव मेव मिठाई॥

छन्द

नव कीर्तिदे मेवा मिठाई विदा किय जग नाह को
जेहि विमल उरतेहि डसत श्याम स्वरूप उरग उछाह को
जब भवन गवन लगो समन दुख कृष्ण तब ललिता कही
तुम मोहनी ते मोहि लीन्ही राधिका को हरि सही
सुन वचन प्रभु मुस कात आपन गेह में आवत भये
सुनि मातु यशुमति हरष उर अति प्यार करि गोद हे लिये
हैं एक पर दुइ रूप धरिके प्रगट ह्वै लीला किये॥
कह जगन्नाथ सोधन्य जग में जो सप्रेम सुनत भये॥

दोहा

एक दिवस संग ग्वाल सब खेलत रहे गोपाल॥
चित्र कारि आंगन किये सुमन हार गल डाल॥॥

चौपाई

सब मिलि ग्वाल पुकारन गाये। तहां अघासुर कंस पठाये ॥
धरि तेहि सर्प रूप अति मोटा। योजन चारि माँह गा लोटा ॥
ऊपर ओष्ठ गगन लगि गयऊ। नीचे कर भूमी लग भयऊ ॥
कह हरि यह गिरि गुहा समाना। यामे जाहु न कबहुं भुलाना ॥
यद्यपि हरि तिन्ह बहुत बुझाई। सखा तोरव अस सबहि सुनाई
चलहु होत यद्यपि कोऊ निडर। इति हैं श्याम समान बकाधर
ज्यों ते पैठ गये सुख तासू ॥ ॥ गये उदर विच खीचत स्वासू
तब हरि तिनहिं बचावन कारन। पैठ गये सुख असुर संघारन।

दोहा

वदन बन्द करि कहत तेहि बक पलटा अब लेब
अस लखि हरषे असुर सब भै सब शोचित देव

चौपाई

तेहि महँ निज तन श्याम बढ़ावा। निसरा प्राण मुक्ति तेहि पावा
देवन देखि बहुत उर हरषे ॥ हरि के तन प्रसून नभ बरषे।
ग्वालन निसरि संग हरि आये। कहन लगे धनि प्राण बचाये
कह हरि बिन बल किये निहारे। सकत्यो मारि न असुर सुखारे ॥
कुंजबन में कुंजबन के नाथा ॥ खेलन लगे सखा सब साथा
सूखा अस्थि अघासुर केरे। खेलहिं ग्वालन प्रविसि घनेरे
मरत समय तेहि हरि पद ध्यावा। याही तें मुक्ती फल पावा ॥
जो नर मरत समय हरि ध्यावहिं। ते अवश्य वै कुण्ठ सिधावहिं
राजन बीति गये एक साला ॥ तबतेहि बधन प्रकाशे ग्वाला

## दोहा

कह नृपनिज निज गेह में वर्ष उप्रान्न ग्वाल॥
किमि वध ता कर कहत भै कहु मुनि कथा रसाल

इति श्री कृष्णा सागरे शुकदेव परीक्षि-
त सम्वादे श्री कृष्णा दास जगा-
न्नाथ कृते राधिका मिलन
अघासुर वध वर्णनो
नाम द्वादशोऽध्या
यः॥१२॥

## दोहा

मारि अघासुर कृष्णजू यमुना किये नहान॥
ग्वाल बाल मज्जन किये यशुमति भेज्यो खान

## चौपाई

ग्वाल बाल बैठे चहुं ओरा ॥ तिनहिं बीच बैठे चित चोरा॥
आपन जूंठ ग्वाल सुख नावे ॥ ग्वालन हूँ श्री कृष्णा खिलावे
दृश्य विलोकि देव पछताये॥ तुरत हिं चतुरानन पहं आये
तुम भाख्यो हरि लिय अवतारा॥ देखा जूठ खात हम ग्वारा ॥
भा मुख चारहु संशय भारी॥ यों चत यदु कुल केतु विचारी
खात हुते जब ही यदुराई ॥॥ हत ब्रह्मा लिय बच्छ चुराई॥
कहहिं ग्वाल उत सुनु यदुराई। कछु सुधि गोवन की नहिं पाई
बोले हरि हम लाउ बताई ॥॥ अस कहि खोजन गये कन्हाई

## दोहा

दूत ब्रह्मा लै ग्वाल पुनि गरवा गर्न छिपाई॥
खोजत हरि पाये नहीं। जानी विधि चतुराई॥

## चौपाई

माया ते सब बछरू ग्वाला॥ रचे कृष्ण प्रभु दीन दयाला॥
चाही विधि सब निज घर जाही। माता प्यार करत कम नाही।
जब ते विधि सब बछरू छिपाये। सत्यु भुवन तजि गेह सिधाये।
तब ते बीति गयो नर साला ।॥ तब ब्रह्मा आये जहँ ग्वाला॥
निद्रा वश देखा सब काहू ॥। गये बहोरि जहाँ जग नाहूं॥
देखा चरित नन्द सुत जब हीं। पुनि गै रहा गर्त जहँ तब हीं॥
प्रथमहिं विधि गो बछरू पाये। गये बहोरि निकट यदु राये॥
भये चतुर्भुज सब गो पाला। देखत ही भा कम्प विशाला।
जानि नाथ माया हरि लीन्ही। तब पद गिरि अस विनती कीन्ही

## दोहा

तुम प्रभु दीन दयाल जग। गर्व प्रहारि सुरारि॥
मोह हरेउ मम करि कृपा देहु अपराध विसारि
तब हरि अपने चरणते। लीन्हो विधिहि उठाय।
प्रभु कृपाल देखा जबहिं। ग्वाल बछरू दियलाय

इति श्री कृष्ण सागरे शुकदेवपरीक्षि-
त सम्वादे श्री कृष्ण दास जग-
नाथकृते ब्रह्मा

वत्सहरणो नामत्रयोदशोऽध्यायः९३

## सोरठा

कह ब्रह्मा सुन नाथ ॥ धन्य भाग्य ब्रजनारिनर
जो जनमों इन्ह साथ। पावैं दरश सदा प्रभू॥

## चौपाई

तृण महँ होय जो जन्म हमारो। यातन तें सो अधिक पियारो
मोह विवश मैं कियेउ ढिठाई। याँचन चहेउँ चराचर साईं॥
भक्त विवश अवतरे हहु स्वामी। आदि अन्त नहिं अंतर्यामी॥
क्षमा करहु अपराध हमारे। सुनि विधि वचन कहा असुरारे
करि ब्रज मंडल की परि कर्मा। आपन लोक जाहु तुम ब्रह्मा॥
सुनि प्रभु वचन चहू फिरि आये। तब ब्रह्मा निज लोक सिधाये
यद्यपि बीति गयो एक साला। रही न सुधि तद्यपि कछु ग्वाला
कहहिं कृष्ण से सुन यदुराये। तुरतहिं तुम बछरू ले आये॥
अस कहि गवन भवन सब कीन्हा। जननी कृष्ण लाइ उर लीन्हा
सुना अघासुर हते कन्हाई॥ कियो दान बच्छिन यदुराई॥
पंच वर्ष की उमर गोपाला॥ कीन्ही अस लीला संग ग्वाला
जो जन कहहिं सुनहिं चित लाई। पावहिं मुक्ति मनोरथ राई॥

## दोहा

राजन जब हरि जाय बन रहे सखिन चित लाय
जब फिरि के आवैं भवन दरशि हृदय हरषाय

इति श्रीकृष्ण सागरे शुकदेव परीक्षि-

तसम्वादे श्री कृष्ण दास जगन्नाथ कृ॰
ते ब्रह्मा स्तुति करन वर्णनो ना-
म चतुर्दशोऽध्यायः
१४॥

दोहा

एक दिवस बल देव सँग लेइ गाय अरु ग्वाल
चले वृन्दा वन विपिन में मुरली धर गोपाल

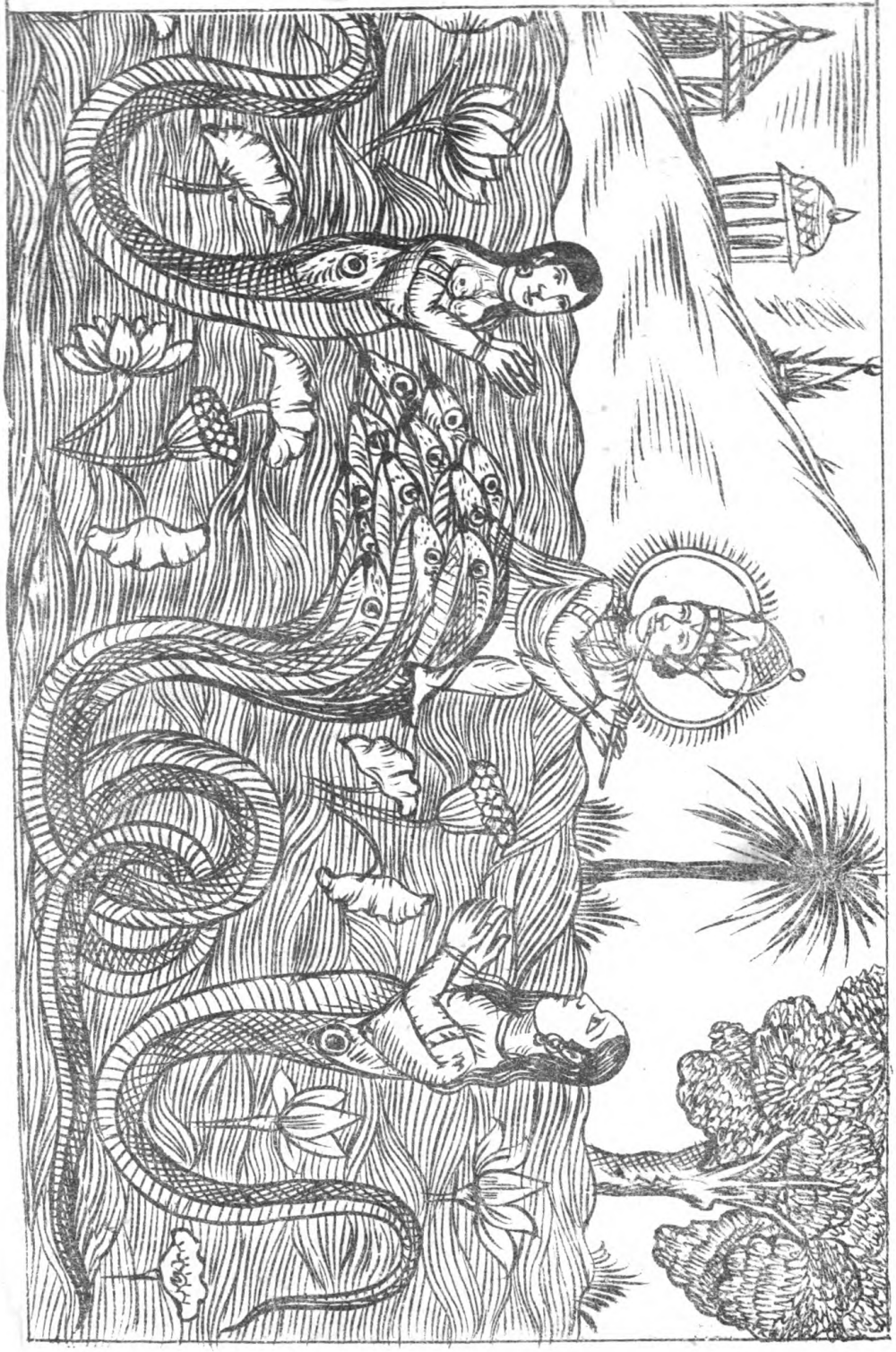
चौपाई

संग परस्पर कौतुक करहीं॥ ताली मार सखा यदु वर ह
कृष्ण हुतिन कर ताली मारी। भागहिं करि करि कौतुक भ
श्री दामा एक सखा मुरारी। कहन लगो तेहि ते बन वार
नवे वृक्ष जो देखहु दून में॥ फल अरु पुष्प चहूं दिशि
सो सब तरु हल धर के हेतू॥ फले फुले हैं सुनगो केतू॥
धान धनि हैं वृन्दा वन वासी। महिमा अकथ मंडल चौरास
अस कहि दो बल सखा बनाई। दूत हल धर उत यदु कुल राई
हय हाथी की बोलहिं बोली। विविधि प्रकार करहिं मिलि ठोल
कारी धूसरि नाम बुलाई॥ निज निज गाय पुकारहि जाई॥
हरि के बल दूसरि दिशि गयऊ। हल धर को बल बिछुरत भयऊ

दोहा

संकर्षण ते एक नहीं॥ सखा कहत सुन भाइ
आगे है बन ताल फल सुधा समान मिठाइ॥

भागनाथन लीला॥



चौपाई

धेनुक खर रखवारी बैठा ॥ मोहन देत काहु नहिं पैठा ॥
तुम्हरी कृपा हमहुँ चहैं खाना। हलधर कहा खाहु फल नाना
श्रम कहि दीन्हों वृक्ष हिलाये। फल बहु टूटि धरणि पर आये
गिरन शब्द सुनि खर तहँ आवा। हलधर को तेहु मारन धावा॥
संकर्षण दौड़ पद धरि पटका। गिरत हि मात्र प्राण तेहि सटका
ताके बन्धु निकट चर आये ॥ तिनहुं मारि बलदेव गिराये॥
तब सबने फल हर्षित भारी। बल मोहन संग गेह सिधारी॥
बाँटि बाँट खागे फल खाना॥ गाय गाय हलधर गुण नाना
दूसर दिन बिनु हलधर ग्वालन। गये कृष्ण संग धेनु चरावन॥
तृषित भये संग तजि वनचारी। जल पीवन गे यमुन बिचारी।
सो रह काली नाग बसेरा ॥ तेहि विष मूर्छित परे बछेरा॥

दोहा

सब ग्वालन गायन सहित मूर्छित परे अचेत॥
देखि विलम्बन ग्वाल सब आये यदु कुल केतु
अमिय नयन ते देखेऊ। सब पुनि भये सचेत॥
बोले यामे नाग है ॥ तेहि विष भयेउ अचेत॥
जगन्नाथ तिन्ह संग ले। आये गृह गोपाल॥
गोपिन हरषि भई मुदित चन्द्र वदन नन्दलाल

सोरठा

सोवत भे हरि रैन ॥ काली दह डूबन निरखि

कहा स्वप्न को बैन ॥ ॥ जननि शोचि बहु दानकिय
इति श्री कृष्ण सागरे शुकदेव परीक्षित
सम्वादे श्री कृष्ण दास जगन्नाथ
कृते धेनुक वध वर्णनो ना-
म पंच दशोऽध्यायः
१५॥

दोहा

राजन काली नाग विष ते नर को सहिं चार॥
मरत रहे नहिं लाग कोउ रक्त होत जरि छार॥

चौपाई

लगे न तरु कोउ ताके पासा॥ पर रह एक कदम्ब तरु वासा
कह नृप सो तरु कहि विधि रहेऊ तब मुनि अस भूपति से कहेऊ
रहे नाग कोद्र युगहिं खरोरा। तिन सुरव असुत रहा नरेशा॥
बैठ सीद्र नरु पर खग राई॥ गिरा ठोप असुत नहं जाई॥
यहि कारण सोद्र नरु नहं रहेऊ फल गहि लंक विभीषण लहेऊ
ताते आग को दहते निकालन। दृच्छा कीन्ह कृष्ण जग पालन
हरि रुचिते कंसा सुर पासा॥ गये देव ऋषि सहित हुलासा
सादर बैठन आसन दयऊ। तब नारद अस पूंछत भयऊ
काहे तब तुम अहहु उदासा। कंस कहा तब हृदये त्रासा॥

दोहा

कहा कहौं मुनि नाथ। गोकुल जन्मे बाल दो

तिन्ह भय जीवन नाथ। अवश हतें गोमोहिने ॥

चौपाई

कहिन जात तिन के बल भारा। जो बलवंत अघासुर मारा॥
जानत हतें सुनी हरि दूच्छा ॥ दीन्ही कंसहिं या विधि सिच्छा
ब्रजमें एक काली दह आही ॥ मरहि सकल जो तेहि तट जाही
तहतें पुष्प कमल के सुन्दर ॥ मागि पठा बहु नन्द से चपवर
नहिं वेउ बालक लावन जैहैं। जानहिं मार मृत्यु वेउ वैहैं ॥
अस कहि मुनि निज धाम सिधाये। दूत नेद नन्द हि हाल जनाये
कोदि पुष्प भेजहु दह लादूं ॥ नहिंतो करब कैद दोउ भादूं
नन्द उपनन्द शोच उर भारी। कैसे लाइब पुहुप निकारी ॥

सोरठा

शोचन गय निज प्राण। शोच अधिक दोउ भादूके
कंसा सुर दुख दानि ॥ कत गय बचो उपाधिके
तेहि औसर यदुराय ॥ पूछा आद के मातु से।
काहि सब पछताय ॥ कहा नन्द तब कृष्णा से

चौपाई

जबते तुम जन्मे यदुराया ॥ कंस बहुत उत्पात मचाया॥
कमल पुष्प दह मांगेउ लादूं। कैसे लाउब दह विच जादूं॥
जो नहिं पुष्प पठावब तेदूं ॥ हमहि निकारि तुमहिं दुख देदूं
कहा कृष्ण भजहू भगवाना। करिहै मोदूं सहाद निदाना॥
अस कहि जादू यदुनगोपाला। लेदू गोंद श्री दामा ग्वाला।

दीन्हो कालो दह मह नाई॥ गेंद लेन नेद रार मचाई॥
कह हरि जान न मम प्रभुनाई। पुष्य स्वादनोहि देव दिखाई
अस कहि कूद परे यदुराई॥ सखा एक यशुमतिहि सुनाई
नन्द यशोमति व्याकुल धाये। तिन पीछे ग्वालन समुदाये
लोग हुवन दोनो जल माही। सखा रोकि लीन्हो यदुराही

## छन्द

नंद सखा सब लिये रोकि दम्पति रोवन लागे सुनाइके
तुम कीन्ह कृत्य सकल व्रज कहं हमन को बिसराइ के
तब लगे संकर्षण बुझावन देखि दुख व्रज वासिही॥
हरि गमन कीन्हो नाग नाथन मृत्यु किमि अबिनाशिही

## सोरठा

गहिं आवें जो श्याम। नाथि नाग ले हाथ में॥
नाम न मम बल राम। समुझि तजो मन शोच सब

## दोहा

संकर्षण के कहन ते॥ धीरज कछु उर पाय।
जेहि मग हरि कूदन भये देखवहि सखि समुदाय

## चौपाई

दूतगे श्याम नाग जहं रहेऊ॥ हरिहि देखि नागिनि अस कहेऊ
आइ बाल अपने गृह माही॥ नाहित नाग डसत फिरि याही
ताके विष जरि जात शरीरा॥ तुम कोमल तन मोहि अति पीरा
कहत श्याम मोहि कंस पठावा। कमल पुष्य लेने को आवा

कह नागिनि सो मरा न काहे ॥ जो तोहि पुष्प लेन भेजा है ॥
बोले हरि किन देहु जगाई ॥ जाके बल तुम मोहि सुनाई ॥
नागिनि जब नहिं नाग जगावा ॥ तब हरि जाइ के पूछ दबावा ॥
जानि गरुड़ सो उठा सरासा ॥ देखा ठाढ़ बाल एक पासा ॥
काटन लागा कुँवर कन्हाई ॥ विष नहिं चढ़ा तदपि यदुराई ॥
अंग लिपटि सो हरि हिं दबावा ॥ त्रिभुवनपति तब देह बढ़ावा

दोहा

दूटन लगा शरीर तेहि दियो छाड़ि तब नाथ
तब हरि ताके फण चढ़े लीन्हो नागहि नाथ।

चौपाई

तेहि फण चढ़ि हरि नाथा जबहीं ॥ नृत्य करन लागे प्रभु तबहीं
देवन पुष्प लगे बरषाना ॥ गन्धर्वन लागे गुण गाना ॥
चरण परा तेहि नाथ मुरारी ॥ तबहि नाग अस गिरा उचारी ॥
कहा रहा ब्रह्मा अस बाना ॥ गोकुल अवतरि हैं जन त्राता ॥
अबधों सोइ लिये अवतारा ॥ अस जिय जानि दिये अनुसारा ॥
नागिनि हूँ अस्तुति बहु कीन्हे ॥ भले किये प्रभु गर्व हरि लीन्हे ॥
कहत नाग हौं सरण निहारे ॥ क्षमा करहु अपराध हमारे ॥
हरि पदरज ब्रह्मा नहि पावहिं ॥ सो प्रभु मम शिर ना चहि गावहिं

सोरठा

दीन वचन सुनि नाथ ॥ क्षमा कीन्ह अपराध तेहि
पुष्प लादि तेहि साथ ॥ चढ़ि के पार भये यमुन ॥

## चौपाई

कह्यो कृष्ण तुम सब परिवारा। रमण कहीयमें रहहु सुखारा॥
कह्यो नाग तहँ रहहिं खगेशा॥ तिन को भय मोहि लगत सुरेशा॥
कह हरि मम पद छाप विलोकी। कहि इहिं नहिं कछु रहहु अशोकी
तदपि मिटा नहिं तेहि उर त्रासा। लिये बोलि हरि खग पति पासा।
मिटा दीन हरि तेहि उर त्रासा॥ धरितेहू पुष्प कियो तहँ वासा॥
नाथे नाग पुष्प तिन्ह गोहन। हरषित भये देखि छवि मोहन॥

## छन्द

देखि कृष्ण को मातु पितु कहँ हृदय आनंदता भयी
ब्रज वासि नर नारी मुदित भै उर गमनि मिलिगद् गयी
जो कहहिं समुझहिं सुनहिं चित दै नाग नाथन श्याम हीं
नहिं होत कबहूं सर्प भय तिन्ह जाहि कृष्ण के धाम हीं

## सोरठा

श्री यदुराज विराज ॥ नाथे नाग समाज भज॥
सब देवन शिर ताज ॥ जगन्नाथ मम उर बसे।

इति श्री कृष्ण सागरे शुक देव परीक्षि-
त सम्वादे श्री कृष्ण दास जगन्ना-
थ कृते कालीदमन वर्णनो
नाम षोडशोऽध्या-
यः॥ १६॥

## दोहा

कह नृपरमणक द्वीपप्रभु। थान महा सुखखान
तहँ ते भागेव नाग किमि। सो अब करहु बखान

## चौपाई

सुनु नृप कश्यप मुनि रह कोऊ। कद्रू विनता रह तिय दोऊ॥
नागा दिक अहिगण बहुजाये। कद्रूते सुनिये चित लाये॥ ॥
विनता तें दो बालक जयऊ॥ प्रथमहिगरुड़ अरुणहिजभयऊ
गरुड़ भये वाहन भगवाना ॥ अरुण भये दिनकररथवाना।
खगपतिनाग अहिनकरबासा॥ रमणक द्वीप रहा सुखरासा॥
कद्रूविनता एक दिन रार्दू ॥ कीन्ह परस्पर बहुत लड़ार्दू।
कद्रू कह रविहय है काला॥ विनता कहं रंग स्वेत नृपाला।
भै कद्रू पुत्रन एक अघोरा ॥ ॥ इत खगपतिनें भा युध घोरा
खगपति को रह हरि वरदाना। करि हहू तुम व्यालनको खाना
नातेलगे उरग खगण खाना ॥ ते गे विधि के पास निदाना
विधिया विधिदिय मेल कराई। अहि एक देहु मासहि खगराई
काहू नहिं करि है तव नाशा ॥ देन लगी ते सहित हुलासा॥
कछु दिन बीति गये अहि भाती॥ आवा पार नाग की जाती ॥
नाग गर्व वस कहा नरेशा ॥ देवन ही मैं सर्प खगेशा॥

## दोहा

तव अति पतितेहि हारगे किये युद्ध तव नाग।
भयो पराजित युद्ध मे ॥ वसा यमुन तट भाग॥
सकत खगेश न जान तहँ शौ भरि ऋषि केशाप

बसा सुदित मन नाग तहँ यमुन भरी तेहि ताप॥
मोभरि ऋषि तट यमुन में रहे करत हरि जाप॥
व्याल्यारी वध मत्स्य तहँ तब मुनि दीन्हा श्राप॥
श्रावहु जो तुम कबहुँ इत होत प्राण को श्रन्त॥
मारि सकत नहिं जीव कोउ जहाँ भजन भगवंत॥

## चौपाई

तातें जात न तहाँ अहीशा॥ आगे सुनहु कथा जगदीशा॥
नाग बिदा करि श्री यदुराये। भय आतुर माता पहँ आये॥
देखि चरित हलधर मुसकाने। नन्दराय तब बहुत रिसाने॥
विपति समय यह हर्षित भयऊ। तब हलधर असनंदहिं कहेऊ॥
नाग नथत नहिं भा हरि त्रासा। अब डेरादूँगे माता पासा॥॥
नन्द महर सुनि भये सुखारी। कृष्ण चरण हरषीं व्रज नारी॥
कह जननी वर जन पर मोरे। गयेउ न जाहु कबहुं अब भोरे।
नन्द कीन्ह बहु दान गोसांई। प्राण वचन हित यदुकुलराई॥
तब माता से कह बन वारी॥ सत्य भयो स्वपना महँ तारी॥
गेंद खेलत रह यमुना तीरा। डारि दीन्ह मोहि कोउ तेहि नीरा।

## दोहा

सर्प निकट जब मैं गयउ कही कंस की बात॥॥
ताके भय पहुँचा दियो मोहि सहित जल जात।

## चौपाई

देखि कृष्ण श्री दामा बाला। कहा धन्य तुम दीन दयाला॥

जा विधि कह्यो ताहि विधि कीन्हा। नागनाथि प्रभु पुष्यहि लीन्हा
भा अब मम उर अस विस्वासा। करिहो अवशि कंस को नासा
तेहि ठम ना दिन सब ब्रज वासी। किय विश्राम शोक भा नाशी
नन्द महर तब ग्वालन साथा। पुष्य भेंटि दोनों नर नाथा॥
या विधि पाती दीन्ह पठाई॥ तुम्हरी कृपा कृपा यदुराई।
काली नागहिं भय दिखरायो। कमल न पुष्य यमुना तें लायो।
पानी वांचत निशि चर नाहा॥ उपजा उर महँ दारुण दाहा॥
जाना कृष्ण लिये अवतारा॥ अस बोलत भा ग्वाल निहारा
करिहों भेंट नन्द दोउ बालक। कहियो नन्दहिं सुनहु गोपालक
सुनि ते फिरे ताहि की बाता। कह दीन्ही सब ही कुशलाता
सुनत कृष्ण हलधर सुख काने। सयन किये तहँ सब हरषाने।

सोरठा

बीति गई निशि याम॥ निशि चर पठयो कंस एक
धुंधक ताको नाम॥ आवहु सो पावक दीन्हला

दोहा

चहुँ दिशि पावक देखि। उठि धवराई ब्रज नारि॥
कह हरि सुंदहु पलक सब बूझि जात अंगार॥
ते सब पल भूदी जबहि। धरि हरि रूप अनेक॥
अग्नि वदन महँ पी गये। सिटी निशा चर टेक॥
धुंधुक को पुनि मारिके। रवोलन भाष्यो नयन।
अग्नि बुझी देखी सबहि। अस्तुति करी सुवयन।

तब माया विस्तारि हरि मिटिगा तिन्ह कर ज्ञान
निज निज गृह आये सकल हर्षित होत विहान
ना विधि हरि मानन लगी। जननी पुत्रहि मान॥
जगन्नाथ जहँ श्याम हैं तहँ सब सुख कर थान।

इति श्री कृष्ण सागरे शुकदेव परीक्षि-
त सम्वादे श्री कृष्ण दास जगन्ना-
थकृते धेनुक वध वर्णनो
नाम सप्त दशो ऽ ५
अध्यायः।१७

दोहा

कह मुनि सुनहु भुवाल अब कहो कथा गोपाल
रची या विधि खेलत भये खेल सुखद सँग ग्वाल

चौपाई

ग्रीषम ऋतु जब आई राई॥ भूमी तपत भई सब ठाई॥
वृन्दावन महँ बस यदुराई॥ ग्रीषम भयो वसंत की नाई॥
गुंजहिं मधुकर सुमन ऊपर। मोर नचहिं द्रुम छाया तर॥
शीत सुगंध मन्द वह प्यारी। यमुना की पुनि लहरैं न्यारी॥
तहँ हरि हल धर सखा समेता। केलि करत बहु कृपा निकेता॥
कबहुँ घुमहि चरखी की नाई। कबहुँ भौंरिव मूंदहि हरषाई॥
मुरलि बजाइ राग बहु गावैं। सुनि ग्वालन सब बहु सुख पावैं
असुर प्रलम्ब तहाँ परआया। भेजा कंस रची तेइ माया॥॥

मिला सकल ग्वालन में जाई। तिन्ह सम रूप बनाय सुहाई
बहु ग्वालन कहं लेइ उठाई। एक गर्त महं राखा लुकाई

दोहा

अन्तर यामी कृष्ण तब। जाना कपट स्वरूप।
हलधर तें कह सैन करि यह निशिचर छल कूप

चौपाई

तब हरि हो दल सखा बनाई। जोरि जोरि संग केलि मचाई।
श्री दामा जोरा चित चोरा ॥ परलम्बा सुर हलधर जोरा॥
तहाँ परस्पर कीन्ह विचारा। जाके दलहि जाइ जो हारा॥
ताके पृष्ठ चढ़े जो जीते ॥ ॥ या विधि खेलत कछु क्षण बीते
विजय भई हल धर की जाई। तेहि दल हारि गये यदुराई।
फल बुभौल लीला रह राजा॥ हारा असुर कपट के साजा
हलधर पृष्ठ असुर के चढ़ेऊ। श्री दामा हरि पर चढ़ि गयेऊ
भयो असुर सब ही ते आगे। योजन एक नभउड़ा अभागे
निशिचर कार गोर संकर्षन॥ सोहहिं जिमि घन में शशि केतन
संकर्षन कीन्हो तन भारी ॥ महि पर गिरा भगदि के सुरारी
मुठिका एक मस्तकहि मारा॥ निसरा प्राण बमत रुहु धारा॥
ग्वाल बाल सबही हरषाये। नभ प्रसून देवन बरषाये॥

दोहा

ग्वाल बाल बहु संग के रहे जो गर्त छिपाय ॥ ॥
जाय तिनहिं हरि लायऊ धन्य धन्य दोउ भाय

इति श्रीकृष्णसागरे शुकदेवपरीक्षि
त्संवादे श्रीकृष्णदासजगन्ना
थकृते प्रलम्बासुरबधोना
म अष्टादशोऽध्या
यः १८

दोहा

भूपति जबलगि ग्वालसब दिखत रहे तेहिलास
गौवन गर्द बढ़ि गुंज वन वेनु बजी सुरवरास ॥

चौपाई

सुनत शब्द हरि पहुं आईसब एकनिशिचरपुनि कंसपठोतव
लादुदीन्ह पावक वन अति ॥ तव ग्वालन उरअतिविकलति
शरणा शरणा कहि हरि पहुंआये। प्राण बचाबहु श्री यदुराये।
कहा प्रयास तव मूंदहु नयना ॥ मूंदि दिये सब तव सुरअयना
अग्नि बुझाइ रजनिचर मारा ॥ वट भांडीर पहुंचि गे ग्वारा ॥
खेलन कहा भेजतव राजन ॥ ॥ अग्नि बुझी लखिवभयेमुदितमन
देखा आइ गये वट पासा ॥ भा अनुराग अधिकहरि आसा

सोरठा

पिये यमुन के नीर। सांझ होत हरिसंग चले
गेह निकट यदुवीर ॥ कीन्ही वंशी रवसुखद

चौपाई

ब्रज बनिता निसुनि तजितजिकामा। आईजहुं लोचन अभिरामा

रही दशा यह गोपिन केरी ।॥ दिन रहि व्रत सांझे हरि हेरी॥
भोजन करत रही हरषाई ।॥॥ जब माता पहँ गो यदुराई॥
जननी लीन्ह गोद बैठारी ।॥ बर भयो किमि कहु बनवारी।
ग्वाल बाल सब कह समुझाई। निशिचरबधि यह अग्नि बुझाई
ग्वालन पितु बहु दान कराये। कृपा कृपा बँनि सबगृह आये
हरि छवि देखि सकल व्रजनारी। मोहित रहीं न कबहुँ बिसारी।

## दोहा

कोउ बहाने चीर के। कोउ दधि बेचन हेत
आइ मिलैं श्री कृपासे श्याम तिन्हैं सुख देत॥

## चौपाई

एक दिन सब सखियन संग राधा। गई नीर लागि दरशन साधा
कंकर फेंकि गगरि हरि मारी॥ मुसकत मोह लीन्ह व्रजनारी
कहहिं सखिन यशुमतिहिं सुनाई। ऊखल पुनि बाँधव यदुराई
क्रोधित हरि गिडुरी लिय छीनी। यमुना महँ डुबाइ हँसि दीनी।
जाहु कहहु माता सन जाई ॥ देखव किन मोहि देहु बँधाई॥
सखी जाइ यशुमति हि सुनाई। कह नँद रानी सबहिं रिसाई॥
बाँधा रहा जबहिं यदुराई ॥॥ छाड़न कहति रही सब आई
बहुरि देन उरहन सब आई ॥ फिरी सुनत सब हृदय लजाई॥

## छन्द

सबफिरी हृदय लजाय तब हरि मातु से कहही बना
नटयसुन मोहि लै जाइ माखिक गोल महँ गुल चा घना।

चलत ठोकर लगत पग महँ गिरपरत जब गागरी॥
नव करत उर हनि निकट आइ के मातु सुनु व्रजनागरी

सोरठा

सुनि हरि मीठे वयन। मृषा जानि सखियन वचन॥
कह यशुमति सुखअयन। अब कहिहै तिन्ह तोर मुख

चौपाई

या विधि लीला करि बन बारी। रहे देत सुख गोप कुमारी।
पूर्व जन्म की प्रीति से आई॥ राधा अति मोहित यदुराई
कहन लगी सखियन ते बानी। लोक लाज सबतजिय सयानी
करिहौं पति हरि असमति मोरी। ललिता कह सुनु राधा गोरी
मेरे हृदय बसो चित चोरा॥ जो पति होय तो हित नहिं थोरा

दोहा

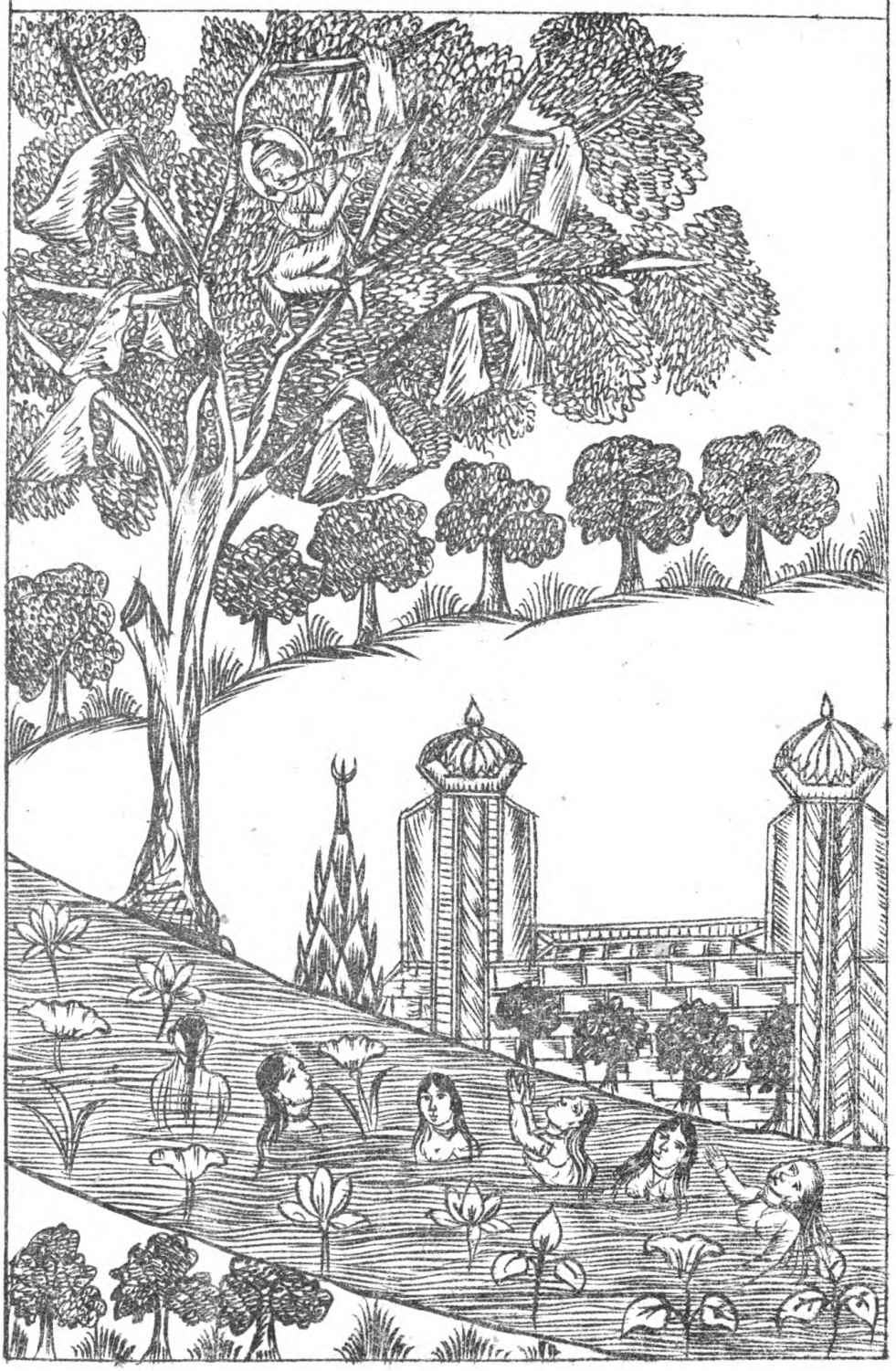
राजन या विधि काटि दिन हरि के विरह बिहाल
सांझ समय अब लोकि छवि बुझ वतन्न विशाल

इति श्री कृष्ण सागरे शुकदेव परीक्षि-
त सम्वादे श्री कृष्ण दास जगन्ना-
थ कृते दावाग्नि मोचनो ना-
म ऊन विंशोऽध्या-
यः १९॥

दोहा

जब कृष्ण गोपन केवल। भये दुखी सब जीव॥

चीरहरनलीला ॥



तब नृप पावस सेनलै। धावा अति बल सींव।

चौपाई

घन गरजत सोइ मारू बाजा॥ कड़रवा गान मोर कल राजा॥
बरषत बारि सोइ नेहि बाना॥ दामिनि दमकै जानु कृपाना॥
दल बादल कर सेना माहीं॥ बक उड़ाहि सो ध्वज फहराहीं
नृप ग्रीषम अस सेना देखी। भागि गयो भय हृदय विशेषी
अष्ट मास शोषा रवि वारी॥ सो बरषत भइ मही सुखारी॥
जड़ चैतन्य जीव जग जेते॥ नृपति सुखारि भयो सब तेते।
फूले पुष्प हरित भइ धरनी। वृन्दावन छवि कोसक वरनी।
तहँ हरि हलधर सखा समेता॥ झूलतहिं डोलहिं कृपा निकेता

दोहा

राग मलारादिक चहुत। करत सखी सब गान
ऋतु पावस या विधि। कही सरद पहूँची आन

चौपाई

कह हरि सुनु संकर्षण भाई। या ऋतु है सब ही सुख दाई॥
याही दिन नृप करहि चढ़ाई। सन्मुख नीरथ करहिं सुहाई॥
वृन्दावन थल अति भल भाई। मेरी भक्ति सबहि उर छाई॥
जहँ हम लीन्हों कृष्ण औतारा। अस सुनि हलधर कह सुखारा
देहु मोहि प्रभु अस वर दाना॥ जहँ भवतरहु हमहुं संग जाना
सुनि बोल हरि हर्षित भारी॥ तुम सँग लेब सदा सुखारी॥
तुम भ्राता मम प्राण समाना। तुम समान मोहि प्रिय नहिं आना

सुनि हरि वचन सभी हर्षाये। ग्वाल बाल सब कहहिं सुनाये

दोहा

मुरली धुनि प्रभु सुनन चहुँ करहु कृपा करि गान
रागिनि छत्तिस राग षट तब गाये भगवान॥

चौपाई

सुनि मोहित भइ सब व्रजबाला। खग मृग सुनन लगे संग ग्वाला
पसुन जल भै थीर नृपाला। हरषि प्रसून सुरन झरि डाला।
सब सखियन मिलि कहहि विचारी। मुरली भइ अब सौतिहमारी
रटत श्याम सज्जन उर लाये। धन्य भाग सो बाँस हुँ पाये॥
दूसर सखी कहत सुनु प्यारी॥ सब ऋतु महँ सो सहि दुख भारी
ठाढ़ रही नाते हरि प्यारी॥ याते कौन अधिक तप भारी।
बोलत रही सखिन अस जबहीं। आइ गये मन मोहन तबहीं॥

दोहा

देखि श्याम छवि मुदित भइ व्रज युवती समुदाय
जगन्नाथ सोइ मन हरन। मम उर बसहु सदाय

इति श्री कृष्ण सागरे शुकदेव परीक्षि-
त सम्वादे श्री कृष्ण दास जगन्ना-
थ कृते पावस शरद वर्णनो ना-
मविंशो ऽ
ध्याय:२९
दोहा॥

राजन सुरली शब्द सुनि। हरषि कहहिं ब्रजनारि
धन्य भाग वन के सदा। दरश करहिं बलिहारि

चौपाई

कह एक धन्य भाग तिन्ह केरी। मुदित रहहिं सन्तत प्रभु हेरी।
धन्य धेनु जोहि कृष्ण चरावत॥ हरि लखि खग नग जन्म फल पावत
धन्य भाग भिल्लिनि ब्रज वासी॥ तृण मोचन के समय हुलासी
चन्दन गिरी छुटो हरि माला॥ चढ़ वहिं आपन माथ भुवाला
धन्य तरुन पुनि धनि यमुनाजल। धरत चरन हरि धन्य सोइ थल
गिरि गोवर्धन भाग सराहत॥ जापर चढ़ि हरि गाय चरावत
धन्य कदम्ब अस कहि ब्रजनारी। प्रीति रखत जानी प्रीतारी॥
जब हरि करु माथा विस्तारी। जाने सखि पति सुत महतारी।

दोहा

हरि पद यादिधि प्रेम रह राजन सब ब्रजनारि।
तिन्ह की महिमा कहन को उ सो कवि धीर विचारि

इति श्री कृष्ण सागरे शुकदेव परीक्षित सम्वादे श्री कृष्ण रासजगा-
य कृते गोपी प्रेम वर्णनो
नाम एक विंशोः
ध्यायः २१

दोहा

राजन दिन एक सखिन सब। कीन्हो मंत्र विचार

अगहन यमुन न्हातजो पावै मनोरथसार

चौपाई

सोरह सहस सखिन संग राधा। मज्जन करन लगीं अति साधा
चारि धाम की नारि न रहीं॥ अवध एक दुज दण्डक नहीं।
तीजे वेद ऋचा भद्र नारी॥ चौथे गऊ लोक सुख भारी॥
करि असनान दिवस व्रत धरहीं। सांझ दरशि हरि भोजन करहीं
मृतिका की रवि शिवा सुहाई। पूजें निज निज अर्घ सुनाई॥
पूरण करहु मनोरथ माता॥ जेहि होवे पति त्रिभुवन त्राता
भात दधी को भोजन करहीं। प्रीति अचल यदुपति पद धरहीं
मास दिवस बीता भृपजब हीं। भै प्रसन्न मुरली धर तब हीं॥
एक दिवस मज्जन के औसर। आइ गये श्री पति करुणाकर

छन्द

भै आइ पाछे ठाढ़ धरिके रूप जेतनीग्वालिनी॥
लग इए मरदन देखि सखि गण जानिहैं एकहरिनी
भेद औरन जान औरन जानि एक यदु कुलमनी
कहहीं हृदय भा अर्घ पूरण होहिं पति गोकुल धनी

सोरठा

पुनि आये बन वारि। जहँ राखी ते सारि सब॥
फारि सारि सब नारि। भागि गये यशुमति सुअन
कहा सखिन समुझाय॥ जादव यशोमति के निकट
कह नँद रानि सिखाय॥ लाजन आवत तनिक मन

## चौपाई

लघु बालक पर पाप के नयना॥ देखहु तुम युवती रस अयना॥
सुनत भवन सब फिरीं लजाई॥ दिवस एक पुनि यदु कुल राई॥
चीर उतारि यमुन दिय पैठे ॥॥ हरि तब लेइ कदम चढ़ि बैठे।
मज्जन करि पट खोजन लागी। देखत बन्शी हरि अनुरागी॥
मांगन लगीं देहु यदुराई ॥ कहा प्रयास तबहीं मुसुकाई॥
टुक टुक जब लौं निसरिन ऐहौ। तब लौं आपन चीर न पैहौ॥
कह राधा सुनिये बन वारी॥ नग्न न देखिय पर की नारी॥
तदपि न चीर दीन्ह बन वारी॥ यक यक तब निसरीं ब्रज नारी
जब तजि कपट आइ यक एका। चीर देइ प्रभु कहत विवेका॥
जल महँ रहत बरुण को बासा। नग्न नहात सुकृत है नाशा॥
नातें मैं सुधि दियउँ कराई ॥ मज्जन फल पैहहु समुदाई॥
प्रीति देखि हम भये सुखारी। युक्त कुवार पूर्णिमा नारी॥
रास करिय सब अर्थ पुराऊँ॥ जातु सकल सब निज निज गऊँ
सुनि सब सखिन गर्द्द यह शोरा। लागि रही मूरति चित चोरा॥

## दोहा

तेसब निज निज गृह गईं बन्शी वट हरि आइ
लेइ सखा अरु गाय संग गये गेह जहँ माइ॥
कह नृप हौ प्रभु जगतपति कहहु किये अस काम
नग्न विलोके सखिन कहँ बोले मुनि सुखधाम॥

## सोरठा

नग्न होइ जो नारि। मज्जन जल तोहि पाप बड़
पाप छुटै नहिं भारि॥ जबन देखावे नग्न केहू।

इति श्री कृष्ण सागरे शुकदेव परीक्षित
सम्वादे श्री कृष्ण दास जग्ना-
यकृते चीर हरण वर्णनो
नाम द्वाविंशो ऽ
ध्यायः ७२

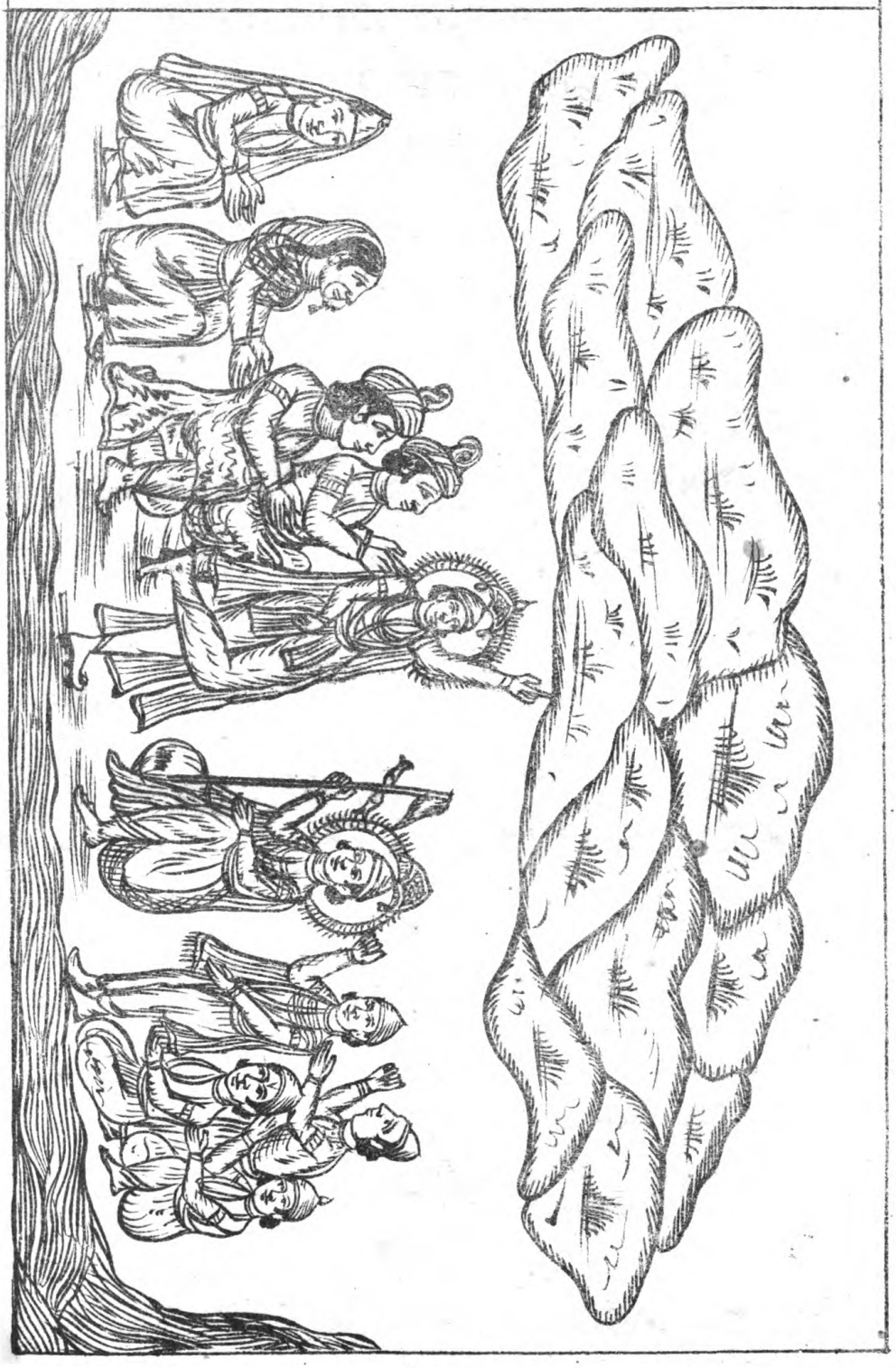
## दोहा

भूपति एक दिन वनगये। कृष्ण ग्वाल बल राम
ग्वालन भै अति क्षुधित तहँ तब बोले घन श्याम

## चौपाई

दून मथुरा के चौबे रहहीं ॥ ॥ बन यहिं पाक यज्ञते करहीं।
जाउ कहेव हरिं मागाहिं खाना। गे ग्वालन सब कीन्ह बखाना
हरि महिमा नहिं जाननिदाना। कहन लगे विप्रन रिसि याना
हम करैं पाक सुरन मख हेतू॥ ये मांगत भोजन गो केतू॥
अस सुनि सब लज्जित फिरि आये। समाचार सब हरिहिं सुनाये
पुनि हरि कहा बहुरि सब जाहू। चौबा दून ते मांगि के लाहू॥
मागन गे तिन्ह ग्वालन अबहीं। अति आनन्दित भई सुनि सबहीं
जाहि भजो सोइ मांगत खाना। अस कहि लेइ चलीं पकवाना॥
चौबे एक रोकि निज नारी ॥ ॥ दीन्हे सि जान न जहँ बनवारी
राखी बन्द एक गृह माहीं॥ ताकर चित्त रहा हरि पाहीं॥

गोवर्द्धन लीला॥



दोहा

निसरि प्राणगा हरि निकट पाछे पहुँचे नारि
आदू के नाये हरि हिं सिर तब बोले बनवारि

चौपाई

विप्र होय जनि नाबहु माथा। दोष होत बड़ कह यदुनाथा।
हैं अहीर हम नन्द के छोटा। तुम द्विज हौ नुमतें बहु छोटा।
ते कह हमन संग एक नारी। आवत कैद पुरुष करि हारी॥
तुम हूं ते प्रथम हिं यह आई। जस जेहि भक्ति सोइ तस पाई॥
दिखा दीन्ह सोइ तिय बनवारी। देखि सभनि अस्तुति कियभारी।
कहा कृष्ण लावहु नहिं बेरी॥ जाहु होत सबमें अति देरी॥
जाउं न अब प्रभु पति के त्रासा। दीहो छाड़ि रवन नहिं आसा॥
कह हरि नहिं करिहैं कछु काहू। गई तब गरह सुमिरत जगनाहू।
विप्रन जब निज त्रियन निहारी। ज्ञान भयो तिन्ह कहं बड़ भारी॥
हम न गर्ब वश हरि हि न चीन्हा। नारि न दरशि जन्म फल लीन्हा

दोहा

सो द्विज गरह देखन गयो मरी नारि कहँ देखि।
अति विलाप लागो करन नारि न कहत नहिं पेखि
।तब तिय हे हरि के निकट सुनत गयो जहं श्याम
भयो चतुर्भुज नारि संग गयो कृष्ण के धाम॥

सोरठा

तब हरि सखा समेत। भोजन करि गरह को गये

देखिके यदु कुल केत। भई सखिन हर्षित हिये
इति श्री कृष्ण सागरे शुकदेव परीक्षि-
त सम्वादे श्री कृष्ण दास जग-
न्नाथ कृते द्विज पत्नी या-
चनो नाम त्रयो -
विंशो ध्या-
यः २३।

## दोहा

सुन नृप कृपा चतुर्दशी कार्तिक मास हुलासि
पूजत रहे सप्रेम मिलि इन्द्रहिं सब व्रज वासि॥

## चौपाई

सो दिन बाद गयो नृप जब हीं। वचन मिठाई लगी यह सबहीं
यशुमति पकवाई पकवाना। रटत सेत डरते भगवाना॥ ॥
जानेउ नहिं यह देवन देवा॥ हरि अब लुकावत मेवा।
इत हरि श्रम उर कीन्ह विचारी। पूजिय गिरि गोवर्द्धन भारी॥
पूछन लगे नन्द से जाई॥ ॥ कौन देव की होत पुजाई॥
सुरपति की पूजा यह अहई॥ वरषत वारि सभी सुख लहई॥
कह हरि देवन को पति जानी॥ पूजिय इन्द्रहिं नहिं सुख मानी
चाहिय करन नाहि की सेवा॥ जोहैं सब देवन के देवा॥ ॥

## छन्द

सब देव सुर जोहे यत्न करि आ इन्द्र देवन को पती

नेहि त्याग पूजन इन्द्र पूजा नीक नहिं सुनमम मती
जासे होवत प्रति पाल जेहि वन घास खाई गाइयां॥
दधि दुग्ध बेचि के जीविका होवत सकल सुख सपूरयो
अब पूजिये गिरिवर कहत हरि नन्द सुनि हर्षित भये
कहि सकल ब्रजवासी महरतव संगलय गिरि पहँ गये
फल फूल मेवा मधुर षटरस खीर बहु विधि ले चले॥
बारा पकौरी दधिहि बोरी औ मिठाई सब भले॥

सोरठा

पहिरि वस्त्र भल वाम। नन्द सहित यदुनाथ हरि
गये गोवर्द्धन धाम। पूजन सब मिलि मुदित मन
धरि मेवा पकवान॥ कहा कृष्ण गिरि ध्यान कर
धरा सकल जब ध्यान धर्यो चतुर्भुज रूप हरि

चौपाई

खोलन कहा कृष्ण तब नैना। दरशि गोवर्धन भे सुख अयना
नन्द यशोदा सहित गुवाला॥ कहहि सकल अति मुदित विशाला
अस प्रत्यक्ष सुर नजि के कैसे। पुजत रहे सब शक्र हमे से॥
खान लगे गिरि सब पकवाना। कहन लगे मागहु वर दाना।
देत प्रसाद आप गिरि जबही। होहि सकल आनंदित तबही
पुनि गिरि भय नहँ अंतर ध्याना। नन्द राय दीन्हो बहु दाना॥
निशि नहँ गहि जब भयो विहाना। निज निज गृह गोपन प्रस्थाना
ललिता कहु सुन राधा रानी। या सब जुक्ति नन्द सुत ठानी

धरि लीन्ह गोवर्द्धन रूपा ॥ खाये सब पकवान अनूपा ॥

दोहा

राजन अन्न कूट की ॥ पूजा भई प्रकाश ॥ ॥

तादिन ते जब कीन्ह हरि यह लीला सुखरास

इति श्री कृष्ण सागरे शुकदेव परीक्षित

सम्वादे श्रीकृष्ण दास जगन्ना-

थकृते गिरिगोवर्द्धन पू-

जनोनाम चतुर्विंशो

ऽध्यायः २४

दोहा

तादिन भई पूजा नहीं। तब कोपेउ सुर राउ ॥

मेघ राज को बोलिके। कहा व्रजहिं भरि लाउ

चौपाई

मेघ राज जब आयसु पावा ॥ मेघन सहित जादु भरि लावा ॥

भये आतुर सबही व्रज वासी। सरन गये यदुपति अविनाशी।

कह हरि जाहु गोवर्द्धन पाही ॥ सोइ सभन कर प्राण बचाही ॥

गये सकल गोवर्द्धन पासू ॥ नख पर टेक लीन्ह सुख रासू।

सप्त दिवस मेघवा भरि लाये। कृष्ण कृपा कोउ दुख नहिं पाये

गिरि वर तर सब रहे सुखारी ॥ चक्र सुदरशन सो रखवारी ॥

कृष्ण चन्द्र शशि बदन निहारी। क्षुधा रहित भई सब व्रज नारी

घटा नीर जब सब सुर राई ॥ तब जानी महिमा बल भाई ॥

निसरी धूप नवहिं यदुराई॥ दीन्हो रविगिरिहि हरषाई॥
माता सुन कर हाथ दबावा॥ टेकत गिरि प्रभु बहु दुख पावा
कहहिं सखिन हरि तेसुसुकाये। हमन गेह भारवन बहु खाये॥
ताके बल टेक्यो गिरि भारी॥ सुसुके सुनत गोवर्द्धन धारी॥
हरि आयसु ते पुनि ब्रज वासी। पूजन करि गिरिवर सुखरासी

दोहा

निज निज गोधन लेइ के चले कृष्ण के साथ
आये गृह में आपने गुण गावत ब्रज नाथ॥

इति श्री कृष्ण सागरे शुक देव परीक्षि-
त सम्वादे श्री कृष्ण दास जग-
न्नाथ कृते ब्रज रक्षा वर्णो
नो नाम पंचविंशो
ऽध्यायः २५॥

दोहा

ब्रज वासी जबहीं भवन कहहिं परस्पर बात॥
अष्ट वरष की उमर में टेका गिरि बल भ्रात॥

चौपाई

बालहु में बहु लीला ठनी॥ पुतना तमीचरी को हनी॥॥
सकटा बका अघा को मारेव॥ वत्सादिक निश्चर संघारेव॥
यह नहिं तनय नन्द के आही। देवन कोउ गये यमुना ही॥
तेहि ते जन्म लीन्ह बल भारी। देव नन्द जानि हुते निसारी॥

अस जिय ठानि नन्द पहँ आये। भाषे तब नँद राय सुनाये॥॥
सुनी रही नहिं गर्ग की बानी। कृपा जन्म अवतार बखानी
जन्म लीन्ह बसुदेव के गेहा। वासुदेव नाम धरि देहा॥
पूर्व जन्म के तप ते भाई॥ पायो हम त्रिभुवन को राई॥

दोहा

सब के उर विश्वास भो लीन्हो हरि अवतार
अपने अपने घर गये सुमिरत नन्द कुमार॥

इति श्री कृष्ण सागरे शुकदेव परीक्षि-
त संवादे श्री कृष्ण दासजगन्ना-
थकृते व्रज वासी सन्देह
वर्णनो नाम षड्विंशो
ऽध्यायः २६

दोहा

देवन सबजब द्वन्द्र को भाषा भेद कन्हाइ॥
भक्ति विवश व्रज अवतरे भाषो चिन सुर राइ।

चौपाई

क्षमा करावन निज अपराधू॥ चढ़ि ऐरावत ले सुर साधू॥
काम धेनु कहँ करिके आगे। आवा कृष्ण निकट अनुरागे
दूरेहिं नें यदुपति कहँ देखी। लागा अस्तुति करन विशेषी॥
त्राहि त्राहि गोवर्द्धन धारी॥॥ मैं जाना तुम हौ अवतारी॥
जय यदु कुल मणि व्रज दुरवरंडित मोह कंसल भवटा रनपंडित

माया वश्य अस कीन्ह ढिठाई। सरण आय अब यदुकुल राई
काम धेनु बहु अस्तुति कीन्हा। तव अपराध क्षमा करि दीन्हा
कह हरि सुन देवन के राऊ ॥ तुम हिं देखि अभिमान स्वभाऊ
गिरि गोवर्द्धन को पुजवाये ॥॥ दीन्ह ते हारे गर्व नशाये ॥

दोहा

काम धेनु निज दुग्धते नह वार्द्ध यदुराय ॥
गोविन्द नाम पुकारि हरि। सहस्रनयन हरषाय
चरणोदक लेद श्याम के विदा होद गा धाम॥
देव सुमन वरषा किये कहि धनि धनि घनश्याम

सोरठा

सांझ होत सुत नन्द। आये माता के निकट
गावहिं जो आनन्द। पावहिं चारि पदार्थ नर

इति श्री कृष्ण सागरे शुकदेव परीक्षित
सम्वादे श्री कृष्ण दास जगन्ना-
थ कृते इन्द्र स्तुति वर्णनो
नाम सप्त विंशो ऽ

अध्याय २७

दोहा

कार्त्तिक शुक्ल एका दशी व्रत कीन्हो श्रीनन्द
यमुना तट मज्जन गये। हृदय परम आनन्द।

चौपाई

निशि एक पहर रही नृपतबहीं। वरुण दूत धरि लैगो जबहीं॥
जाना वरुण पिता हरि केरे॥ उपज्यो उर आनन्द घनेरे॥
जब अद्द हैं प्रभु इनहिं छुड़ाना। पैहौं दरशन श्री भगवाना॥
सादर आसन दै बैठारी॥ दूत भद्द दुरवित सभा ब्रजनारी
धीरज दीन्ह श्याम तिन्ह आई। लाउव मैं निजपितहिं छुड़ाई

दोहा

असकहि हरि लावन गये पैठे जल विच जाय
सिंहासन बैठारि के। वरुण कहन शिरनाय

चौपाई

जन्म सुफल भा अब प्रभु मोरा। दरश भयो श्री पति चित चोरा
धन्य धन्य गोकुल ब्रज बासी। महिमा अकथ नन्द यशोदा सी
अस कहि बहु विधि पूजन कीन्हा। तब पितु सहित विदा करि दीन्हा
भये मुदित मन सब ब्रज वासी॥ को कह हरष कथा यशोदा सी
ब्रज बासी कह हृदय सुखारी। दरश वहु बैकुण्ठ मुरारी॥
निशि महँ सयन किये जब सबही। कृष्ण कृपा देखा अस तबही
धरणी कनक कनक सब बासा। बापि तड़ाग सोह चहुँ पासा॥
रतन जड़ित सिंहासन माहीं॥ रमा सहित बैठे हरि ताहीं॥

दोहा

चहुँ दिशि देखा पारषत कोटि तेंतीस करोर।
देवन ठाढ़े हैं तहाँ॥ अस्तुति कीहै शोर॥

चौपाई

बोलन चाह्यो हरि ते जाई ॥॥ पाये जान न तहँ जब राई॥
कहन लगे मोहि याते व्रज भला। रहौं संग जहँ मोहन बोल
कीन्हा ध्यान जबहि यदुराई॥ आय गये सब निजनिज ठाई
यही उपासन रीति सदाई ॥ रहे उपासक श्री यदुराई ॥
बिना उपासन नर समअहही॥ नारि पुरुष बिनगुन्यन कहही
एक दिवस पुनि कुँवर कन्हाई। श्रीदामा सन कहा सुनाई॥
वृन्दाबनते मथुरा माहीं ॥ व्रज नारिन दधि बेचन जाहीं
दान लेन दधि चाहिय भाई। पाँच सहस्र सखा समुदाई।
संग मोरही गे यदुराई ॥ ॥ उतराधादिक गोपिन आई।
कह हरि देहु हमारो दाना। नाहीं तो यै दहु नहिं जाना॥
सुनत वचन असगिरि वरधारी। कहत सखी सुन कुंजविहारी

छन्द

सखि कहत दधिकर चोरि जब उर क्षुधा नहिं तुम्हरी टरी
अवदान मागत रीति ठानत जो न कुल काहू करी
नृप कंसते जबकहव ऐसी रहे देकानननन्द के॥
सुनि सखिन बानी कहत जिमि उत्तर सुनहु व्रजचन्द के
मोहि जानि बालक लाद चोरी कहत रहनंदरानिसे
लेउ सकल कसर चुकाइ सबदिन लेइ दधि निजपाणिसे
पुनि कंस जाके गर्व सब सखि रहहु मन हुलसाइके
नहिं मारिश्री उग्रसेन कहँ करि हौं नृपति हरषाइके
तुम दान कीजो रीति करि हो आगि हैं व्रज देश ते

कह कृष्ण नहिं कोउ लोक अस जो रहित मम परवेशते
तव हरि मरि वयन दधि खिलाई मदु कि भरि रहि हरि कृपा
जब राधिका के स्वाद दधि प्रभु कहन लगे हरषित गिरा
यह दधि सभन ते अधिक मीठो चाहि हरि खाने लगे
सब सखा मिलि दधि खालिये तव श्याम गे वन के मगे
दूत सरिवन गइ गह राधिका उर प्रीति अति लागी रही
तव आइ वंशी बट निकट हरि अर्थ पूरण किय सही

## सोरठा

राधा पुनि दिन एक। निज छवि दर्पण देखिके
हरि माया की टेक। जानेउ है को उनारि यह

## चौपाई

माया के वपु कह वौरानी। या सम सुन्दरि नहिं कोउ आनी।
हरि कहँ मोहति यह ब्रजनारी। सुनत झरोखे ते वन वारी॥
मूंदे नयन राधिकहि आई॥ दरपण उलटि दीन्ह हरषाई
दीन्हों नयन बहुरि हरि छाड़ी। जानि प्रीत प्रीतम उर बाढ़ी।
ललिता अरु चन्द्रावलि आई। प्रीति देखि राधा हरषाई॥

## दोहा

लीला अमित अपार प्रभु को जग वरणे पार
निरगुण ते सरगुण भये भक्ति विवश अवतार

इति श्री कृष्ण सागरे शुकदेव परीक्षि-
त सम्वादे श्री कृष्ण दास जगन्ना-

थकने वरुण लोक गमनो वैकुण्ठ
चरित्र दान लीला वर्णनो
नाम अष्टविंशो
ऽध्यायः २८

दोहा

राजन यह अध्याय में। कहौं कथा सुखदाय
जा विधि रास रचे हरी। संग सखिन समुदाय॥

चौपाई

चीर हरन के समय बिहारी। कहा रहा सब ही ब्रज नारी॥
रास शरद पूनो में करि हौं॥ पूर्ण मनो रथ करि दुखटारि हौं
सोई दिन पहुँच्यो नृप आई। तीन घड़ी निशि बीती जाई॥
आये विपिन माह यदुराई॥ परम सुहावन हरित बनाई।
उदित मयंक यमुन लहराई। बैठे तरु तर मुरलि बजाई॥
सुनत शब्द ब्रज बालन धाई। तन मन की सब सुधि बिसराई
भोजन करत रही जो नारी॥ जूँठे हाथ तहाँ पगु धारी॥
रही जो शयन करत पति साथा। तुरत छाड़ि गइ जहँ यदुनाथ

दोहा

कोऊ रहि कज्जल करत करि एक नैन नहिमाहिं
कर कंगन पग में पहिरि कोउ गई हरि पाहिं

चौपाई

चादरि पहरि ओढ़ि कोउसारी। या विधि गई निकट वनवारी

पुरुष एक कोऊ व्रज नारी ॥ दियो न जान जहाँ गिर धारी।
प्रेमातुर गो निसरि पराना ॥ पहुँची जहँ रहे कृपा निधाना।
मुक्ति नाहि तुरतहिं हरि दीन्हा। मुनि परिक्षित प्रश्न अस कीन्हा
कामातुर तेद मरी गुसाईं ॥ मुक्ति दीन्ह किमि कुँअर कन्हाई
कह मुनि जो नर कपटहिं त्यागी। वैर भाव वा प्रेम विरागी।
काहू विधि भजहीं भगवाना। पावहिं मुक्ति अवश्य निदाना
पुत्रा वैर भाव करि जाना ॥ ता कहँ मुक्ति दई भगवाना
यशुदा पुत्र पुरुष व्रजनारी। मुनिन ब्रह्म गति एक विचारी

## दोहा

राजन सरिवयन मध्य में सोहत किमि व्रजचंद
जिमि उडुगण के बीच मे सोह मयंक अनन्द
गोपिन प्रति पूछत भये या विधि दीन दयाल।
तुम सब व्याकुल आय किमि कहु मोते निजहाल

## चौपाई

सुनु सरिव वेद कहत अस बानी। भजे नारि निज पति सोइ ज्ञानी।
काना कूबर लूल गंवारा ॥॥ कोढ़ी अवगुणि निरधन भारा
ईश्वर तुल्य जान सो ताही ॥ होत नाहि दोउ लोक निबाही
निज पति छाड़ि भजे जो आना। निंदे जग परलोक न थाना॥
भोग हेतु जो आयहु ठानी॥ पति ते भोग करन नहि हानी॥
सुनि शोचातुर भई व्रजनारी। कहन लगीं तब एक विचारी।
सुन चित चोर हमन तव दासी। पूरण करहु आस अविनाशी

वन्शी देरि के लियो बुलाई। सब काहे ठानी निठुराई॥
तुम हीं हौ पति मेरे साईं॥ देखि प्रेम तिन्ह के यदुराई
एस स्थान बनावन हेतू॥ माया ते भाषा व्रज केतू॥
रची सो जादू चबूतर एका। लाल मणिन तहँ खचित अनेका
एस वस्त्र गोपी गण केरे॥ वाजन रास लगे नहँ टेरे॥
करि सिंगार पहिरि सब सारी। गईं निकट सब जहँ बन वारी।
निज स्वरूप ते राधा साथा। बीचहिं ठाढ़ भये यदुनाथा।
चहुँ दिशि घेरि सखिन बैठारा। दो दो मध्य रूप एक धारा॥
तिन्ह के विच हरि सोहहिं कैसे। कनक हार नीला मणि जैसे॥

दोहा

कबहूँ मुख चुंवन हरी। कबहूँ करत हैं गान।
आगे आगे सखि चलीं पाछे ते भगवान॥
हरषित भई सब युवतिन सुर देखत पछताय।
गोपिन कहँ अभिमान भा वश कीन्हो यदुराय
अन्तरयामी कृपा तब जानि सबहिं अभिमान
भानु सुता संग लेइ के हो गये अन्तर ध्यान॥

इति श्री कृष्ण सागरे शुकदेवपरीक्षित
सम्वादे श्री कृष्ण दास जगन्नाथ
कृते रास क्रीड़ा वर्णे नाना-
मङ्गलनिर्णो ८।

ध्यायः २९

दोहा

भै हरि अन्तर्ध्यान जब। गोपिन भई दुखारी
गई कुंज मे खोजने॥ मिले नहीं बन वारि॥

चौपाई

कोउ कह सखी भजन नंदलाला। देखी है नव कहसो चाल
अरी बावरी देखत्यूं जब हीं॥ जान कतहूं की देख्यूं नव
या विधि भई विकल सबबाला। तरुनी पूछहिं हरि को ह
हे तुलसी वर गूलरि नीवा॥ जान देख्यो हरि धौं सुख
हे दाडिम अशोक के रूखा। कहि हरि गमन मिटावहु
हे केतकि अरु जूही धरनी॥ तुम जानहु कछु हरि की
कहा न कोउ भेउ यदु राई॥ भई विकल सखियन स
हरि पदरेख सखी एक देखी। भई आनंदित हृदय वि

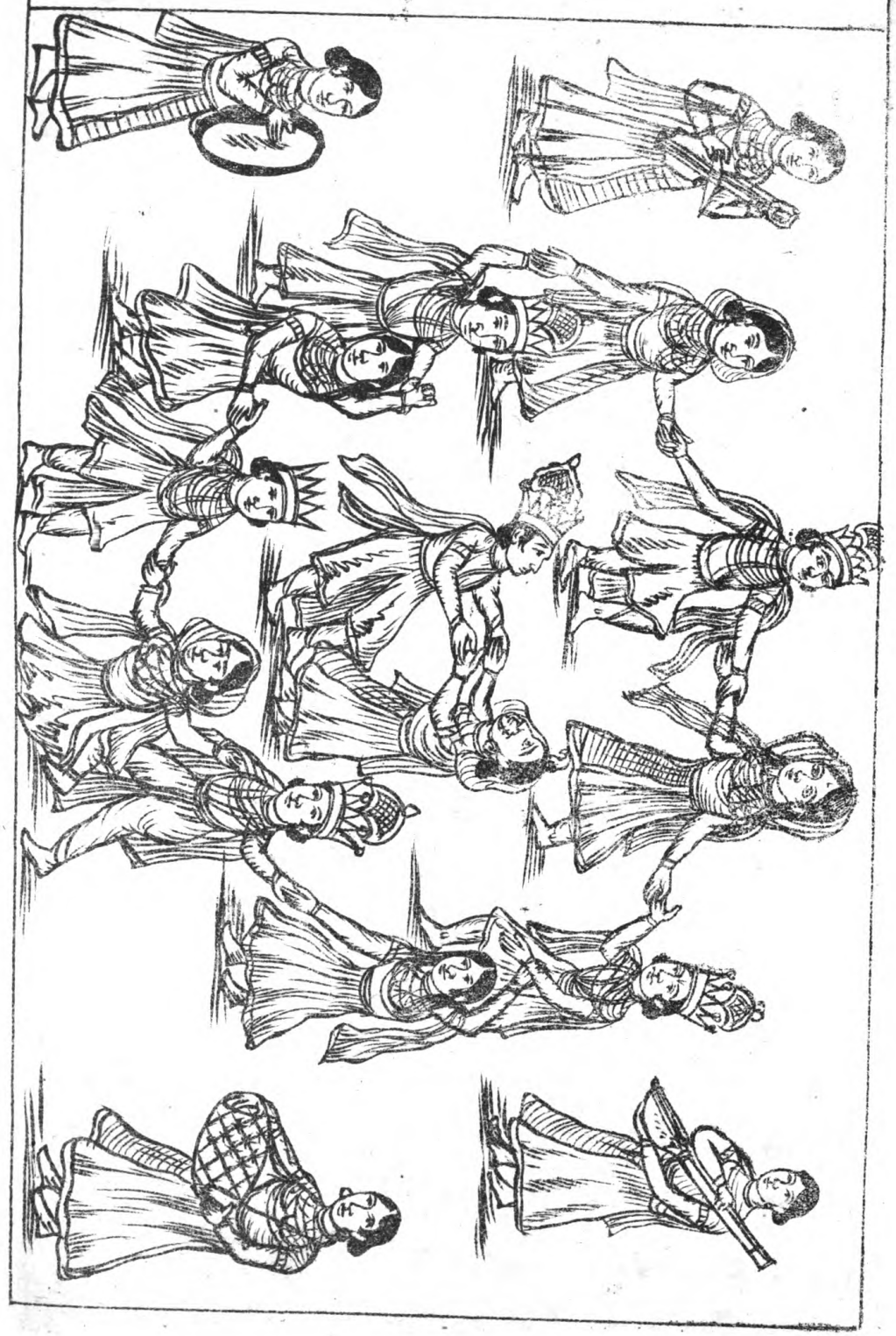
दोहा

आगे देखा नारि पद। कहन लगी सब कोय
सब तें राधा अधिकप्रिय। गई श्याम संग होइ

चौपाई

पुनि आगे दर्पण एक देखी। सखति डाह भई हृदय विशे
होइ है गहन राधिका चूटी॥ दर्पण गयो याहि ते छूटी
पुनि आगे राधा मिलि गई॥ ताहु दुखित ते देखत भई
तब उर भयो कछुक संतोषा। कह राधा मोहुप विधि रोष
राधहू कहं भा अभिमाना॥ तजा याहि ते कृपा निधान

रहसमण्डललीला॥



हरि नहिं मिले रुदन सब ठानी। लगी कहन एक सखी सयानी
कछु नहिं सरै रुदन ने कामा। उर मे भजहु श्याम सुखधामा।
सब मिलि फिरहिं चतुर पासहिं। सुमिरन करन लगीं अविनाशिहि

दोहा

जबजब गाढ़ परे प्रभु तबतब कीन्ह सहाय
याही जो इच्छा रही॥ काहे गिरि ने बचाय॥

इति श्री कृष्ण सागरे शुकदेवपरीक्षि-
त संवादे श्री कृष्ण दास जगन्ना-
थ कृते गोपी बिरह वर्णानो
नाम त्रिंशो ऽ ।
ध्यायः ३०

दोहा

मन्द मन्द मुसुकान जब। आवत उर में श्याम।
तब तब दुख पाऊं महा सपदि मिलहु सुखधाम

चौपाई

भृकुटी मटक लटक हरि बाना। आवत हृदय होत दुख दाना
धेनु चराइ सांझ फिरि आई॥ देत रह्यो दरशन सुख दाई॥
जो पद रज ब्रह्मा नहिं पावैं॥ जो रज सुरमुनि ध्यान लगावैं
जो पगरमा मलत निशि वासर। सोइ पद दरश देहु करुणाकर
गोपी नाथ है तुम्हारो नामा। वृथा नाम है सो सुख धामा॥
बिरहा कुल जो निमरत प्राना। दरश देइ का होत निदाना॥

निह छल होय जो तवपदनेहू। करि किरपा प्रभु दरशन देहू।

दोहा

तदपि न दरशन दीन्ह प्रभु मुर्छि परीं महिमाहिं
तजिहौं जीवन प्राणपति दरशजोंपेहौंनाहिं

इति श्री कृष्णा सागरे शुकदेव परीक्षि-
त सम्वादे श्री कृष्णा दासजगन्ना-
थ कृते गोपी विरह कथनो
नाम एकत्रिंशो ऽ

ध्यायः ३१

दोहा

देखि प्रीति ब्रजनारि। गण प्रगट भयेभगवान
जिमि माया ते नट सकल मिलहैं अन्तर्ध्यान॥

चौपाई

सुधा रूप देखत ब्रज नारी। भईं विगत श्रम परम सुखारी।
फूली उर आनन्दित कैसे॥ दिन कर उदय जलज नृप जैसे
कहि न सकत कोउ तिन्ह आनन्दा। भईं दरशि जिमि परमानन्दा।
चुम्बत वदन कोउ लपटत छाती। कहन लगी राधा यहि भाँती।
हम न तजी प्रभु तव हित लाजा। अस निठुराई कान्ह के काजा।
कह हरि उचित नहिं अस बाता। निशि यह तजि आईं बिकलाता।
बहु विधि कहि तव वचन रसाला। दीन्हों सुख गोपिन गोपाला।
सरि एक कहत सुनहु चित चोरा। मनते भागि सकहु नहिं मोरा।

दोहा

राधा गल लपटा गई। सखी एक सुख मान।
निज ओढ़नी बिछाइके बैठारेउ भगवान॥
भिन्न भिन्न हरि सभनते। किय गंधर्व बिहार।
सब के मन पूरण किये। व्रज पति नन्द कुमार

चौपाई

सखी एक कह तुम बनवारी। कपट करिय दोन्हों दुख भारी
एक कह नरजग चारप्रकारा। कहो हरि सबते कौन उदारा।
एक कहैं भल भले किये के॥ अपर रहे एक प्रेम हिये के॥
तीजे मन्द करत कर नेका॥ हितु हू करत कर मन्द है एका
सबते भल जो करत भलाई। दूसर रहे जो प्रीति एकाई।
जो हित करत कहैं तेहि हाना। ताते अधम न कोउ जग जाना
तीनहुने भल सोइ जग माहीं। हित जग करत मन्द अरु नाहीं।

दोहा

सखी एक कह सैन करि चौथे नर हैं श्याम।
कह हरि मैं निर गुण सदा नहिं चाहों तेकाम
कहो जो तुम काहे भज्यो सखियन को लिटकाय
प्रीति परीक्षा करत हहूं सुन सखियन समुदाय
देखेउँ तुम्हरी प्रीति भलि कीन्हो वश मन बैन
तुम्हरो ऋणिया होइ रहो पलटा सकों न दैन।

सोरठा

अब जनि होहु निरास। सब कहँ सुखदीन्हो अधिक
कीसे रास विलास॥ कहत भये आनन्दघन।
इति श्री कृष्ण सागरे शुकदेव परीक्षि-
त सम्वादे श्री कृष्ण दास जगन्नाथ
कृते गोपी कृष्ण सम्वादे
र्णनोनाम द्वात्रिंशो
ऽध्यायः ३२ ॥

दोहा

पुनि रो गोपिन में प्रभु। धरे एक यक रूप॥ ॥
निज कर धरि कर सखिन कह लीला करहिं अनूप

चौपाई

देवन सब विमान चढि आये। हरषित हृदय सुमन वर षाये
देखत छवि अपसरा लुभाई। पग घुंघुरगो अवनि खसाई
शशि ह्वै ठाढ़ देख हरि शोभा। सुर कन्या दि देखत हरि लोभा
सो निशि भई भूप षट मासी। जानत कोइ चरित्र अविनाशी
प्रेम रवि सो निशि को नामा। भयो प्रगट जग सुनु सुखधामा
लसत विन्दु अम भाल विशाला। निरत थकित होत जब बाला

छन्द

निरतत थकित ह्वै कोइ बाला बैर जाति जो अवनि में
हरि कृपा ताल न भंग होवत उठि न चत सो ठवनि में
कोइ हरषि धरि यदुनाथ कांधे कहन प्रभु मोहि लागहू

कोउ कहत धड़ कन छाति कोउ कहत एते किमि प्रभु भागहूँ

सोरठा

राजन या विधि श्याम। मुरलि बजावत एसरचि
मोहित भई ब्रज बाम। सुनत राग अरु रागिनी
निरखत कबहूँ श्याम। मुकट माथ ते गिरि परत
कबहूँ सारि ब्रज बाम। उलटि जात शोभा अधिक

चौपाई

कोऊ सखी बन नन्द स्वरूपा। कोऊ बन वृष भान के रूपा॥
करत विवाह श्याम अरु श्यामा। को महिमा कहि सक ब्रज बामा
अन्न मुक्ति पाई ब्रज बाला॥ तिन तिन कुल लागे तारन वाला
करि विलास पुनि गिरवर धारी। यमुना महँ गे संग ब्रज नारी॥
करि अस्नान बिहार विहारी। कहन लगे सुनहू ब्रज नारी॥
अब निज निज गृह जाहू सबही। कहन लगी ब्रज बालन तबही
तुम तजि जाऊँ न कुँवर कन्हाई। उतर दीन्ह तब श्री यदुराई॥
मन ते सुमिरन करेहु हमारी॥ निज निज गृह तब सखिन सिधारी
चारि घड़ी बाकी रहि राता॥ माया ने हरि त्रिभुवन दाता॥
सोय रहे गोप सब गेहू॥॥ गोपिन गमन न जानेउ केहू॥

सोरठा

जो नर प्रीति समेत॥ पंचाध्यायी राम हरि॥
कहहिं सुनहिं नर केत भक्ति मुक्ति पावहिं सदा

इति श्री कृष्ण सागरे शुकदेव परीक्षित

सम्वादे श्री कृष्ण दास जगन्नाथ
कृते पंचाध्याय रास लीला
वर्णनो नाम त्रयस्त्रिंशो
ऽध्यायः ३३॥

दोहा

कृपति दिवस एक नन्द जू कहा सबहिं हरषाय
यही मानना भाषित। जन्म समय यदुराय॥

चौपाई

कृपा होय जब द्वादश वरषा। पूजो अंबिका मातु स हरषा॥
सोइ दिन आइ पहूंचो भाई। सुनि व्रज वासिन सुख अधिकाई
लेइ सामग्री पूजन सब हीं॥ गवने बल मोहन संग तब हीं
पहुंचे जहाँ देवि के आसन॥ धरे रहे जो पूजन बासन॥
विधि वत पूजि अम्बिका माता। विप्र जेवाये तब हरि ताता॥
पूजा परिकरमा पुनि दाना॥ दिवस बीति गा याहि विधाना
धरि व्रत निशि नहं सब रहि गयऊ। ह्वै अचेत जब सोवत भयऊ
उरग एक तेहि औसर आवा। अई नन्द पग निज मुख नावा।

दोहा

नन्द राय जागे सभन। लगे पुकारन ग्वाल॥
जागि सकल देखन लगे देखा पग मुख व्याल

चौपाई

भ्रमित लकट तें मारन लागे। तदपि न व्याल नन्द पग त्यागे।

कृष्ण लाल कहँ ग्वाल जगाये। रखवा पूरण तेहि पद यदुराये।
लागत चरण छाड़ि पग नन्दहिं। प्रगट भयो एक पुरुष आनंदहिं
अस्तुति करन लगो यदुराये। कह हरि को तुम कहँ ते आये
रह्यो हंस पुर बास हमारा। नाम सुदर्शन धन गर्व भारा॥
चढ़ि विमान पर दिन एक जाते। मुनि अंगिरा कुरूप तन तांते
हँसि तिन ऊपर किये विमाना। पर छाड़ो मुनि दीरघ निदाना
देखि गर्व दीन्हों अस आपा। दरपि चरण मिटिगा अब पापा
चढ़ि विमान तेहि सुर पुर गयऊ। देखि चरित सब चकित भयऊ
जाना हरि लीन्हों अवतारा॥ गये प्रात गृह गोप गुवारा॥

दोहा

दिवस एक प्रभु रास रचि गावत संग ब्रजबाम
तेहि क्षण दूत कुबेर को। शंख चूड़ जक्षनाम
तेहि माथे एक मणि रही। सुनहु नरेश सुरवारि
देखि मगन तेहि सबहिं कहँ भागालै कछु नारि
बन्यो शब्द न सुनि सखिन कीन्हो हरिहि पुकार
हरि हलधर को सखिन हँ कीन्हे मुष्टि प्रहार॥
ताहि मारि मणि माथ ले छीनि सकल ब्रजनारि
जगन्नाथ हर्षित फिरे मणि दिये बलहिं मुरारि

सोरठा

आये तब गोपाल॥ संग सखिन गृह आपने॥
करत सुखी ब्रज बाल। करि या विधि लीला महिप

इति श्री कृष्ण सागरे शुकदेव परीक्षित
संवादे श्री कृष्ण राम जगन्नाथकृते सुदर्शन मोक्ष शंख
चूड़ वधो नाम चतुस्त्रिंशोऽध्यायः ३४

## दोहा

सुन नृप जब लग कृष्ण जू आये धेनु चराय।
तब लग सब ब्रज गोपिका गावैं यश यदुराय॥

## चौपाई

कहहिं सखी सब मिलि श्रमवानी। सुनहु शब्द बंशी जब कानी
लागि जात चित जहँ चित चोरा। सुधि नर हृत सरिवकछु मन मोरा
एक कहत बन्शी अति प्यारी॥ सुनत शब्द रीझत सुर नारी॥
कछु टोना जानत यदुनाथा। वश करि लेहिं गाढ़ गुण गाथा
मोहत नारिन कछु बड़ बानी। पशु पक्षी मोहहिं मुनि ज्ञानी।
राजन जब लगि हरि नहिं आवैं। या विधि सखिन हृदय पछितावैं
साँझ समय जब मिले मुरारी। पाद दरश सब होय सुखारी॥

## दोहा

दिवस एक शोचत भये। मुरली धर गिरधारि
बहु श्रम करत दीन्हों सखिन क्षमा करावौं सारि

## चौपाई

कह हरि सुनु राधा मम बानी। तुम ते अधिक न प्रिय मोहि आनी

कहौं तोहि सौगंध सुनाई॥ कबहुं न जाउं आन तिय पाई
राधा ते मिस करि यदुराई॥ गये कुमुन्दा गृह हरषाई॥
तेहि क्षण आइ राधिका देखी। भयउ मान उर माह विशेषी
तब पग गिरि राधिकहि मनाई। संग खाइ मन आस पुराई॥
सखि ललिता कहं आवत देखी रंका मग हरि मुदित विशेषी।
कह सखि तुम धरो झूंठो नेह॥ आयो नहिं कबहूं मम गेहा॥
कह हरि आज आउं तोहि भोरी। भई मुदित सुनतहिं सो गोरी
जाइ विविधि विधि किये शृंगारा। बैठे बीति गई निशि सारा॥
गये नहीं तहं यदुकुल राई॥ सैला के गृह रहे लुभाई॥
प्रात समय ललिता गृह आये। कहन लगी तब सखी सिखाये
अबधौं कहा काज प्रभु आये। जाहु जहां जहं रैन गवाये॥
ताहु मनायो कुंवर कन्हाई। सयन संग करि आस पुराई॥

दोहा

या विधि गृह चन्द्रावली अरु सुख मालिक नारि
जाइ के क्षमा कराय हरि राधिक कुंज बिहारि

इति श्री कृष्ण सागरे शुकदेव परीक्षित-
त संम्वादे श्री कृष्ण दास जगन्नाथ-
य कृते गोपी गीत मान लीला
वर्णनो नाम पंच विंशो ऽ
ध्यायः

## दोहा

आयो फागुन मास जब। सखियन संग यदुराय
जा विधि खेल्यो फागु नृप कहो सोद समुझाय

## चौपाई

पहुँचा फागुन जबहिं महीना॥ होली खेलहि सखिन प्रवीना
नन्द किशोर ग्वाल दल संगा। उत सखियन मिलि डारहिं रंगा
कोउ भरो रंग डारि अबीरा॥ गारी देहि सखिन यदु वीरा॥
सुनि तिन्ह गारि कृष्ण मुसकाही। दरसाने गे पुनि राधा ही॥॥
करि शृंगार तहँ राधा गोरी॥ खेलन लगी कृष्ण संग होरी
कहन लगी सुनहू ब्रज नारी॥ पलटा लेहु आज बन वारी॥

## दोहा

चीर हरन के समय में। दीन्हों बहु दुख मोहि
आज पकरि जो पाद हौं तबहिं सिखावों तोहि

## चौपाई

उड़त अबीर भयो अँधियारा॥ धरी सखी एक नन्द कुमारा॥
लियो पिताम्बर हरि को छीनी। कारिकाजर सिन्दुर पिर दीनी
भाजन लगो तहां बन वारी॥ सखियन या विधि करहिं पुकारी
नन्द महर के जो तुम जाये ॥ तो फिरि आवहु श्री यदुराये।
भाजि गये प्रभु धरन जो पाये। पलटा लेहु के कृत्य कराये
जब निज दल आये यदुराई। नारि रूप एक सखा बनाई
भेजि पिताम्बर लीन्ह मँगाई। निज गृह गवन कीन्ह यदुराई

नारि स्वरूप विष्णुकि कन्हाई। पूछन लगी यशोमति माई॥
जा विधि रही सारि बन की करनी॥ कृष्ण लाल सब वहु विधि बरनी
बोले मातु सब नव व्रज नारी। विविधि विलाई कहा मुरारी॥
आजु दिवस होरी को गोरो॥ मागहु देउं सकल हौं तोरी॥
देहु कृष्ण मोहि मांगेउ सबहीं विहँसन लगी यशोमति तबहीं

दोहा

तब निज तनको वस्त्र सब पहिरे श्री गोपाल
गये नहाने यमुन तट। संग चले सब ग्वाल।

चौपाई

मज्जन करि जब गिरिवर धारी। फूल डोल लीला विस्तारी॥
नभ बैठे विमान सुर वृन्दा॥ बरषि प्रसून होंहि आनन्दा।
या विधि करि लीला बन वारी॥ सुख देही सब हीं व्रज नारी॥
कृपा भा सुर निश्चर बलवाना। पठवा कंस हतन भगवाना।
वृषभरूप ते आवा निशिचर। शृंगन उखाटि देत सो भूधर
गर्जेउ वृन्दा वन महँ भारी॥ गर्भ पात भा मुनि व्रज नारी
लपटि शृंग ते वृक्ष उपारी॥ खोजन लाग कन्हाँ गिरिधारी

दोहा

तेहि क्षण महि कांपन लगी सुर नर उर भा त्रास
ग्वाल बाल सब धाइ के शरण गहा सुखरास

चौपाई

कृपा लाल तिन्ह धीरज दीन्हा। शापु गमन निश्चर पहँ कीन्हा

निकट जादू हरि जवन्मल कारी। भया सुदिन अवहनो विहारी।
निकट जादू महि शृंग राजाई। उठा लेन चाहा यदुराई॥
दामोदर धरि शृंग हटावा। अष्टादश पग पाछे आवा।
लगो हटा वन पुनि यदुराये। बहुरि यका मो हरि के हवाये
धरि पग शृंग श्याम तेहि पटका। पुनि उठि शृंग लियो हरि झटका।
घुर्मि श्याम पुनि गहि पग शृंगा। लगे मरोरन निश्चर अंगा॥
नासा मुख ते रुधिर के धारी॥ बमत मग सो निश्चर भारी॥

दोहा

सुर प्रसून वरषन लगो। अस्तुति करि वन वारि
राधा तब हरि से कहन। सुनिये सुरली धारि॥

चौपाई

वृषभ बधे भा पाप गुसाईं। मज्जन करो सब तीरथ जाईं
सब तीरथ कहँ इतहिं मगाऊं। कहन लगे अस यदुकुल राऊ
गिरिवर निकट कुण्ड खुदवाये। तहाँ सकल तीरथ चलि आये
निज निज नाम भाखि यदुराई। निज निज जल सब दीन्ह गिराई
उभय कुण्ड वन वास सुखधामा। राधा कृष्ण भयो दोउ नामा।
मज्जन करि तहँ कुंअर कन्हाई। करि गोदान बिप्र जिमवाई।
अब लौ वृन्दा वन में अहहीं। मज्जत पाप पुंज जहँ बहहीं।
सुना कंस वृषभा सुर मरेऊ॥ तब उर महँ अतिशय दुख भरेऊ

दोहा

तेहि क्षण आये देव ऋषि दीन्हो क्रोध बढ़ाय

भिम करि तोहि गर्भ पातकी निज सुत रक्ष्यो छिपाय
याविधि हे वसुदेव की। करणी सुनहु महीश।।
है क्रोधित खड्ग हाथ लै हतन चहेउ कारि खीश
बजे मुनि तब छाड़ि को। कैद बहुरि कारि दीन्ह
क्रोधित केशी असुर को पठवन हरि पहँ कीन्ह

## चौपाई

मुष्टिक आदि असुर बलवाना। तिन्ह ते कहा लेहु दोउ आना
तबमैं देउ द्रव्य बहु तेरे ॥ ॥ पुनि मंत्रिन कहँ भाषेउ टेरे ॥
केहि विधि हतौ राम बलवीरा। कहन लगे ते सुनरणाधीरा।
धनुष यज्ञ को करहु बहाना। बोलि लेहु दोऊ बल बाना।
तबहिं कुवल या पीड़ हस्तिवर। मारत दोउ कृपा अरु हलधर
मुनि शुचि वावन यज्ञ हेतकिन। कार्तिक सुदी चतुर्दशि के दिन
भाषा इतन ते हरषाई ॥ ॥ याविधि सकल बनावहु जाई।
रंग भूमि बिर चहु एक सुन्दर। एक मचान बेठन तेहि ऊपर

## दोहा

अपर एक सब बंध लगि धरिशिव धनु तब द्वार
धनु चढ़ाइ कहु आन दोउ याविधि कंस विचार
जब वे धनुष उठावहीं। तबतिन्ह देहु संघार ॥
जो तहं मैं आगे बढ़ै। हतत हरिन दुजे द्वार

## चौपाई

तीजे द्वार रहहु बल बाना ॥ तहं तेहु वचत जो दोउ करआना

मे मारि हौं अवशि दोउ भाई। सुनत अमुर भव दिये बनाई
मरव कीबा विधि करि तैयारी। कह अक्रूर सं कंस विचारी॥
ब्रज महं दोऊ बालक रहहीं। तिन ते डर मोहि जीवन अहहीं
तिन्हे बधन हित करु तुम कामा जाहु सपदि तुम्हरा बन धामा॥
नन्दादिक ते कहियो जाई। लेहु अज महिष महित दोऊ भाई
आवें सपदि कंस जब कहेऊ। तब अक्रूर कहत अस भयऊ
जो लिखि दीन्ह विधाता राई। सो काहू विधि मेटि न जाई॥

दोहा

कृष्ण राम के बैर ने। बचत न तेरो प्राण।
जैहौं दियो निदेश मोहि लै हौं बल भगवान

सोरठा

सुनि गरहगा हरषान कंसा सुर मति अंधवर
दूत अक्रूर सुजान॥ गये गेह महं आपने

इति श्री कृष्ण सागरे शुकदेव परीक्षि-
त सम्वादे श्री कृष्ण दास जगन्ना-
थ कृते फागुन लीला वृषा-
सुर वध कंस नारद सं-
म्वाद वर्णनो ना-
म षष्ठिंशो
ध्यायः ३६

दोहा

राजन दूत केशी असुर। धरा वाजि कारूप॥
भोर होत व्रज में गया। महा बली छल रूप॥

चौपाई

भय आतुर सब गोपी ग्वाला। राखो शरण प्रभु दीन दयाला॥
तिनहिं देहु धीरज मुरलीधर। आदु गये सन्मुख सो निडर॥
कंस पठय मोहि मोहि वधन को। भय दिखवत मिक्यो और न को॥
अब टापन दीउ तबहिं उठाई॥ मारन धावा श्री यदुराई॥
धरि दोउ पैर तहि यदुनन्दन॥ फेकि दियेजिमि अहिपति अहिगन॥
दोउ दूत पर्वत गिरा महि माहीं। है सचेत पुनि सुरत फैलाई॥
हरिहिं रवान हित धावत भयऊ। लोह समान कृष्ण कर कियऊ॥
नाद दीन्ह ताके मुख माहीं। निसरन चाहत निसरि न जाहीं॥
यो विधि जब अशक्त है गयऊ। मरन निशाचर को तब भयऊ॥

दोहा

सुरन हर्षि अस्तुति करत बरषत पुष्प अनन्द।
व्रज वासी सब मुदित भे देखी सनँदनन्द॥

चौपाई

तेहि विधि हरि आगे भे ठारे॥ नारद अस्तुति कीन्ह सुखारे॥
भूत भविष्य और वर्त्तमाना। तीनहु काल अनेक विधाना॥
विदा होय व्रज लोक सिधारे। दूत हरि मिलि सब व्रज केरवारे॥
आपन पति के हुत मन्त्री कीन्हा॥ यो विधि खेलि सबहि सुख दीन्हा॥
कंस सुन्यो केशी को मरना॥ व्योमा सुर पढ़यो संहरना॥

ग्वाल रूप नेद हरि पहँ आवा। जानि कृष्ण तेहि संग खेलावा।
एक खेल खेलन नेद लागा। एक एक ग्वाल लेइ के भागा।
राखा गिरि कन्दरहिं छिपाई। दिये शिला एक द्वार दवाई।

दोहा।

कृष्ण अकेला जानिके प्रगट कियो निज देह।
तब मुरारि हनि मुष्टिकनि पठवा काल के गेह।

सोरठा।

लाइ सखा सब ग्वाल। वंशी टेरत साँझ को॥
आये गृह गोपाल॥ तेहि निशि यशुमति स्वप्न भा।
वृन्दावन तजि श्याम। गये कहूँ दूसर नगर॥
पुनि यशुमति सुख धाम स्वप्न सृषा करि जानेऊ

इति श्री कृष्ण सागरे शुकदेव परीक्षित
सम्वादे श्री कृष्ण दास जगन्नाथ
कृते व्योमासुर वधो नाम सप्त त्रिंशो ऽ
ध्यायः ३७

दोहा।

नृप कार्तिक वदि द्वादशी हने कृष्ण सो सूर
तेहि बिहान व्रज में गये। हरषित चित अक्रूर।

चौपाई

धन्य भाग है आज हमारो॥ पैहों दरशन नन्द दुलारो॥

जो पगुरेणु सरन नहिं पावैं। सो हरि नन्द कि धेनु चरावैं॥
धन्य भाग सब ब्रज कीवाला। दरश करहिं संतत नंदलाला
नहिं जानो केहि तप के कारन। पाउब दरश प्रणतभय हारन
नीक सगुन होवत है मोरा। अंग सब घुमहिं दाहिनी ओरा
जाइ चरण प्रभु नाउब माथा। मम शिर करफेरिहि यदुनाथा
प्रभु पद रज निज मस्तक लाऊं। जन्म जन्म के पाप नशाऊं॥
कंस रहन गह संकन करिहैं। मन की जानि सकल दुख टरिहै
सत्य कहब जब कंस के हाला। मुक्ति देइ प्रभु करहिं निहाला॥
चाचा कहि जब मोहि पुकरिहै। वैरी करि तब सुरन निहरिहैं।

सोरठा

शोचत अस अक्रूर। तीनि कोस महं आ कर
चरण रेणु सुरव मूर। देखत वन्दत गे तहां।
तेहि औसर नन्दलाल संग सखा आवत भये
देखत दीन दयाल॥ चरण परे अक्रूर नृप॥
भरे नयन महं नीर। प्रेम विवस नहिं उठि सकत
तब हल धर यदु वीर। उठा लीन्ह बड़ जानि के
धोइ चरन अन्हवाय। भोजन दीन्ह विविधि विधि
पुछत कुशल नंदराय। श्री वसुदेव अरु देवकी
कुशल पुछत हौ काह सपन कि सुरव ऐसो नगर
जहां कंस से नाह॥ कह अक्रूर परम वश
इति श्री कृष्ण सागरे शुकदेव परीक्षित

सम्वादे श्री कृष्णा दास जगन्नाथ कृ-
ते अक्रूर वृन्दावन गमन वर्णा-
नो नाम अष्टत्रिंशो ऽ
ध्याय: ३८

दोहा

राजन नारद आगमन कैद होन वसुदेव।
कंस उपाय हतन प्रभु यज्ञ करन को भेव

चौपाई

कंस पठायो बोलि विहारी॥ कह्या सकल अक्रूर सुखारी
रही जो आस हृदय अक्रूरा। यदु नन्दन कीन्ही सब पूरा
चाचा तुम ह्वै पिता स माना॥ करि प्रणाम दीन्हों अधिकाना
कृष्णा कह्या तब भन्द से जाई। दुग्ध यहीं लै कंस बुलाई॥
करत धनुष मख कंस सुहाई। दीन्ह हिदोरा नन्द पिटवाई
प्रात लेहु दधि सकल गुवाला। चलहु करत मख कंस भुवाला
सुनि गोपिन कहँ भा दुख पूरा। कहँते आयो यह अक्रूरा॥
कृष्णा गवन भावत हैं गोरी॥ तिन के विरह न जात सहोरी

दोहा

ननिक विमुख गोपाल ते रहा न जाये मोहि।
प्रभु जे हैं तो कौन विधि रखव प्राण निरमोहि

चौपाई

हे विधि हौ तुम परम कठोरा। प्रीति लाय हरि पुनि लेहु छोरा

बल मोहन दोऊ प्राणजो जैहैं प्रान बिना तन केहि विधि रहिहैं
या विधि बीति गई निशि सारी। प्रात होत सब किये तयारी॥
हरि हलधर रथ पर अक्रूरा॥ तहँ गई सखिवन पाइ दुख पूरा
रोदन करन लगीं ब्रजनारी। केहि अपराध बिसारु बिहारी
नाम तुम्हार दया के सागर। काहे भयो निठुर गोपिन पर॥
हे अक्रूर लिये तुम प्राना ॥ केहि विधि रहब बिना भगवाना
कोउ कह मथुरा सुन्दरि नारी। रहिहैं हरि तहँ हम न बिसारी
कोउ कह रूप श्याम है श्यामा। ऐसहिं चित्त श्याम घनश्यामा
कोउ कह देखन मथुरा नारी। जाहिं रसिक गोवर्द्धन धारी॥

दोहा

रोवत लगि जननी कहन मम बालक दोउ अन्न
कपट कियो है कंस कछु येका देखहिं यन्न॥८

चौपाई

कंस लेइ वर मोरे प्राना ॥ जान न देउँ राम भगवाना।
भई रोहिनी व्याकुल भारी। रथ ते तब उतरे गिरिधारी॥
कहन लगे सब हीं समुझाई। आउब बहुरि तजहु विकलाई
सखियन हरिबहु विधि समुझाई। नन्द महर कहहीं तिय पाई
यन्न दिखाइ लाउँ दोऊ भाई। तब रथ माहँ चढ़े यदुराई।
गमन कीन्ह माता पितु नाई। हांके रथ अक्रूर सुहाई॥
चढ़ि छकड़ा पर महर कृपाला। चले संग लै गोप गुवाला
जब लगि ध्वज रथ की दिखलाई। तबलगि कछु सुख गोपिन पाई

पुनि जब ध्वजा चीरव नहिं जाई। सखियन सहित फिरी हरि भाई

दोहा

हरि बिनु सुख नहिं काहु व्रज रहहीं सकल उदास
वृत मग में अक्रूर उर। भासंशय अरु त्रास॥

चौपाई

बंधे कंस जो राम गोपाला॥ पातक हो तव मोहि विशाला
हरि अन्तर्य्यामी सब जाना। यह मोहि बालक करि अनुमाना
यमुना तट आये जब सबही। ग्वालन सहित जनक कहँ तबही
कह हरि चलहु सपदि मैं आऊं। उतरि गये अक्रूर सो ठाऊं॥
रथ तजि तब उतरे अक्रूरा॥ गये नहान यमुन मुद पूरा॥
यमुना महँ गीता जब मारा। जल बिच देखा नंद कुमारा॥
शिर उठाय पुनि ऊपर देखा। रथ पर बैठे कृष्ण विशेखा
पुनि गीता मारा सो दृ देखा। तीसरि वार ज्ञान विधि पेखा
धरें चतुर्भुज रूप बिहारी। शंख चक्र गद अम्बुज धारी॥
लक्ष्मी सहित शेष आरूढ़ा। अस्तुति करहिं देव सब गूढ़ा

दोहा

ज्ञानी महिमा कृष्ण की परे चरण जल जाइ
क्षमा करहु अपराध प्रभु जानेउ नहिं प्रभुताई

इति श्री कृष्ण सागरे शुकदेव पर्गोक्षि-
त सम्वादे श्री कृष्ण दास जग-
न्नाथकृते अक्रूर दर्श-

नवर्णनोनाम ऊन चत्वारिंशोऽध्याय:३९

दोहा

सब देवन के देव प्रभु अलख अनन्त अगाध
नव महिमा नहिं जान को उक्षमा करहु अपराध

चौपाई

जिमि सरिता जल सिन्धु समाई। होहि लीन तिमि जीव सदाई।
तुमहीं महँ सुनिये यदुनाथा। विनय करौं नावों पद माथा।
मीन कच्छ वाराह के रूपा। नर हरि वामन आदि स्वरूपा।
परशु राम रामे औरतारन ॥ केवल लीन्ह भक्त हित कारन
अज सुर नायक जानन भेवा। माया बश नहिं चीन्हेउ देवा।
दीन नाथ गो संतन हेतू ॥ लिये अवतार गेह गो केतू।
जा पदते गंगा बहि आई। तारत है कलि रवल समुदाई
सो पद को मैं करूँ प्रणामा॥ कृपा करहु लोचन अभिरामा

दोहा

तुम प्रभु दीन दयाल जग हरु मेरो अज्ञान
देहु ज्ञान जेहि चीन्हउ कृपासिंधु भगवान

इतिश्रीकृष्णसागरे शुकदेव परीक्षित
सम्वादे श्रीकृष्ण दासजग-
न्नाथ कृत अकूरस्तु-
तिवर्णनोनाम च-
त्वारिंशोऽध्याय:४०

दोहा

यहिविधि चरित देखाइके भये हरि अन्तर्धान।
तब अक्रूर हरि पहँ गये महिमा लखि भगवान

चौपाई

काहे कीन्ह बिलम्ब कहत हरि। कह अक्रूर चरण माथे धरि
अब जानेउं प्रभु महिमा भारी। तब प्रभु लीन्ह संग बैठारी॥
रथ हाँके भेटे सब ग्वाला॥ बैठे रहे एक बाग विशाला॥
कह अक्रूर भरे हरि नेहा॥ पावन करु प्रभु मेरो गेहा॥
जो पद रहत हृदय गंगाधर॥ तेरो कुटुम्ब सहित शिरधरिकर
कह हरि आज रहब यहिठामा। कालि हतों कंसहिं बल धामा
तब हम संकर्षण तब गेहा। आउब सुनि पुलकी तेहि देहा।
तब अक्रूर कंस पहँ गयऊ। सकल आगमन भाषत भयऊ

दोहा

आज टिके हैं बाग में काल्हि ऐहहिं दोउभाइ
कंस हृदय भा हर्ष अति काँपे वरणो जाइ॥
बिदा कियो अक्रूर को इत हरि आयसु माँगि
सखा भ्रात संग आये। मथुरा देखन लागि॥

चौपाई

अति उतंग दुर्ग चहुँदिशि खाई। ता महँ नीर भरो अधिकाई
बाग तड़ाग बावरि बहु सोहहिं। देखि जाहि सब के मन मोहहिं
तहँ जब गे हरि हलधर भाई। छवि देखत सब नारि नुभाई

धन्य भाग वृन्दा वन वासी॥ दरशत रहे सदा अविनाशी
कौउ अरोरव ते देखत श्यामहि धन्य भाग आ मथुरा वासहिं
केशी आदि असुर जो मारा॥ सोइ दोउ बालक नन्दकुमार।
या विधि बोलहिं मथुरा नारी। देखि मुदित छवि कुंज विहारी
सब मिलि देहि कंस को गोरी॥ हनन हेतु लिये बोलि विहारी

दोहा

मिला रजक एक जात मग करिके मदिरा पान
कंस बसन धोइ जान रहा नहि कहा भगवान

चौपाई

वस्त्र देहु फिरि आउ वजबहीं। दैहौं द्रव्य अधिक धौं तबहीं
सुनत वचन बोला अभिमानी। जानहु तुम एक गाय चरानी।
जाति अहीर का मरी उढ़ैया। याहि कंस के बसन पिन्हैया
जाहु कंस दोउ लेत पराना॥ पहिरेहु बसन तबहिं सुखमाना
मधुन स्वभाव मांग हम तोही। काहे असि बोलसि दुःमोही॥
जाहु अहीर गंवार अजाना॥ नहिं तो करब अवश्य निदाना
सुनि असि वचन गर्व युत भारी। तिरछा कर हरि ग्रीवहि मारी।
लागत ही काटिसा तेहि माथा। देखि भजे सब रजक न साथा

छन्द

भाजे रजक तब श्याम मिलि सब ग्वाल पहिरे पट घना
जहँ बांह नहँ पग दीन्ह सबहीं कह्यो राज सुनो सुना।
सुनि श्याम कहे जिमि अजान उतारि पट पहिरत भये

प्रभु भक्त कोरह आन जो हत आदु सो पहिरा दिये

सोरठा

सूजी वा यक नाम सवहि पिन्हायो आदु के ॥
गयो अन्त हरि धाम। भक्ति दिये परिवार सह।
तनिक पेन्हावन काज अस प्रसन्न भै श्यामपुर
जो चढ़ाव व्रज राज। प्रेम सहित ते धन्य जग

दोहा

पुनि सुदाम माली मिलानेहि रहे गे आशिष
देखि प्रेम दिय भक्ति वर तहँ ते गवने आप ॥

इति श्री कृष्ण सागरे शुकदेव परीक्षि-
त सम्वादे श्री कृष्णा दास जगन्ना
थ कृते मथुरा प्रवेश रजक
वधो नाम एकन्वत्वा-
रिंशोऽध्यायः ४१

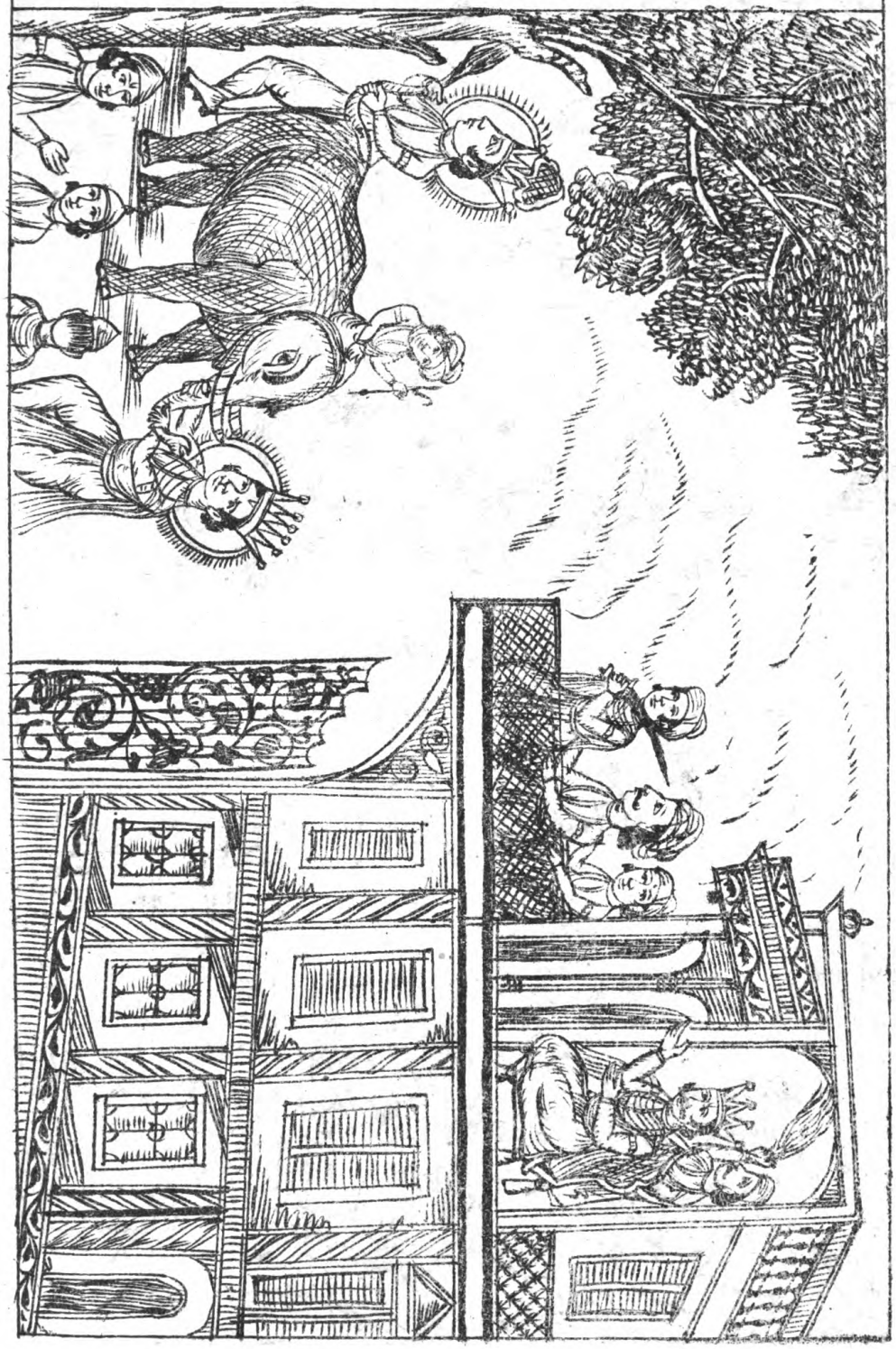
दोहा

आगे एक मालिनि मिली कुबजा जाको नाम
चन्दन लायो भक्ति युत। हलधर अरु घनश्याम

चौपाई

रही कुँवरि सो नारि भुआला। चाह्यो सीधी करन गोपाल
निज पद तेहि पद त्वपि पदुगई। कर हाड़ी धरि दिय उचकाई
कूबर जें सीधी ह्वै गई ॥ ॥ ॥ परम सुन्दरी ह्वै वन गई ॥

## कुवलयापीड़ बधलीला



चाणूर बधलीला॥



कंस बधलीला॥



कह मम गृह चलहू यदुराई। पूरण करहू मनोरथ साई॥
कहहरि कंस मारि जब आऊं। तब गृह जाइ के आस पुराऊं
आगे चले बहुरि यदुराई ।॥ भांग सराहहिं सब कुबजाई
रंग भूमि के प्रथम दुआरा॥ जब पहुंचे दोउ नन्द कुमारा
दश सहस्र चोले बलवाना। जनि आवइ नतुकर बनिदाना

दोहा

गर्व देखि तहं चलिगये गर्व प्रहारी श्याम॥
धनुष तोरि सब वीर हति फिरि आये सुखधाम

चौपाइ

कंस हृदय भादत उर दाहू॥ उत लागे नन्द कहन नरनाहू
यह नहिं ग्राम तुम्हारो ताता। बसन छीनि पहिन्यो जो आता
भोजन मांगा कुंवर कन्हाई। नन्द दीन्ह तब दही मिठाई
भोजन सखा सहित प्रभु कीन्हेउ। हरषित सब गंवाय निशि दीन्हेउ
दूत जब कंस सोवन निशि आयऊ। स्वप्न एक अस देखत भयऊ।
खर आरूढ माथ कटि गयऊ। देखत ही अति विस्मय भयऊ
निन्द्रा भई न भय वश ताई। प्रात होत कह दूत बुलाई॥
रंग भूमि सब देहु सवारे ॥ बोलि लेहु सब देखन हारे॥
सुनि ते बोलि सबहि बैठारे। चढि मचान पर बैठु सुखारे॥
द्वितिय मचान सकल यदुवंशी कंस बोलि जो धनपर संशी॥

दोहा

जो मारहु हरि हलधरहि। करिहौं तिन्ह सन्मान

नारि सकल देखन लगीं सुर चढ़ि देख बिमान
इति श्री कृष्ण सागरे शुकदेव परीक्षि
तसंवादे श्री कृष्ण दास जगन्ना-
थ कृते कंसस्वप्न दर्शन वर्णी-
नो नाम द्विचत्वारिंशो
ऽध्यायः ५२ ॥

दोहा

जादू सभा बैठे सकल। नवपुनि देानो भाइ।
आये दूसर द्वार पर। हलधर कहा सुनाइ॥

चौपाई

हटा देहु गज मंतु गज वाना। कंस निकट जाही भगवाना।
करि अभिमान नेकु नहिं डोला। निकट लाद गज हरि से बोला।
याको मारि लेहु तब जाहू॥ याते जीति सकहि नहिं काहू॥
सुंड चढ़ाहु गज गर्जत भयऊ। मुष्टिक संकर्षण तब दयऊ॥
सुंड सिकोरन लागेउ भागा। चिकरत पाछे को हटि भागा।
पुनि अंकुश मारा गज वाना। सुंड लपटि लीन्हेसि भगवाना॥
धरि लघु रूप घुसे सुंड माहीं॥ या विधि निकसन श्यामवचाहीं।
ठोंका निसरि बहुरि हरितारा। सब हरषे लखि विचरित गोपाला।

दोहा

दोउ भ्राता मिलि पूंछ गहि करि मुष्टिका प्रहार
मारे गजहिं पचीस दश सहस द्विरद बल भारि॥

## चौपाई

एक एक दशन लेइ दोउ वीरा। रंग भूमि आये रण धीरा॥
नहिं हरि जो जेहि भावनि देखहिं। प्रभुहि नाहि विधि लखि सुख लेखहिं
कंसे शत्रु नन्द सुत जान्यो ॥ ग्वालन सखा नारि छवि सान्यो
तब चाणूर आइ एक वीरा। कहन लाग सुनिये बल वीरा
आज भूप मम अहै उदासा। मल्ल युद्ध करि करहु हुलासा
तुम्हरो विक्रम सुना विशाला। कत निश्चर मारे ब नंद लाला
कह हरि हम का मुदनृप देहीं। पर मल्ल युद्ध नोहि मन करि हौं
पटकेहु नहिं मोहि बालक जाने। सो हन समर बाल अरुझाने

## दोहा

युद्ध व्याह अरु शत्रुता। करिये सम से जाय
कंसायुस जो याहि विधि तासो कहा बसाय

इति श्री कृष्णा सागरे शुकदेव परीक्षि-
त सम्वादे श्री कृष्णा दास जगन्ना-
थ कृते कुबलया पीड़ वधो
नाम त्रि चत्वारिंशो
ऽध्याय: ४३॥

## दोहा

अस कहि हरि चाणूर से हलधर मुष्टिक वीर।
भीरि गये हीरा सरिस। कीन्हों अचल शरीर॥

## चौपाई

शिरते शिर छाती ते छाती॥ करते कर पग पग यहि भाती
युद्ध करत पचता वहि वीरा॥ ये दोऊ बालक अतिरणधीरा
मुष्टिक एक हरिहि तेहद मारा। श्याम घूर्मि तेहि धरा पछारा।
गिरत मात्र छूटा तेहि प्राना॥ उत हलधर तेहि कीन्ह निदाना
सल तोसल आये एक बारा। वाम चरण हनि तिन्ह हरि मारा
कूद वीर कहँ निजकर वामा॥ मारि दीन्ह तुरतहि तव रामा
पांच वीर जब ही गे मारे॥॥ भाजे सब रन आस विसारे
मथुरा वासी अस्तुति करहीं। देवन किये सुमन की झरहीं

दोहा

देखि दशा सब वीर की। कंस पठेव निज मीत
क्षण महँ तिन्ह मारे हरी। हरन सकल भव भीत

चौपाई

हरि पितु मातु शोच उर भारी। कैसे बचै गोवर्धन धारी॥
दुखित जानि हरि निज पितु माये। धरि लघु रूप कंस पहँ आये
कंस खड्ग हरि को दिखरावा। रोकि कृष्ण तेहि लेगे खेलावा
विबुध करहिं विनती यदुराई। सपदि हनहु निशिचर दुखदाई
तब हरि पगते मुकुद गिराई। नाथ केश धरि दीन्ह खसाई
तीन लोक को तव लेद भारे। कूदि परे नभ असुर मुरारे॥
निसरा प्राण रहा भय श्यामहिं। पायी मुक्ति हरषि सुखधामहिं
नन्दन बाग के पुष्प नु राई। देवन तेहि औसर झरि लाई।

दोहा

अष्ट भाद्र पुनि कंस के। आये मारन श्याम॥
हल मूसल ते वेग ही। मार दीन्ह बलराम।
लाये यमुना तीर प्रभु। नाहि घसी दत बाट।
तब तहँ किये विसराम प्रभु विदित श्रम हरघाट
कंस मरन सुनि रानि सब रोवत गईं जहँ श्याम
तिन धीरज दै काज सब। करवाये सुरधाम॥

सोरठा

उग्र सेन ने श्राप॥ करा दीन्ह ताकी क्रिया
भय नहिं ताही व्याप। कंस हतन लीला सुने
इति श्री कृष्ण सागरे शुकदेव परीक्षित
सम्वादे श्री कृष्ण दास जगन्नाथ कृ-
ते कंस वध वर्णनो नाम
चतुः चत्वारिं शोऽ
ध्यायः ४४

दोहा।

कंस की लोथ जल्लाद कै गै सब निज निज गेह
हरि हलधर अक्रूर ही। ले गय सहित सनेह

चौपाई

मातु पिता को लीन्ह छुड़ाई। कहन लगे तिन्ह ही शिर नाई
मो सम नहिं जग आन अभागी। तुम्ह न सह्यो दुख सम हित लागी
धन्य सो पुत्र मातु पितु सेई। जन्म लेन फल ते सब लेई

क्षमा करहु अपराध हमारो। कीन्हेउ कछु नहिं सब निहारो।
तब दम्पति उरभा अति ज्ञाना। अस्तुति करन लगे भगवाना।
हरि लीन्हो तिन्ह ज्ञान बिहारो। पुत्र जानि लग मातु दुलारो।
भारत सकल गये बिसराये॥ हरि हिं गोद लै निजगृह आये

दोहा

श्याम सुन्दर के जन्म में दश सहस्र गोदान॥
भाषित रहा सो दान किय दम्पति उर हरषान

चौपाई

भोजन करि हरि तुरत सिधाये। उग्र सेन रहे तहं चलि आये।
करि दण्डवत कहा हरषाई। राज करहु नाना होइ राई॥
पापिहिं हत्यो सबहिं दुख भाजा। अब तो तुम्ही होहु हरि राजा।
कह हरि यदुकुल में है आपू। हम नहिं होव होहु नृप आपू
जो नृप वंश तुम्हरे नहि होई हैं। तिन्ह अभिमान सकल हम खोई हैं
सुनि हरि वचन पाइ अनुसासन बैठे उग्र सेन सिंहासन॥॥
दोउ भ्राता मिलि चौर डुलाये। निज करते हरि तिलक लगाये
देवन तहाँ सुमन बरषाये। अति हरषित दुन्दुभी बजाये
भाजे प्रजा सकल तहं आये। कृष्ण कृपा ते बहु सुख पाये

दोहा

तब नंद राय विदा करन आये हरि पितु साथ
जोरि जोरि तेसब मिले हरि नाये पद माथ॥

चौपाई

कहा श्याम सुनिये नंदराई। कछु दिन दै सुख पितु अरु माई
अहहीं बहुरो गोकुल ग्रामा। मूर्छि परे महि लखि हरिनामा
श्री दामा तब लागु बुझाई। राज पाइ तुम गये भुलाई॥
षोड़श सहस गोपिका जेते। पञ्च सहस्र सखा सब तेते॥
तुमरे बिरह यशोमति मेया। मरि जैहैं सब ही व्रज गेया॥
तब हलधर लगु नन्द बुझावन। होले आदव हरि मन भावन
भेजहु तुमहिं देखि के भाई। पै है सुख व्रज में समुदाई॥
तब माया अस रची बिहारी। कछु एक ग्वाल नन्द तहँ धारी।
जान लगे तब भूषण लादी। कहन लगे वसुदेव जू आदी॥
बन्धु तुम्हार उबरण नहिं अहऊ। किय जस हित तुमकों हि सुख-
दहों यहां कछु भेद न भाई। अस कहि दियो द्रव्य बहुनाई॥

## छन्द

देहु अमित भूषण द्रव्य नन्दहिं श्याम सब हि विदा किये
सुख दीजियो तुम जाय जननी मोहि जनि विसराइये।
सुनि नन्द तनेव मुकुंद फसि गये फन्द माया श्याम की
मग जात शोचत संग ग्वालन सुरति हरि बल राम की
इत श्याम गे मथुरा नगर पहुँचे महर व्रज की गली
व्रज बाल जानि गोपाल धाई महर नारि भी आ मिली
रहु ग्वाल जो मथुरा नगर सोउ हाल आय सुनायऊ॥
सुनि मातु यशुमति विकल उर अति मखिन बहु दुख पायऊ
नंदरानि कह सुनु मूढ़ नन्द गँवाय पारस वस्त्र लै॥ ॥

तुम आये यदि मैं जाति तव नहि आनि विनु लिय लाड़िले
भै धन्य जग में भूप दशरथ पुत्र हित जीवन तजे ॥ ॥
अस हृदय निठुर तुम्हार आये मन हरन मथुरा छुजे
नहिं आव नन्दहिं वचन मुखते सखिन अस बोलन
अब श्याम लोभे जादु कुबजा सखिन पर नहिं चित जं
कहु सखी कोउ नदु नारि पार्द राज तहँ पाये सही
अब कौन आवत राज सुख तजि खात व्रज माखन म
कोउ आव अभ्यागत तहाँ तेहि कहत बिपति सुनाद
कहु रुक्मा से दुख गोपिका प्रिय राधिका अरु माद दे
या विधि दशा भद गोकुला दुख कहत दुख उपजत न
जन जगन्नाथ समास यहि लागि विरह गोपिन गाइये ॥

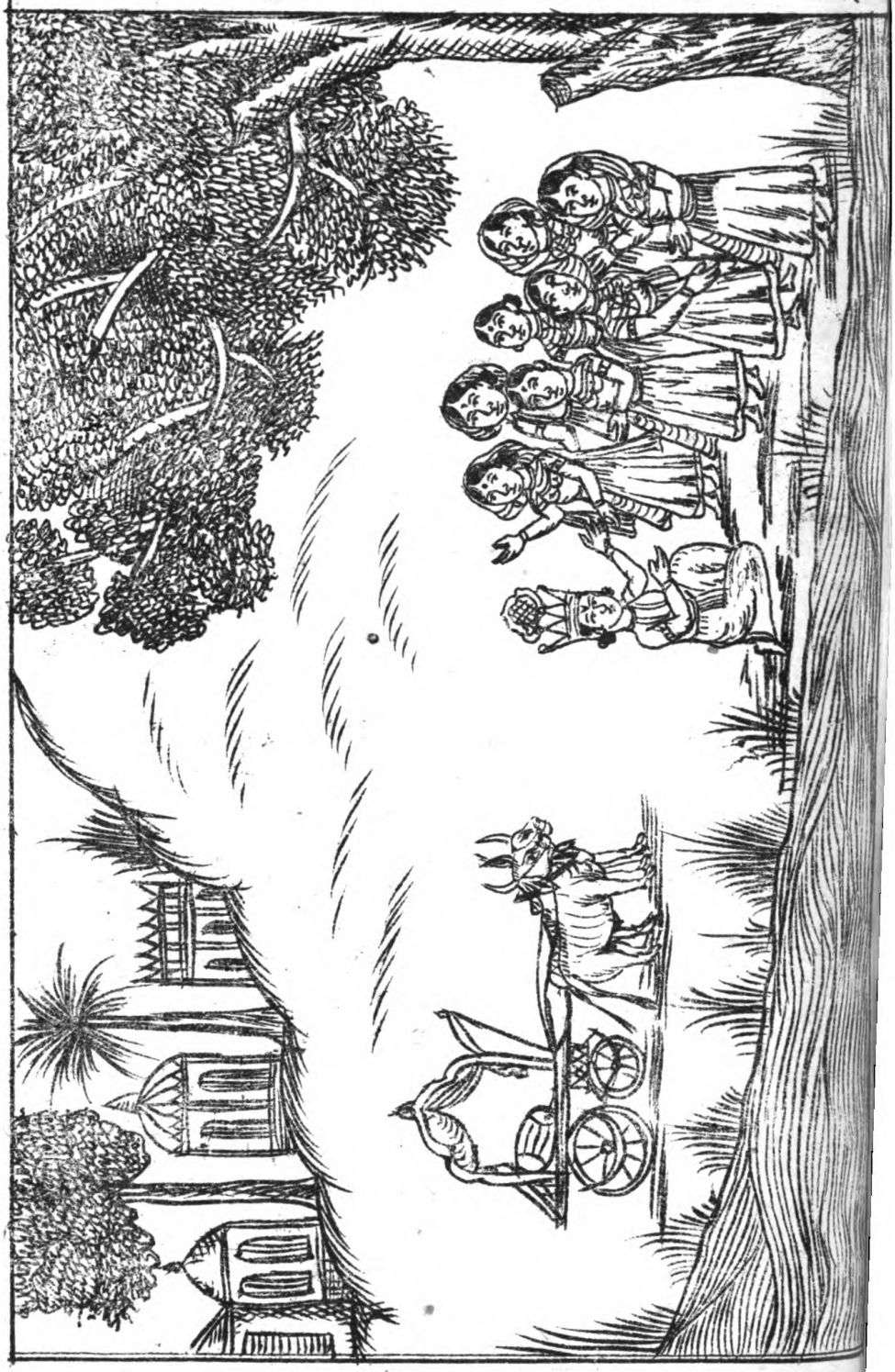
## दोहा

दूत मथुरा वसुदेव जू। लिये प्रोहितहिं बोलि
गायत्री सिख दीन्ह मुनि दे उपवीत अमोलि।

## चौपाई

जनेउ पिन्हावत भै दोऊ भाई। गायत्री मुनि दीन्ह सिखवाई
जाको भेद वेद नहिं पावे ॥ तिन्ह गायत्री गर्ग सिखावे।
संध्या गहन कराद दोऊ भाई। रथ चढ़ाद के दीन्ह पठाई
सांदीपन बुध रहु उज्जैना ॥ तहँ दोउ भाइ गये सुखऐना
विप्र सुदामा मिला मगमाहीं। जात रहा सोऊ बुध पाही ॥
नादू रथ चढ़ाय हरि लीन्हा। जादु निकट बुध दंडवत कीन्हा

ज्ञान सिखाना ऊधो का गोपियों को



विद्या दीजे मोहि पढ़ाई ॥ लगे पढ़ावन गुरु दोऊ भाई
दिवस एक गुरु पत्नी श्यामहिं। विप्र सहित भेज्यो वन कामहिं

दोहा

दिये कलेवा दोउ के। रारवत भयो सुदाम।।
बाट वारि बरषन लग्यो क्षुधित भयो तहँ श्याम

चौपाई

तब लगि विप्र कलेवा दीऊ। खाइ गयो ताते नृप सोऊ॥
भयो दरिद्र सुदामा नामा। द्विज प्रसिद्ध जग सुनु सुख धामा
विद्या सब दिन पठित चारा। पढ़े बंधु दोउ नन्द कुमारा।
तब गुरु से लगु कहन सुनाई। कहु दक्षिणा सो देउँ विचारी
मिरतक पुत्र हमारो एका। लाइ देहु प्रभु सोइ अनेका
मज्जन जलधि डूबि सो गयऊ। अंगीकार करत हरि भयऊ।
श्रम मुनि रथ चढ़ि दीनो भाई। सिन्धु निकट तब गये रिसाई
मम गुरु बालक रहेउ नहाई॥ डूब गयो सो देहु बताई॥
धरि तेइ मनुज रूप अति रूरी। रारवो भेद हृदय भय भूरी।

दोहा

सिन्धु जोरि कर कहत भो नाथ न मम अपराध
शंख रूप पंचजन असुर सो लै गयो असाध

चौपाई

जल महँ पैठि के नन्द कुमारा। तुरतहिं शंखासुर को मारा।
यद्यपि मिलान सोऊ बालक। मुक्ति दीन्ह ताही जन पालक

ताहि बजाइ गये जम द्वारा। कत पापिन को नहीं उधारा
धर्म राज परि पूरित नेहा॥ ले गय हरि हिं आपने गेहा
अस्तुति करन लगो बनवारी। गुरु सुत लाइ दीन्ह मुद भारी
तब दीऊ होइ के अन्तरध्याना। गुरुपद सुत लै गय भगवाना
आशिष पाइ गये गृह अपने। संत पाद जेहि ध्यानन सपने
सो प्रभु पदि गुर सेवा कीन्हा। धन्य सो जो गुरुपद चित दीन्हा

दोहा

सुनु नृप जग में तीनि विधि अहैं गुरू परमान
मंत्र पदेशी ज्ञान धर्म तीनो प्रभु हिं समान

इति श्री कृष्णा सागरे शुकदेव परीक्षि
त सम्वादे श्री कृष्णा दास जगन्ना
थकृते शंखासुर वधो नाम
पञ्च चत्वारिंशो ऽ
ध्यायः ४५

दोहा

जब आये निज गेह प्रभु मन में कीन्ह विचार।
होइ हैं विरहा कुल सरिवन फल्यो वृक्षन हार

चौपाई

ऊधो रहे मित्र भगवाना॥ तिनहिं ज्ञान कर अति अभिमाना
पाती दई सरिवन समुझावन। भजन को सब त्रिभुवन पावन।
पुत्र भावनहिं जान यशोदा। गोपिन ब्रह्म जान भजु मोदा।

अस लिखि पाती दय पठेरा। रथ चढ़ाइ भेजा तिन्ह नेरा
माता से कहियो अस जाई। मिलब सपदि हम दोनों भाई
लेइ संग तुम रोहिणि माता। पत्र सुनाइ सबहि सुखदाता
ऐहहु तुरत कहा भगवाना। कह वसुदेव जबहिं लगजाना
कहेहु नन्द से अस तुम जाई। आवें देखन श्री यदुराई॥

दोहा

विकलाई तजि देहु सब आइ दरशिय दुवीर॥
नयन जुड़ावें सब सखिन दिय अस कहि पटचीर

चौपाई

रथ हांकत भय ऊधो जब हीं। सगुन सखिन कहँ भा शुभ तबहीं
फरकन लगो नेत्र जब वामा। कहहिं दूत आवन घन श्यामा
दूत सखियन अस बोलत नाना। आइ गये ऊधो हरयाना॥
शोभा व्रज की कही न जाई। फूले सुमन फिरहि बहु गाई।
धाये लोग जानि अविनाशी। हरि कहं देखिवन भये उदासी
नन्द यशोदा कहहिं सुनाई। आइ हैं कबहूं कि दोनों भाई।
गये अस दय हम न विसारी। जुड़त नयन की श्याम निहारी
करत स्मरण कबहुं की नाना। हरि हलधर धों निज पितु माता
अति व्याकुल दम्पति कहं देखी। वाचन लागो पत्र विशेषी।
आइहहिं सपदि कहेउ दोउ वीरा। दय दीन्हेउ अस कहि पटचीरा
पद पखारि भोजन कर वाई। रहे गेह तिन्ह ऊधो राई॥
धन्य धन्य तुम धन्य बनाई। जेहि उर बसत सदा यदुराई

तुम्हरी सुरति न सकत विसारी श्रंचति रहहिं सदा बनवारी

सोरठा

लगे सिखावन ज्ञान जा विधि हरि भाषित रह्यो
निशि को भयो निदान ऊधो को वत रात ही।
गये यमुन श्रस्नान देखा गृह गृह हरि भजन
तब ऊधो हर षान। यमुना जल मज्जन लगे
गृह को काज संभारि जल लावन हरि गुण कथत
गई सकल व्रज नारि। कहं श्रावा श्रक्रूर पुनि
तबतो लय भगवान गया रहा मथुरा नगर
सब का श्राया ठान कोउ कह पठयो दूत हरि

इति श्री कृष्णा सागरे शुकदेव परीक्षित सम्वादे श्री कृष्णदास जगन्नाथ कृते उद्धव वृन्दावन गमनो नाम षट चत्वारिंशो ऽध्यायः ४६ ॥

दोहा

नृप करि मज्जन जान लगे ऊधो नन्द के गेह
गर्गादिक सब गोपियन घेरी सहित सनेह।

चौपाई

मातु पिता के धीरज कारन ॥ पठये दीन्ह तोहि असुर संघारन
हम विरहिन की का सुधि लैहैं। राज काज तिज किमि गाय चरैहैं

भंवर उड़त पुष्पन रस लेई ॥ बहुरि न चित सेहु वृक्षन देई
जिमि बालक कछु पाइ के ज्ञाना। बहुरि न जात गुरू के थाना॥
जिमि कर प्रीति द्रव्य लगि नारी। तिमि हरि गोपिन चित तें बिसारी
कोउ कह कुब्जा निशि चर दासी। किये गनि तेहि हरि अविनाशी
देखि मधुप आवत तहँ आली। कहन लगी बातें एकत्र वाली
हे मधुकर तू हरि सम काला। कछु कहु मित्र श्याम कोहाला
कोउ कह वरण जिते हैं कारे। ते सब कपटी जिमि असुरारे॥
कह ऊधो कब अहहैं कान्हर। सुनत पत्र तिन्ह कीन्हो बाहर

दोहा

कहा श्याम सब सरिकन से सुनु पत्री को हाल॥
निर्गुण करि तिन्ह मानहू जनि पति जानु गोपाल

चौपाई

योग कथा समुझा वन लागे। निर्गुण ब्रह्म रहहु अनुरागे।
जिमि योगी गण भजु भगवाना। सब में व्यापक लखि गुणखाना
सोइ भाव भजहू यदुवीरा॥ वसि हैं सदा हृदय मति धीरा।
सुनत वचन राधादिक गोपी। कहन लगीं ऊधो से कोपी॥
हरि नहिं कही योग की बानी। हम अबला का साधन जानी
लीन्ही नहिं गुरु मंत्रहिं कोई। योग ज्ञान कौनी विधि होई॥
यह सब है कुब्जा की करनी। पाती में जो ऊधो वरनी॥
दासी को कीन्ही हरि रानी॥ भनि है ताहि न कोई ज्ञानी।
राधा कृष्ण नाम जग होई। कुब्जा कृष्ण कहत नहिं कोई

हमन नारि वृन्दा बन वासी। सगुन रूप गोपाल उपासी।

दोहा

देखि भक्ति व्रजनारिकी उद्धव गये लजाय।
ज्ञान अभिमान विसरि गयो रहे मौन शिरनाय

सोरठा

कहा रहा सुख राज श्रावन सपदि बुझाइके
बीति गयो षट मास। उद्धव को तहँ प्रेम वश

चौपाई

तब सखि वचन निज गृह लै जाई। चरन धोइ भोजन करवाई॥
कहा कृपा से कहि हहु जाई। योग सिखवावें आपुहि आई।
विदा होइ ऊधो तब गवने॥ आये बहुरि यशोमति भवने
तब नन्द रानी दही मिठाई॥ मुरली दई दीजियो जाई॥
नन्दराय कह कहेहु पिताहीं। बारेक श्रावन देहि कृपा करि
भूषण वसन दियो बहुनाई। दीजेहु यह वसुदेवहिं भाई॥
देख्यो दशा सकल व्रज वासी। कहियो श्रावें बल अविनाशी॥
कहा रहा श्रावन यदुराई॥ सोइ श्रास उर रहत सदाई।
विदा होइ नन्द रोहिणी नारी। ऊधो आये जहँ बन वारी॥
सादर मिलि आसन बैठाई। मुरली लै हरि उरहि लगाई
कहहु सकल अब ऊधो राई॥ कैसे हैं व्रज में समुदाई॥
कहा कहूँ गोपिन की प्रीती। पावहिं नहिं तसमुनि गो जीती
केवल अवधि आस पर रहहीं। कब आइहैं मोहन अस कहहीं

भूलि गयो मेरो तहँ स्नाना॥ शोर कहा धौं करों बखाना॥
बोलि पठायो पितु अरु मादू। तुम बिनु राधा अति बिकलादू॥
अहो महा तुम निठुर कन्हादू। छाड़ि दियो गोपिन पितु मादू॥

दोहा

सुनत बचन शोचन लगे शोच विमोचन श्याम।
रोहिणि देवकि सो मिलो हरि कीन्हो परणाम॥

सोरठा

ऊधो देहु संदेस। गये गेह महँ आपनो।
दूतबल कृपा नरेश बखाये ककुत्स्थ घरपठेव

इति श्री कृपा सागरे शुक देव परीक्षित
सम्वादे श्री कृष्ण रास लगाख्याय
कृते ऊधो गोपी सम्वादो-
नो नाम सप्त चत्वा-
रिंशोऽध्यायः
॥ ४७॥

सोरठा

नृप हरि किये विचार कुब्जा के गृह जादुये
कहेउ कंस को मारि। आवेंगे तेरो सदन॥

चौपाई

अस विचारि उद्धव संग लीन्हे। तब यदुराज गमन तहँ कीन्हे
कुब्जा श्याम हिं आवत देखी। भई मगन हिय हरष विशेषी

आगेहि ते पावड़े बिछार्द्द ॥ गई लेद श्रीपति यदुराई॥
गये कृष्ण जब ताके गेहा। चरण धोद परि पूरित नेहा
सादर सिंहा सन बैठार्द्द॥ उद्धव कहँ आसन दियलार्द्द
पुष्प सुगंधित साजि बनार्द्द। सेज सुहावन दीन्ह बिछार्द्द
चोगुन करि चो वेद सिंगारा। कृष्ण निकट हर्षित बैठारा
जानी हरि उर अन्तर बाता। पूरण किये आस सुर त्राता

दोहा

पूर्ण मनोरथ तासु करि उद्धव भक्ति दिखाद्द
भवन आद्द अक्रूर गृह गये पुनि बलयदुराद्द

चौपार्द्द

चरण धोद तिन्ह दोनो भार्द्द। सादर आसन पर बैठार्द्द॥
भोजन विविधि भांति करवार्द्द। अस्तुति करन लगा हरषार्द्द
बोलि उठे तब कुँअर कन्हार्द्द। चाचा तुम हस्तिनपुर जार्द्द
समाचार सब भाषो मोही। दुर्योधन मम भ्राता द्रोही
देत युधिष्ठिर को दुख भारी। ताते सब तहँ अहैं दुखारी
सुनि अक्रूर तहाँ पगु धारे। हरि हलधर निज भवन सिधारे
तनिक प्रेम युत चन्दन लार्द्द। कुब्जा गृह गवने यदुराई॥
जो नर प्रेम सहित हरि पूजहिं तिन्ह सम हरि प्रिय नहिं कोउ दूजहिं

दोहा

कूबरतन सीधो कियो अस कृपाल यदुवीर।
सदा भक्त वश रहहिं प्रभु जगन्नाथ मतिधीर

इति श्री कृष्ण सागरे शुकदेवपरीक्षित सम्वादे श्री कृष्णदास जगन्नाथ कृते कुब्जा केलि अक्रूर रथारूढ गमनो नाम अष्टचत्वारिंशोऽध्यायः ४८॥

दोहा

आये जब अक्रूर तहं शोभा नगर अपार।
रहे नृप पांडू के बना। मन्दिर बापि चहार

चौपाई

देखत हर्षित गो अक्रूरा॥ दुर्योधन की सभा हजूरा॥
बैठ रहे जहं भीष्म पितामह। करन बिदुर अरु अश्वत्थामह
धृत राष्ट्र द्रोणादिक जेते॥ बैठारे अक्रूरहि तेते॥
दुर्योधन आवा अभिमानी। कुशल पूछि हरि दे दै तानी
तब निज उर अक्रूर विचारा। सहि न सकत दुर्वचन गवारा
लीन्हों भक्त विदुर संग सेऊ। आये भवन युधिष्ठिर तेऊ॥
देखा कुंती कहं दुख भारी। पूछन लगी कुशल असुरारी
दुर्योधन मोहि अधिक सताये। कहु कब अहैं श्री यदुराये

दोहा

एक बार तेहि भीम को। दीन्हे सिगरे खिलाय
अपर लाह के कोठ रवि पावक दियो लगाय

## चौपाई

कहि दीजो तुम विनती मोरी॥ सुनि हरि मोहिन छाड़े भोरी
आदि सुतन के सहित उबारे। हम दीनन के सब दुख टारे
कह अक्रूर सुनहु तुम माता। अहहैं सपदि प्रयाम मृदुगाता
मोहि संतोष देन हित तोरा। दीन्हो है पठाइ चित चोरा॥
करहु न शोच हृदय कछु अपने। हरि सहाय तेहि दुख नहिं सपने
अस कहि बहुरि गये सो तहवां धृतराष्ट्र के बैठा रह जहवां॥
कहन लगे अस ताहि बुझाई। दुर्योधन की मति में आई॥
काहे देहु भतीजन दूखा॥ कर्म करहु जस नर्क के भूखा

## दोहा

अंध भये नहि सूझ कछु तब धृतराष्ट्र विचार
लागु कहन अक्रूर सुनु का अपराध हमार।
मैं रहु हरि के भजन में करहिं सकल मनभाव
माया प्रबल जगत पति अन्न करि हैं पचनाव
अस कहि कुंतिहि धीरदे हरि पहँ गो अक्रूर
समाचार सब कहि दिये गये बहुरि निजपूर

## सोरठा

तब हरि कीन्ह विचार युद्ध महा भारन करिय
टरिहौं महि को भार देहौं सुख सब पांडवन
कहेउं कथा पूर्वार्द्ध। लीला ब्रज मथुरा नृपति
अब कहि हौं उत्तरार्द्ध श्री द्वारावति पति रूप।

इति श्री कृष्ण सागरे शुकदेव परीक्षि-
ते सम्वादे श्री कृष्ण दास जगन्ना-
थ कृते पूर्वार्द्ध कथा समाप्तो
नाम उन पंचाशत्तमो
ऽध्यायः ४९ ॥

इति श्री पूर्वार्द्ध कथा समाप्ता ॥

# अथ उत्तरार्द्ध कथा लिख्यते

दोहा

उग्रसेन के राज में ॥ भै सब प्रजा सुखारि
कंस तियन पति विनु दुखी गई गृह पिता सुसारि

चौपाई

मगध देश को नृप बल वाना। कंस स्वसुर जरासन्ध बखाना
कंस तियन जब पिता हिं सुनाई। हते कंस को श्री यदुराई ॥
सुनत कहा यदुकुल को जाये। मारा कंस देखि हौं जाये ॥
अस कहि बोलि भूप बहु लयऊ सैन अछौ हनि तेइस भयऊ
सहस एकैस अष्ट सत सत्तर। येते रथ पुनि अयुत नाग वर
एक लक्ष नव सहस कराला। अर्ध अधिक त्रय सत बल शाला

इन पर चर छासठि हजार पुनि रहहिं सवार प्रमाण असौहनि
संग अक्षौहनि तेइस या विधि लेइ मथुरा परगा चढ़ि बलनिधि

दोहा

भा देवन उर त्रास अति धरणी कंपन लागि।
मथुरा वासी विकल ह्वै सरणागह्या हरि भागि

चौपाई

तब हरि निकट जाय उग्रसेना। मांगा युद्ध करन को बैना॥
जान कहा नृप तब हिं मुरारी। गये समर कछु सैन हंकारी॥
तहं दोरथ भए प्रगट भुआला। एक हलधर लागि एक गोपाला
हरि रथ महं नन्द कि रपाना। सारंगादि भरे तहं नाना॥
दारुक रहा सारथी प्रथमा। हल मूसल रथ में बल रामा
दोनो रथहि चढ़े दोउ भाई। पहुंचे जरा सन्ध कटकाई॥
तब कह जरा सन्ध अभिमानी। बालक तेन हिं युद्ध बखानी
हलधर ते हौं करि हौं जूझा। तब कह हरि सुनु अधम अबूझा

दोहा

निज बल कहहिं न कोइ सूर प्रगट बल युद्धें
सुनि क्रोधातुर होइ। छाड़े सितेइ शायक निकर

दोहा

मथुरा वासी विकल भै तिन्हे देखि बलवीर
मिलि दोउ भ्राता युद्ध करि हनि दीन्हे सब वीर

चौपाई

सरिता रुधिर बहन लगि राई। स्वान लगे सब गिद्दन खाई
तहँ रथ वहन नाव अनुमानहु। भुजा कटे सोइ मीनहि जानहु
योगिनि सहित आय विपुरारी। रुधिर पिवहिं सब भूतन भारी
मारुत लासन संग्रह करेऊ। पावक सबे मृतक कहँ जरेऊ
जरा सन्ध एक तहँ रह ठारा। हलधर गहा गले हल डारा
हनन चहा तेहि जब बलदेवा। कहन लगे तब श्री जगदेवा
लावन और अधर्मिन टेरी। सबहि मारि यहि हति हौं फेरी
छाड़ि दीन्ह ते दूगा निज भवने दूत दीव भादून मथुरा गवने
या विधि असुर सप्त दश वारा। आवा पर न जीत सक हारा।
तब है दुखी जीति वे लागी। तप करवे गो विपिव अभागी
एकहु वार भागि दीव जाहीं। होइ विजय सम मुद्दशक नाहीं
तहाँ देव ऋषि आइ बरवाना। काल यमन मलेछ बलवाना
सो जो करे सहार्इ तेरी ।।। क्षण महँ जीति लेहु नहिं वेरी।
कावुल ता कर वास स्थानी। सुनत वचन हरषा अभिमानी

## दोहा

सुनि सो अस मुनि के वचन कहा तुमहिं तहँ जाय
ताहि सहायक भेजि देहु सुनतहिं गौ मुनि राय।।
तीनि करोड़ मलेछ ले भेजि दीन्ह मुनि राय
जरा सन्ध के कटक मिलि दोनों घरे आय

## चौपाई

तब मुनि विधि के लोक सिधाये दूत हलधर तें कह यदुराये

दोउ दल सैन पहूंची भार्द्। लड़ो एक तें एक विहार्द्॥
तब एक नगर पैठ उत्याता। करि दुरव देत सुनहु तुम ताता
अबहि पुरी द्वारका बसार्द्। मथुरा वासी रिव हौं भार्द्॥
अस कहि सिंधुहि लीन्ह बुलार्द् द्वादश योजन थल निसरार्द्
विस कर्मा को आयसु कीन्हा। सो तहँ जाद् पुरी रचि दीन्हा
सौरह सहस एक सत अठा कथा भवन सब सुन्दर ठट्टा॥
रत्नजटित सब मन्दिर शोभा। चरणि सकै कवि अस जग कोभा
अपर गेह सुन्दर अस्थाना॥ मथुरा वासी हित सुख दाना।
शर बागादि रुचिर तहँ सोहैं। देखत जेहि सुर नर मन मोहैं
अश्व रवान रथ गाड़ी खाना। अस रचि खवरि दियो भगवाना
माया आयसु ते अविनाशी सोवत ही सब मथुरा बासी
धरि आर्द् नहिं जानेउ कोर्द्। सिन्धु शब्द सुनि निद्रा खोर्द्

दोहा

सुना जलधि को शब्द जब जाना नगर है आन
रचना देखत चकित भे धन्य धन्य भगवान।

इति श्री कृष्णा सागरे शुकदेव परी-
क्षित सम्वादे श्री कृष्णदास जग-
नाथ कृते जरासन्ध पराजयो
नाम पञ्चा सत्तमोऽध्या-
यः ५० ॥

दोहा

राजन मथुरा वासिन्ह रारि हरा कामाहिं
हलधर को मथुराधरे गये म्लेच्छ के पाहिं

चौपाई

रारि चतुर्भुज रूप सोहावन। अंग पिताम्बर मुनिमन भावन
यमन देखि आवा बढ़ि आगे। तब त्रिभुवन पति तहँ ते भागे।
हरि इच्छा तारन मुचकुन्दा। यहि कारण भागे सुरवकन्दा
लगा कहन तब यमन पुकारी। भागत किमि हूँ पीठि देखवारी।
तदपि फिरे नहिं त्रिभुवन साँई। यमन हुंगा पाछे ते धाई॥
गंध मादनु गिरि वर की कन्दर पैठ गये जब हीं सुरलीधर॥
सोवत रहेा तहाँ मुचकुन्दा। पीताम्बर दिय उढ़ा आनन्दा।
आपु गये नहँ छिपि भगवाना। यमन हुँ पहुँचि गयो रिसिआना

दोहा

देखि पिताम्बर जानि हरि मारी तेहि यक लात
क्रोधातुर सो वीरवर जब भयो भस्म तेहि गात।

चौपाई

रहा सो श्याम सुंदर छवि हेरी॥ मुक्ति भई याते तेहि केरी॥
कह नृप कौन रहेउ मुचकुन्दा। कहन लगे तब मुनि सानन्दा॥
रहा सो भूप महा बल वाना॥ करत सहाय सुरन विधिनाना
असुरन छीनि लियो सुरराजा युग भर युद्ध कीन्ह तेहि काजा
स्वामि कार्त्तिक आये तब हीं॥ करन सहाय लगे तिन्ह सबहीं
निद्रावश तिन्ह किय विश्रामा। सो गिरि पर सुनहु सुख धामा

देवन दीन्ह ताहि वर दाना। जो जगावे तेहि होइ निदाना
याते तुरत विलोकत ही तन। भस्म भयो सुन राज मुदितमन
सुन नरेश पुनि यदुकुल गाई। दरश दीन्ह मुचकुन्दहि आई

दोहा

दरशन देहु कृतार्थ करि कहा माँगु वर दान
तबमुचकुन्द मुदितमन माँग भक्ति भगवान

चौपाई

भक्ति पाइ कन्दर ते आई॥ देखा लघु नरनारिन पाई॥
जाना कलि को लक्षण जबहीं। तपलगु करन प्रेम युत तबहीं
याविधि पद्म पुराण बखाने। सोइ भये जय देव सयाने॥
जिन गित गोविन्द दिये बनाई। मनहु सुधा रस ते लपटाई॥
तन छूटे भै हरि में लीना॥ सुनि बोले राजा पर वीना॥
काल यमन रहु कौन गुसाईं। कहत भये मुनि वर हरषाई
ताल जंघ काबुल को राजा॥ गर्ग निकट आवा सुत काजा
फल एक ताहि मुनि तब दीन्हा। याविधि ताहि जता वन कीन्हा
मज्जन कर वाई निज नारी॥ भक्षण कहि हहु हृदय सुखारी
ताकी नारि न मज्जन कीन्हा। स्वाद गई फल नहिं कछु चीन्हा

दोहा

तब मुनि कहा भुआल सन होत पुत्र जो तोर
करत सो कर्म मलेच्छ के संशय मिटा बहोर

इति श्री कृष्णा सागरे शुकदेव परीक्षित

सम्वादे श्री कृष्णदास जगन्नाथ
कृते मुचकुन्द तारणा वर्णनो
नाम एकपञ्चासत्तमो
ऽध्यायः ५१॥

दोहा

भूपति मथुरा आद् हरि संग लेइ बल राम।
सेन मले छन की हती क्षण में सुन्दर श्याम

चौपाई

जरासन्ध सेना रण गाजे ॥ ताहि देखि दोउ भ्राता भाजे
जरासन्ध उत्साह के कारण। भागि गये जब असुर संघारन
पर वर्षण गिरि पर चढ़ि गयऊ। पावक ग्राठ लगाइ तेइ दयऊ
अग्नि चहूँ दिशि लहरन लागी दोउ जरे अस जानि अभागी
सैन फेरि आवा रज धानी ॥ मथुरा नगर उजारि निदानी
हुकुम फेरि सब भवन ढहावा। तहँ आपन मन्दिर रचवावा
मगध देस तब गा हर षाई। सुनहु चरित अब दोनों भाई
इत हरि चरणान हाति पहारा। नाद रसा तल बूझि अंगारा
कूदि गये अपने असथाना गिरि तेहि विधि भा अचल निदाना
आद् द्वार का मुदित बिहारी। कछु दिन बीति गये सुख भारी
रेवत नृप विधि आयसु पाई। सुता रेवती को तब लाई॥
संकर्षण ते दियो बिवाही। मुदित भये पुर वर्णि न जाही

दोहा

तब हरि कुण्डिन पुर गये हल धरको लयसाथ
भिष्मक कन्या रुक्मिणी तेहि हरि लाये नाथ

## चौपाई

कह नृप केहि विधि हरो गुसांई। सो सब कथा कहहु सुख
कहन लगे मुनि सुनहु भुआला नृपभिष्मक रह परम द
ताकी सुता रुक्मिणी नामा। अति सुन्दरी सकल गुण
दिवस एक नारद तहं आये। कृष्ण चरित वालि कहिं
याचक हूँ ते चरित गोपाला। गावत सुनि मोहित भद्र
पुनि नारद हरि निकट सिधाये। सुन्दरता तेहि बहु विधि
भये श्याम मोहित तेहि रूपा व्याहन इच्छा भद्र इ

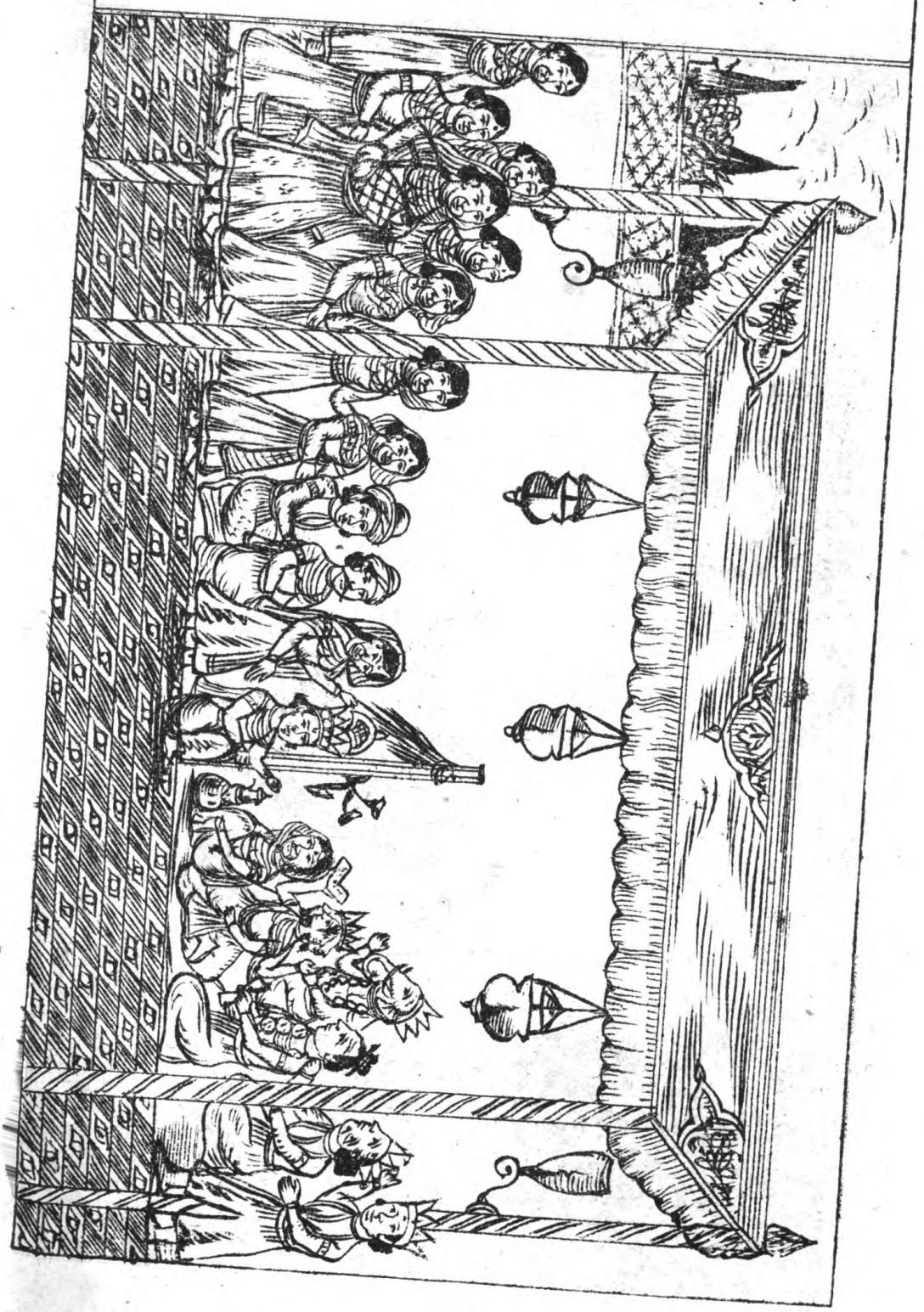
## दोहा

रुकमा गर्ज नृप पुत्र बड़ कहा पिता ते आय
चन्देली शिशुपाल नृप ताहि विवा हो जाय

## चौपाई

रुकम केश लघु बाल भुआला कहा याहि व्याहहु मे
सुनतहिं वचन हरष नृप मानी धन्य पुत्र तुम हहु बड़
पुनि रुकमा गर्ज कहा रिसाई। ताकी जाति जानि नहिं
कोउ कहत वसु देव के बालक कोउ कहें नन्दें पशु पा
अस कहि विप्र तिलक दे भेजा रह शिशुपाल जहाँ त
तिलक लेइ लीन्हा शिशुपाला विप्र जनायो आइ दे
करी तयारी आव नृपाला गढ़ रह मंगल भयो विश

विवाह होना कृष्ण जी का रुक्मिणी के साथ



रुक्मिणी हरण लीला



भयो रुक्मिणीउर दुख भारी। केहि विधि मिलेंगो वरधन धारी

दोहा

विप्र एक तब बोलिके लिख्यो रुक्मिणी पाति
भेजा नगरी द्वार का। जहँ रह कोमलगात

चौपाई

विप्रजुलावहु कृपा बुलाई। तुम्हरि कृपा पति होंय कन्हाई
जन्म प्रयन्न मानु गुण तोरा। सुनत विप्रगा जहँ चित चोरा
सिन्धु बीच वसपुरी सोहावनि। बोलहि विहंग बोलि मनभावनि
घर घर होत भजन यदुराई॥ पुरशोभा कछु वरणि नजाई
देखत गयो धाम भगवाना। द्विजहि जानि दिय सबनेहि जाना
बैठ रहे कृष्ण सिंहासन॥ उठि पग धोइ देइ पुनि आसन
पूछन लगे कुशल हरषाये। कहहु विप्र कहवां तेआये
तब सो विप्र कही कुशलाता। पत्र सुनायो त्रिभुवन दाता
हे प्रभु सुरनी धर अविनाशी। मन वच कर्म चरण की दासी
चाहत हौं पति होहु गुसाईं। करुणा करि आवहु यहिठाईं
तुम प्रभु भक्तन के हितकारी। विना दरश तन कुटत मुरारी
रथ चढि आवहु द्विज के साथा। हरि लै जाहु मोहि यदुनाथा

दोहा

दिन एक प्रथम विवाह तेशिवा पूजिहौं जाय॥
तब हरि लै मोहि जाहु तुम जेहि शिशुपाल न पाय

सोरठा

सुनि श्रस पाती श्याम। गमन करन कुंडिन नगर
किय विचार सुख धाम जगन्नाथ प्रभु भक्ति लखि
इति श्री कृष्ण सागरे शुकदेव परीक्षित
सम्वादे श्री कृष्ण दास जगन्ना
थ कृते कृष्ण पति रुक्मिणी
संदेशो नाम द्विपंचा
सप्तमोऽध्या
यः ५२॥

## दोहा

पाती सुनि तब श्याम कह। विप्र से काल्हि मैं।
जै हौं कुण्डिन धाम। ल्याऊं रुक्मिणि शत्रु हनि

## चौपाई

हरि श्रायसु ते होन विहाना। रथ ल्यावा दारुक रथ वाना।
तब चढ़ि हरि श्ररहिज हरषाई। कीन्ह पयान सुनहु श्रब राई
सगुन नीक हो वत मग जाते। मृगन फिरहि नहँ दाहिन तांते
उग्रसेन श्रायसु ले तब हीं॥ है श्रक्षोहणि सेना सब हीं॥
गये लेइ संकर्षण तहँ वां॥ मिले जादु त्रिभुवन पति जहवां
देखा जादु नगर द्युति सोहै॥ नर श्ररु नारि मुदित मन मोहै
चोवा चन्दन छिर कहिं हारा। श्राव बरात मुनिय सुख भारा
जादु बाग में डेरा लीन्हा। विप्र गमन रुक्मिणि पहँ कीन्हा
नाहि समय श्रावति भइ ब्राता। मंगल चार होत मुद दाता॥

उत रुक्मिणि उर शोचति भारी जानि कुरूप न आय विहारी
किम्वा भूलि गयो द्विज राहा। काहे न आये विभुवन नाहा

दोहा

भूप अगोनी जादव के बसन सबहिं पहिराय।
लायउ ब्राह्मिन हरष हिय जनवासा दियआय

चौपाई

रुक्मिणि शोचति रहीं उर जबहीं सखी एक बोली तहं तबहीं
क्यों तूं शोच करति है बारी। पितु आयसु बिन किमि बनवारी
आवें दुहूं शोच जो अहई॥ सखी एक पुनि या विधि कहई
सखी श्याम हैं अन्तरजामी। आदु अवशि हरिहैं दुख धामी
फरकेउ तब रुक्मिणि दृग वामा जाना अब अहई सुख धामा
भीष्मक सुना शोचित रहजबहिं आदु गयेसो द्विज तहं तबहीं
समाचार द्विज भाषत भयऊ आदु वाग जिमि देरा दयऊ॥
सुनि रुक्मिणि हरषित भई कैसे तपी पाव फल तपको जैसे॥
हे द्विज हौंहूं उकरण नहिं तोही जीवन दान दियो तुम मोही
कृपा नयन देखी मृग नयनी। रमा वास भा ताके अयनी

दोहा

तब द्विज हरि आवन कथा कह भीष्मक तेजादु
हर्षित लघु पुत्र न सहित आवा नृप हर षादु

चौपाई

मणि गरा भेट भूरि धरि आगे। कहन लागु हरि से अनुरागे

धन्य प्रभू मोहि दरशन भयऊ। भले थान तव डेरा दयऊ
जादव गेह भोजन जन अहई। हरि यह भेजि परम सुख लहई
नर नारी हरि देखन धाये ॥ हैं रुक्मिणी योग्य यदुराये।
नृपहु जादव गृह शोचत भारी है किमि व्याह कृष्ण से वारी
नगर देखन पुनि गे दोऊ भाई। नगर लोग तहँ मन हरषाई
वरषहिं पुष्प जन्म फल पावहिं दरश करहिं जेहि शिव अजध्यावहिं

## दोहा

हरि हलधर पुनि देखि तहँ आये वासा माहिं
रुक्मा गृज हरि आन सुनि पितु से पूछेउ जाहि

## चौपाई

आये कहां कृष्ण बल देवा। कह नृप मैं नहिं जानउं भेवा
जरा सन्ध अरु रह शिशुपाला। जादव कहा तिनतें सब हाला
जरा सन्ध जानत हरि हाला। विसमित भयो सहित शिशुपाला
रुक्मा गृज धीरज जब दयऊ। हम तिन्ह वधब कहत अस भयऊ
भरि निशि ते रह शोचत भारी। प्रात होत जब रुक्मिणि नारी
पूजन गई शिवा हरषाई ॥ तब शिशुपाल शोच अधिकाई
हरि हरि लेहिं न रुक्मिणि नारी। सहस पचास वीर बल भारी
दिये पठाइ रुक्मिणी संगा। अस्त्र शस्त्र लेगय बहु रंगा ॥
तिन विच सोह रुक्मिणी कैसे। नभ उडुगण बिच शशिन जैसे
पूजत भई उमा को जाई ॥ कृपा करहु जेहि मिलें कन्हाई

## दोहा

अस कहि बहु विधि पूजिके फिरी रुक्मिनी नारि
उतरथ चढ़ि आये हरी मुसकत छवि बलिहारि
सखी एक तेहि कहत भई आये नन्द किशोर।
रुक्मिनि हरषित देखऊ मुसकन मुखचित चोर

चौपाई

देखत ही वीरन मुसकाना। मोहित गिरे श्रवनि पच ताना
नव वामें कर धरि यदुराई॥ हाथ बढ़ा तेहि लीन्ह चढ़ाई
शंख बजाइ हांकि रथ दीन्हा सखियन डरत गमन गृह कीन्हा
द्वादश क्रोश गये हरि जबहीं। भये सचेत वीर सब तबहीं।
धाये सकल पाछ यदुराई। हत हल धर निज लैने कटकाई
चले तुरंत द्वारिका रामा॥ पचताये भूपन बल धामा।

दोहा

भय आतुर मृग नयनि लखि दिये हार माल पेन्हाय
अब जनि सोचहु रुक्मिनी वरो द्वारका जाय॥

इति श्री कृष्णा सागरे शुक देव परीक्षित सम्वादे श्री कृष्णा
दासजग नाथकृत रुक्मिनी हरनो नाम त्रय पंचासत्तमो ध्यायः ३५३

दोहा

भूपति या विधि कृष्ण जू जबहरि लेगो नारि
सुनि ह्वै क्रोधा तुरत चढ़ि सेन लेइ संग भारि

चौपाई

आये दंत वक्र शिशु पाला। जरा संध रुक्मादि नृपाला॥

लगे कहन दोउ भ्रात पुकारी। भजे जान क्यों पीठ पसारी॥
क्षत्री धर्म नया विधि भाई॥ भाजहिं जोर न पीठ दिखाई
सुनि हलधर सेना लेइ आये। युद्ध करन लागे हर षाये॥
सरिता रुधिर बहन लग राई। भीषमक सुता त्रास अधिकाई
तब हरि विलग लाइ निजजाना देखत जूझहिं हलधर स्याना
छन महँ दीन्हो कटक संघारी व्याकुल किये असुर दलभारी

## दोहा

जरासंध आदिक नृपति देखत कटक बिहाल
भयआतुर गे भाजिकै जहां रहा शिशुपाल॥

## चौपाई

सोचन लगा तबहिं सिसुपाला। सन्मुख नारि गयो लदुग्वाला
या भल मरों जादु रन माही। किमि मुख काहि दिखावों जाही
जरासंध तब कहन बुझाई। जनि सोचहु उर कछु तुम राई
हौं युध कियो सप्त दस बारा। तदपि न छाड़ेउ युद्ध करारा॥
अष्टा दस में भाजे दोऊ॥ तब आनंद हृदय कछु होऊ
या विधि पुरत मनोरथ आपू। तजहु सोक उरते संतापू॥
भा धीरज कछु तब लै सयना। भूपन गये आपने अयना
तब गह लूट समर अधिकाई। वस्तु पठाइ दिये दोउ भाई
सभा बैठ रुक्मा गृज सोचा। लेगो बहिनि हमारी पोचा
अब या पर्न करत हौं आजू। जो नहिं जीतो कृष्ण समाजू
बहुरि न कुंडिन पुर में आऊं। लज्जा वस केहि वदन देखाऊं

अस कहि सैन लेइ संगदेरा। आइ अनी यदुपति को घेरा

दोहा

लागु पुकारन कृष्ण को क्यों धौं भागेजात॥
जीति समर मोहि सकहु नहि आज करो मैं घात

चौपाई

अस कहि बाण विपुल संधाना सबहि काटि दियेकृपानिधाना
पुनि प्रभु शायक चारि चलावा। वाजी रथ दियेतुरत न शावा
एक शरतें सारथि कहँ मारा। एक शर धनुष एक ध्वज डारा
रुकम चलायउगदा अपारा। तिनहुं शरन हरिकाटि निवारा
जब कोइ अस्त्र लगा नहिं श्यामे तब लेइ खड्ग रुकम बल धामे
रथ ते उतरि लगा युधि करना। खड्गहुँ काटि दिये मन हरना
तब हरि कोपि खड्ग लै हाथा। मारन चहा रुकम के माथा।

दोहा

भ्राता को देखत हतन विलपति रुक्मिणिनारि
बोली दीनन बन्धु प्रभु देहु अपराध विसारि

चौपाई

तब प्रभु छाड़ि दीन तेहि भ्राता सूतहि सयन कियेजनत्राता
जानि सारथी हरि की बानी। गहि लीन्हे सिरुकमक अभिमानी
मुण्ड मोछ दाढ़ी मुँडि दीन्ही। चोटी सप्त भरुक कहिं कीन्ही॥
निजरथ बांधि बहुरि तेहि दीन्हा हलधर उत सेना हत कीन्हा
हर्षित आये जहँ यदु नाथा। देखा बंधे रुकन मुँड माथा॥

रुक्मिणि मंगल गाना करहिं सुनहिं सप्रेमजे
जगन्नाथ स्नान सब तीरथ फल पावहीं।

इति श्री कृष्ण सागरे शुकदेव परीक्षि-
त सम्बादे श्री कृष्ण दास जग-
न्नाथ कृत रुक्मिणीमंग-
ल वर्णनोनाम चतु-
र्पञ्चाशत्तमोः
ध्यायः ५४

## दोहा

नृपति दिवस एक गौरिपति रहे ध्यान कैलाश
तहाँ काम सत वन गया नेत्र खुला सुखराशि

## चौपाई

तृतिय नेत्र ते देखा जबहीं। भयो भस्म अवलोकत तबहीं
तब तेहि नारि शोच अति भारी। विकल मीन जैसे विनु वारी।
दशा देखि तेहि कह त्रिपुरारी अब जनि शोच करै तू बारी।
जब यदु वंश लिहे अवतारी। रुक्मिणि होइहि कृष्ण किनारी
तिन्ह कर सुत है है पति तोरा। शम्बासुर गृह जात बहोरा
तेहि गृह रह तू दासी होई। तब पति मिलत तोहि सुनु सोई
सुनि अस रूप नेह धरेऊ। पाक करन ताके गृह रहेऊ।
माया वती नाम तहँ धारी॥ भई सिरो मणि सब गृह नारी
कछु दिन गत जन्मा तहं कामा रुक्मिणि उदर तेज रवि धामा

दोहा

तबहिं योतषिन बोलिके पूछनलग वसुदेव।
जन्म लग्न याके कहहु कहा सकल मुनि लेव

चौपाई

यह बालक श्री कृष्ण समाना। जलमहं दिवस कछुक रहिनाना।
बहुरिपुमारि मिलत पितुआई। सुनहु भूप याकी प्रभुताई॥
नाम प्रद्युम्न राखि तबदीन्हा। दछिना पाद् गमन गृहकीन्हा।
तब नारद शम्बर गृह गयऊ। जाद् ताहि असभाषतभयऊ।
तवरिपुजन्म कृष्ण गृह लीन्हा सुनतहि असुरगमन तहं कीन्हा।
रारवा रूप पवन भूपाला॥ ठड़ा लेद् के कृष्ण के लाला।
दिवस अष्ट दश के रहे कामा। दियो नाद् जलमहं सुरधामा।
यहां भेद नहिं जानेउ कोई॥ सुत न पाद् रुक्मिणी अति रोई

दोहा

मत्स एक निगला तहां यदु नन्दन के लाल
किये सोद् प्रति पाल तहं कृष्ण लालबे साल

चौपाई

केवट गहा मत्स सोद् जाई॥ भेद दियो सम्बा सुर आई
असुर भेजि दीन्हा जहं नारी। जब तेद् ताके उदर बिदारी।
श्याम रूप बालक कहं देखा भद् आनन्दित हृदय विशेषा
तेहि औसर नारद तहं आये। समाचार सबरतिहि सुनाये
यह तव पति यदु वर गृह जाये शंभु कृपा याको तुम पाये।

जब यह बालक होत सयाना। शम्बासुर को करत निदाना।
तोहि लड़ जात हरिका धामा। जहां रहत लोचन अभिरामा।
अस कहि मुनि विधि लोक सिधाये सो लागी पालन चित हरषाये
जैसे बाढ़त पति रति केरो ॥ वैसे उपजत मोद घनेरो ॥

दोहा।

पंच बरष के भयो जब तब दिय वसन पिन्हाय
रति जानत पति भाव से सो टेरत कर माय ॥

चौपाई

भये प्रद्युम्न वर्ष दश जब हीं। उपजा ज्ञान कछुक उर तब हीं
कहन लगे रति से अस टेरी। तुम पति जानत माता मेरी ॥
तब रति कहि दीन्ही सब बाता। जिमि सो तिय जिमि रुक्मिणि माता
जा विधि लायो संवर जाई ॥ सकल कथा तेहु दीन्ह सुनाई
शत्रु तबहि सम्बर को जाना। युद्ध करन हित मन अनुमाना
युद्ध विद्या रति दीन्ह सिखाई। द्वादश वर्ष गयो निय राई ॥
तब प्रद्युम्न को अति बल बाढ़ा। सभा जाद युध अंकुर काढ़ा
तब शम्बा सुर सेना लाई। युद्ध करन लागा रिसि आई
प्रथम गदा ते कीन्हो युद्धा ॥ हरि सुत गिरा दीन्ह कपि कुद्धा
अग्नि बान छाड़े सिपुनि कोपी। बुझा दीन्ह जल बानते सोपी

दोहा।

अमित अस्त्र दिय कारि तब तबहिं भिरउ दोउ वीर
तदपि न हारे कृष्ण सुत तब कोपा रण धीर

## चौपाई

माया तेपाषन वरसावा । निजगुण हरि सुततादु नसावा
तवतेडुलेडुडा ग्रसमाना माराहरि सुतकटिन कृपाना
काटि दीन्ह जब ताको माथा क्षण महँ हती सैन सबसाथा॥
सुरन लगे तहँ सुमन गिराना नरसब कह धनि सुतभगवाना
हरि बिलोकते ग्रसबल जबहीं करते दान लोकप्रिय तबहीं॥
तवप्रद्युम्न रती संग ग्राई ऊडन खटोल चढ़े हरषाई॥
रतिग्ररु पनितहँसोहहिं कैसे श्याम घटा महँ दामिनि जैसे।
गये द्वारिका हरिगृह दोऊ चीन्हि सकी नहिं रुक्मिणि सोऊ
कुचतेपय जब निसरन लागा जान्यो ग्राय गयो सुत त्यागा॥
हरि इच्छा तेनारद ग्रायो । समाचार सुत दीन्ह सुनायो।
तबरुक्मिणि सुत लीन्ह दुलारी देखि पतोह भयो सुखभारी॥
तबदोनो कहँ कीन्ह विवाहा श्री वसुदेव रु मथुरा नाहा॥

## दोहा

मंगलबानी उच्चरहिं घरघर नर ग्ररु नारि।
जगन्नाथ सुत खोयहू पायेगिरिवर धारि॥

इतिश्री रुक्मसागरे शुकदेवपरीक्षित सम्वादे श्रीकृष्ण
दास जगन्नाथ कृते प्रद्युम्नजन्मशम्बरवध
वर्णनो नाम पंचपंचासत्तमो-
ध्यायः।५५।

## दोहा

जिमि सत्राजित यादव मणिकी चोरि लगाय
लज्जित ह्वै पुनि कृष्णको दियो सुताहि विवाहि

## चौपाई

सोइ कथा अब करौं बखाना सुनभुवाल अवदेतुम काना
रविकर तप कीन्हेसि तेइ भारी भयप्रसन्न तबही दिनकारी
मणि यक सेमन्तक तेहि नामा दियेताहि दिनकर सुखधामा
कहन लगे हरषित पुनि ताही यह मणि रहत नगर महँ जाही
तहँ नरोग दुकालहु व्यापै । पूजत नहिं पावहु परितापै॥
असकहि भै प्रभु अंतर्ध्याना सोनिज गले पहिरि गृहआना
मणि प्रभाव रह असनर केता श्रुति विधि पूजन प्रीति समेता
हाटक देइ ताहि मन बीसा लगा सो पूजन आइ महीसा

## दोहा

सोइ मणि के परताप ते होइ गयो धन वान ।
दिवस एक अभिमान युत गयो जहाँ भगवान।

## चौपाई

यदुवंशी ताकहँ जब देखा कहा कृष्ण सौं रविधरि वेखा।
आयेदरशन हेतु गुसाईं । कहहरि यह सत्राजित भाई।
रवि तपते पाई मणि ऐसी । तिन्ह सम जोति देखतहौं जैसी।
विहँसि कहा तेहि गिरिवरधारी या मणि के हैं नृप अधिकारी।
तातेउग्रसेन कहँ देहू ।॰। दोउ लोक महँ जेहि यश लेहू।

लोभ विवस उत्तर नहिं दीन्हा करि परनाम गमन गृह कीन्हा
तहां अनुज परसेन हिं पाई कही कथा मागन यदुराई॥
हैं प्रभु सब देवन पति आपू तिन्ह प्रताप मणि घरा प्रतापू।

## दोहा

सुनि भ्राता करि कोप तेहि बाधि गले मणि सोय
गा अहेर लगि वाजि चढ़ि तहं मृग देखा कोय।

## चौपाई

भाजा मृग तेहि पाछे धावा प्रविशा गर्त व्याघ्र जहं छावा॥
अश्व चरण सुनि शब्द निदाना व्याघ्र लियो तीनो के प्राना॥
सोइ कन्दर रघु कुल मणि दासा पावा यामवन्त सुख रासा॥
व्याघ्र मारि मणि कहं लै लीन्ही रही सुता तेहि खेलन दीन्ही।
मणि के तेज ते कन्दर भारी। रहत प्रकाशित गत अंधियारी।
सत्राजीत सुना तेहि मरना सुनत शोच लागा मन करना।
जाना कृष्ण मांग रह सोई। वन में जाद हते जनि होई॥

## दोहा

रहा शोच में जबहिं सो नारी पूछेसि आइ।*।
समाचार सब कहिदियो जनि भाषेसि केहु जाइ

## चौपाई

नारिन उत्तर नहिं रहु कोइ बानी सखियन ते सब बात बखानी।
कहिदिश केउ हरि के गृह माहीं कृष्ण प्रसेन हते शक नाहीं।
लगा कलंक मृषा यदुराई। जाय कहा बसुदेव हि पाई॥

पुनि लैकछु यदुवन्शी साथा गये कलंक गिदावन नाथा ॥
अश्व रेख पद देखत आये कन्दरा निकट श्री यदुराये।
यदुवन्शी जब देखा तेही जाना व्याघ्र सँहारेउ एही ।।
देखा बहुरि ताहु कर लासा पाई नहिं मणि जब सुखरासा।
भीतर जान चहा यदुराई वर्जेउ यदुवन्शी समुदाई॥
छुटा कलंक जाहु जनि नाथा हमन करहु तेहि वध की गाथा
कहा कृष्ण रहहू सब द्वारा। द्वादश दिवस अवधि निरधारा।
जो नहिं फिरौं बहुरि चलि जाहू असकहि प्रविश गये जगनाहू।

## दोहा

देखा सुन्दर थान तहं यामवन्त को वास।
पलने महं खेलति सुता तेहि कर मणि सुखरास
जामवान रहं सैन में तहं तेहि दासी वेश ।।
हरि मणि लेन चहीं जबहिं दीन्हेसि उठा ऋक्षेश।

## चौपाई

मल्लयुद्ध हरि तासों ठाना रहा सप्त विस दिवस प्रमाना।
क्षुधित होय शोचत जमवाना असको लड़त विना भगवाना।
रामचन्द्र लीन्हो अवतारा श्याम रूप धरि असुर संघारा।
जानि उपासक श्री बनवारी दरशदिये शर धनुकर धारी।
तव अस्तुति लग कर जमवाना नारद वचन सुना रह काना।
यदुकुल हरि लइहैं अवतारा वेना ते रह भास निहारा।।
तुम्हरी महिमा जानन कोऊ आदि अन्त घट घट रह जोऊ

## छन्द

प्रभु अवधपुरी औतार लिये ॥
पुनि जनक सुता ते ब्याह किये।
पितु आयसु वनहि सिधारे जबै।
सिय संग चली रघुनाथ तबै ॥
तहँ रावण हरि जब सीय लई ॥
वन में कपि राज तें भेंट भई ॥
प्रभु फाँदि जलधि हनुमान गये
पुर लंक जराय के खबरि दिये ॥
सिय की सुधि लाइ दई जबहीं।
प्रभु लंक पयान किये तब हीं ॥
तहँ रावण मारि सिया तें मिले
संग लेइ बहुरि निज पुरहिं चले
तहँ सहस एकादश वर्ष प्रभू ॥
करि राज दिये सुख गो द्विज भू ॥
तब रह्यो तिरेता युग आसा ॥
दर्शन की राखत रह दासा ॥

## सोरठा

अवधौंकहुकेहिकाम भया आगमनकन्दरहिं
कहिदीन्हे सुखधाम मणिहि तहौं आये इहाँ

## चौपाई

है संतुष्ट तवहि जमवन्ता कहन लागु सुनिये भगवन्ता
जाम्बवतीमम पुत्री अहई तेहिसमेत दीन्हे उप्रभुकहँई
अंगीकार किये यदुराई। तव कन्या ते व्याह कराई॥
सोमणिदियोदहेजहि राई फिरे ताहि लै त्रिभुवन साँई।
चतुर्विंसदिनसवनर संगा तहँरह फिरे सोचि वहुरंगा॥
गये द्वारिका पुरी मझाई। सत्राजित ते गारि मचाई॥
रुक्मिणदि तेहि गारी देही। संकर्षणवर्जहिं सव के ही॥
हरि सन्मुख सक कालनआई अहहैं अवशि तजहु विकलाई

## दोहा

हलधर के सममान ते भंगो न धीरज काह।
रुक्मिणदि नारी सकल खोजन गई जगनाह

## चौपाई

देवस्थान जहाँ कहुँ पावैं॥ हरि के मिलन सनीता गावैं।
याविधि क्रोस मात्र जव आये मणि तिय संग हरिन वहिं दिखाये
हर्षित सकल गान वहु गावत आई हरि संग वहु सुख पावत।
तवपितु हरि कर दान दिलाये भये संतुष्ट कहा नहिं जावे।
यादवगण कहत हँसि यदुवर मणि न व्याह हित गे ताके घर
सत्राजित हि वुलाइ वहोरी देन लगे मणि हरि वर जोरी।
जाविधमरण प्रसेन नृपाला सो कहि तेहि सव दीन्ह कृपाला
लेइ मणि तेहि क्षण लज्जित भयऊ व्याहि सत्यभामा हरि दयऊ।
रहीजो मणि सेमन्तक नामा दियो देहजहि सोइ सुखधामा

## दोहा

कहा श्याम जनि शोच उर जेहि कछु खोयो जाइ
करत सो शंका सबहि पर मणि न लिये यदुराइ
तव सत भामहि संग ले गै गृह गिरिवर धारि।
सो मणि लियो लजाय कै क्षमा कीन्ह वनवारि
भादौं शुक्ला चौथ को देखा चन्द्र कृपाल ॥
ताते मृषा कलंक भा सुनहुं मुदित भूपाल।
भादौं शुक्ला चौथ को अवलोकै शशि कोय।
श्रवण करै यह चरित नर तो कलंक नहिं होय

इति श्री कृष्ण सागरे शुक देव परीक्षित
सम्वादे श्री कृष्ण दास जगन्ना
थ कृते जाम्ववतीसत्य भा
मा विवाह वर्णनो ना
म षट पंचास-
त्तमोध्या
यः १६

## दोहा

राजन दिन एक कौउ कहा श्याम सुंदर ते जाय।
दुर्योधन पंच पंडवन गिरि कन्दर महं नाय

## चौपाई

पावक दिये सिलगाइ गुसांई। सुनत हि श्री हलधर बदुराई ॥

गये हस्तिनापुर प्रभु जबहीं विदुर भक्त तहँ हरि तेंतबहीं
कहा सत्य प्रभु तव परतापा भया तिनहिंनहिंकछु संतापा
तब हरिबागमें डेरा दयऊ। इत हरिपुर इक अचंभा भयऊ
सतधन्वा यादव रह कोऊ। सतभामा रहि भाषित सोऊ।
सत्राजीत कहा रह नाही ॥ सत भामा तोहि देंव विवाही।
तेहि न देइ सो हरि कहँ दीन्हा तहँ अक्रूर गमन नृप कीन्हा।
कृतवर्मा यादव लै संगा ॥ कहनलगे दोउ मिलिबहुरंगा
सुन सतधन्वा कहीं बुझाई। सत्राजित हरि चोरि लगाई।

## दोहा

पुन तेहि मृषा विवाह की कहि हरिसे करि दीन्ह
तातेमारौ वेग खल सुनतगमन तेइ कीन्ह

## चौपाई

सत्राजीत सयन कर जहवाँ ॥ सतधन्वा भा आवत तहवाँ।
काटि दीन्ह शठता की गीवाँ लय सोइ मणि हाटक की सींवाँ
आपन भवन गमन तेइ कीन्हा जबतेहि नारि आइ पति चीन्हा
विलपन लगी शोच अधिकाई तबलग सतभामा तहँ आई।
शोचिन मातुहिं धीर्य्य धराई पिता लोथ दिय तेलहिं नाई।
रथ चढ़ि गई जहाँ हरि दाता कहि दीन्ही सबही कुशलाता।
सुनतहि तेहि समेत यदुनाथा आवत भये द्वारिका साथा।।
तबसतधन्वा चढ़ि एक घोरा भाजानगर जनकपुर ओरा॥

## दोहा

सतभामा कोभेजि गृह हरिहलधर दोउभाइ
रथ चढ़ि तेहि पाछे गये जोमगजात पराइ।

## चौपाई

कालविवस सस्त्रिगातेहि घोरा भाजत तेहि देखा चित चोरा
संग छाडि अग्रज चढ़ि गयऊ चक्रहि हरितब आयसु दयऊ
चक्र सुदर्शन काटे उ माथा। मणि खोजन लागे यदुनाथा
मिलान तब हलधर पहं आये मिलीन मणि अस जाय सुनाये
अस तिन्ह उर भा शक भगवाना तियहि देन हित करसवहाना
असु उर आनि कहा सुनु भाई नगर विलोकि जनकपुर जाई
तब अइहौं तव निकट बहोरी कृष्ण फिरे बन गे पुर ओरी॥
भूप जनकपुर आवन जानी भवन लाइ राखा सन्मानी।

## दोहा

दुर्योधन सुनि आगमन आइ तिन्हहिं लेजाइ
युधविद्यासी खन चहत कहावलहि शिरनाइ

## चौपाई

देखि प्रेम संकर्षण तेहीं॥ युद्ध करन विद्या तेहि देहीं॥
इत हरि आये जब गृह माहीं कहतियमणि सो मिली किनाहीं
कह हरि मिलीन मणि तेहि मारा सुनि शक भा सत्यभामहि भारा
हरिहलधरहि देन के कारन करत बहाना असुर संघारन।
कृतवर्मा अक्रूरहु तब ही। भाजि गये भय आतुर सबही।
सतधन्वा भाजा रहु जब हीं मणि दियेरहु अक्रूरहि तबही।

कृतवर्मो गादक्षिण आसी बस अक्रूर जाय के कासी ॥
मणि तेद्रव्य मिलत अकूरहि करत कर्म शुभरुचि परिपूरहि।
तातेरोग न व्यापै ताहां । रुषी होय सुख संतत जाहां।

दोहा

मनि लीनों अक्रूर ही जानत दीन दयाल ।
जगन्नाथ तद्यपि नहीं कहा कछुतें हाल ।

चौपाई

गदा युद्ध कछु दिवस सिखाई आये बहुरि कृष्ण के भाई ॥
लोथ निसारित वहि अविनासी निज कर किये क्रिया सुखरासी
जब अक्रूर बुलावन चाहा । रुकमिनि पति सब जग के नाहा
परा दुकाल द्वारिका माहीं आये सरन सकल हरि पाहीं ॥
अस्तुति करन लगे सिर नाई तुम विन को रख प्रान गुसाई ॥
कहं हरि संतत जहि जेहि गेहू सोथल होत अवस विनु मेहू ॥
गे अक्रूर द्वारिका छाडी । तातें अस दुकाल गा बाढ़ी ॥
अब धौं जादु तिन हिं लै आवहु तव नग नारि सकल सुख पावहु
सुनि यदुवंसी कत क सिधारे कहा जाय यदुनाथ हंकारे ॥
सुनि अक्रूर तहां चलि आये छुटा दुकाल सकल सुख पाये ।

दोहा

हरि आय सुतेमनि बहुरि सभा दिखाई जाय।
तव सतभामा हलधरहि मिटा भरम दुख दाय

चौपाई

तव हलधर औरहु अक्रूरा चरन परे श्रीपति सुख मूरा।
करि अपराध छमा वनवारी कहन लगे सब ही सुखभारी
जाकर वस्तु रहे तेहि दीजै। सोनर है तव पुत्रहिं लीजै॥
पुत्र रहे नहिं तव तेहि नारी। नारि न तव कन्या सुत सारी॥
सोउन रहै तव ताके भ्राता भ्रातन होय तो कुलके हु याता।
जेहि कुल कोउ रहे नहिं वाके तव दीजिये गुरू कहँ ताके।
गुरु न होय तो गुरु सुत लेई सोन होय तो विप्रहि देई॥
आनक वस्तु न चाहिय लेना ताते सुत सत्राजित देना॥

## दोहा

सत्राजित के सुत नहीं सत्यभामा कहँ देहु
अस कहि मनि तेहि दिये संशय छूटा तेहु

इति श्री कृष्ण सागरे शुकदेव परीक्षित संवादे श्री कृष्णदास जगन्नाथ कृते सत्यभामा विवाधो नाम सप्त पंचासत्तमोऽध्यायः॥ ५७॥

## दोहा

नरपति सत्राजीत के मरन सुनत चित चोर
फिरे हस्तिनापूर ते गये द्वारिका ओर॥

## चौपाई

भयो समन तव यदुराई। हैं दुख में पांडव बहु भाई॥
चले हस्तिना पूर बहोरी। अब सुन हाल पांडवन कोरी

सुना सकल भावन प्रभु जबहीं पांचोभाइ मिले तहं तबहीं
सादर लेगये मन्दिर माहीं । नारि सब तहँ देखन पाहीं
सिंहासन बैठे यदुराई ॥ चरन धोइ भोजन करवाई
कुन्ती कह प्रभु कहु कुसलाई नीके हलधर अरु पितु माई
किरपा करि आये दुख हरना जानि पांच भ्रातन निज सरना
करहु दया प्रभु दीनदयाला पार्थ आरत सकल विशाला

दोहा

कहत युधिष्ठिर सुनहु प्रभु बरष भरे चौमास
रहि दासन सुख दीजिये तब रहिहौं सुखरास

चौपाई

नयेनये सुख देहिं बिहारी ॥ कुन्ती फूफुहिं भ्रातन भारी
करन अहेर दिवस एकनाथा अर्जुन संग चले बन साथा ।
बन महँ अर्जुन किये सिकारा सामर मृगआदिक बहु मारा
व्याघ्र भालु आदिक बहु मारा गृह पठये आमिष आहारा
प्यास लगी तब दोनो भाई । पान किये यमुना जल जाई
अर्जुन सैन किये तरु के तर उठि पुनि फिरन लगे उरमुदभा
देखा यमुना जल एक मन्दिर तहँ तप करत नारि एक सुन्दर
केहि कन्या केहि लगि तप ठानी पूछा अर्जुन कहत सयानी

सोरठा

कालिन्दी मम नाम भानु सुता तिनको भवन
करौं ध्यान सुख धाम जेहि पति होवैं नन्दसुत

## चौपाई

सकों न जाय द्वारिका धामा हरिसेवहिं तहं बहु सुखिधामा
दीनदयालदया करि आवैं पुरैमनोरथ दरस दिखावैं।
सुनिअस अर्जुन प्रभुपहं गयऊ समाचार सबभाखतभयऊ
सुनत गयेहरि ताके गेहा । उठीप्रफुल्लित सहितसनेहा
हौंप्रभुमन क्रमते तव दासी चहउंजान संगहिअविनासी
मुनिहरिरथ पर लीन्ह चढ़ाई आयहस्तिनापुरहि सुहाई
बिसकर्मा प्रथमहि प्रभुधामा रचा रहाएक अधिकललामा
तहांरखा कालिन्दिहि जाई। धरिएक रूप रहे यदुराई।

## दोहा

आनरूप अर्जुनसहित गये कुन्ती के धाम।
अग्निदेव तहं आयके बिनयकीन्ह घनस्याम

## चौपाई

छुधित अहौं प्रभु चाहौं खाना नन्दनवन तरु बिस्मय नाना
देवराज के सोवन आछे ॥ खानकहा तबहरि तिन्ह पाछे
लैधनु अर्जुन रछन नृपाला। गये लगे बनजलन बिसाला
तबधौं कोपित देवन राजा। मेघराज पठवा संग साजा
आइलगा तेहि जल बरसाना पवनबान अर्जुन संधाना।
तुरतबिगत भा मेघ महीपा अग्नि गये मय गेह समीपा
रहा सोनिसचर हृदै डेराई। आवा अर्जुन की सरनाई ॥
ताते अग्नि भवन तजिदीन्हा मय के उर आनन्दित कीन्हा

## दोहा

एकसभा सुन्दर परम रहन युधिष्ठिर आय
रचि दीन्हे सिंदेखतजेहि उरतेहि लेत चुराय

## चौपाई

बारि सहित जे कुंड सुहावा। सोबिनु बारि दिखनमहं आवा
जोबिनु बारि सोबारि सहेता परत लखाइ सुनहुं नर केता
एकदिवस दुर्य्योधन आवा। बारि देखि जबवसन उगावा
भीमसेन बिहंसे तेहि देखी। बढ़ी सचुता हृदय बिसेखी
लज्जित ह्वै निज धाम पधारा इत पावक लखि रक्षक भारा
अर्ज्जुन कहं दीन्हे रथ एका। माथ एक युत बान अनेका
घटे न बान सिंधु अनुहारी। बाजी चार चर्म तरवारी ॥
गांडिव एक धनुष अति सोहा अर्ज्जुन लेइ गये जहं यदुवर

## दोहा

हरि तहं चातुर्मास रहि कहा द्वारिका जान॥
सुनि पांडव तिय द्रौपदी कुन्ति आदि सकुचानि

## चौपाई

तब धीरज तिन्हदे घनस्यामा कालिन्दी ले गय निज धामा
हरि हि देखि सब पुर की नारी पुरुष सहित भईं परम सुखारी
उग्र सेन ते कह हरि जाई। देहु बिवाह सुता रबि काई।
लग्न शुभ लग्न मांह हरि नाना दिये बिवाह कृष्ण हरषाना
भूप सुनहु अब कथा रसाला मित्रबृन्दा जिमि बरे गोपाला

हरिफूफू राजाधी नामा। तेहि कन्या अति रूपललामा
भई विवाहन योग सोजबहीं मित्रसेन तेहि भ्राता तबहीं
रचेस्वयम्बर तहँ सब भूपा आये हरिदुगये सुखरूपा
हरि छवि देखि मोहित भइबाला डारिदिये प्रभुगल जयमाला
दुर्ज्योधन भाखा तेहि भाई। अस अनुचित देखेउँ नहिं काई
कृष्णा ब्रह्म सुत तुम्हरो मामा। करविवाह सत बहिन ललामा

## दोहा

सुनि अर्ज्जुन प्रभु श्रवन लगि कहा सुनहुँ का बात
जस विचार सोइ करहु अब सुनि हरि कोमल गात
धरि कर सो कन्या तुरित अर्ज्जुन संग चढ़ि जान
चले द्वारिका ओर को रिपुगण चले निदान।

## चौपाई

अस्त्र शस्त्र लै भूपन धाये ॥ सरनि मारि हरि सभहि भगाये
आइ द्वारका कीन्ह बिवाहा अब सुनु चरित अपर नर नाहा
अवधपुरी महं एक भुवाला नग्नजीत तेहि नाम नृपाला।
सत्या नाम सुता तेहि स्यानी व्याह योग भइ तब नृप जानी
रचा स्वयम्बर आ बिधि राई। सप्त वृषभ एक बारहिं आई
जो नाथे सो होवे नाथा ॥ अस सुनि गये तहां सुरनाथा
अमित भूप तहं आये भारी ॥ सकल नाथ कोइ सब हारी
तब हरि सप्त रूप धरि सुन्दर नाथ दिखाये नाथ नृपति वर

## छन्द

भयधरिएकरूपा पुनिसुरभूपा रजुधीढ़े हाथा
देखाजबनरपति भा मुद उर अति सुताबिवाहीसाथा
दियोजौतुकगाई सहसदशराई सुदितसहसत्रयदासी
नवलक्षतुरंगा क्रोडमतंगा रथ नौ लक्ष हुलासी ॥
जबचलेमुरारे भूपनसारे युद्धकियेबलभारे।
गांडिवधनुधारे अर्जुनमारे वानहिंलगतसिधारे
आये तबधामू तियसंगस्यामू नगरभये आनन्दा
सुनिकेहरिआना गावहिंगाना घरघरनारिजनृन्दा

## दोहा

देखि दहेजप्रसंसही सकल नगर के लोग।
हरिहलधरसबदेदिये अर्जुन को करु भोग।

## चौपाई

ताहिदेइजगमें जस लीन्हा कथासुनहुनृपऋजसकीन्हा
रीतिसुकृतगयेनगरकेराई भद्राताहिसुता छबि छाई।
भईजबहिसोव्याहनयोगू। स्वास्वयम्वरगे नृप लोगू॥
तहंहरिअर्जुन संग सिधाये। हरिहिंसुतादियेमालपेन्हाये
तबनृपव्याहदीन्ह यदुराई। तेहिलेगृह आये सुखदाई
मंगल चारकरहिं सब ताहां सुन नृप अपर कथाजगनाहां
रहानगर भद्रा नृप कोऊ। व्याहन योग सुता तेहि होऊ
स्वास्वयम्बरसब नृप आये तहंहरिअर्जुन सहितसिधाये
हरिकहजयमाला सेहु बाला पेन्हादियेउर हरषविसाला

## दोहा

तबनृपदीन्हबिवाहिहरि जानलगे गोपाल
भूपनआयेयुधकरन सरभय भजेकराल
आयेहरिपुरद्वारका नगर भये सुखखानि
रहनलगेप्रभुहरषयुत सँगआदौ परानि

## सोरठा

रहालक्षमना नाम संतजोब्याहीजगतपति
सबसेवहिंसुखधाम जगन्नाथआनंदमगन

इतिश्रीकृष्णसागरेशुकदेवपरीक्षित
संवादेश्रीकृष्णदासजगन्नायक-
तेश्रीकृष्णपंचविवाहकर
नोनामअष्टपंचा
सप्तमोध्याय:

## दोहा

राजनदिनएकदेवऋषि सुरतरुपुष्पसुहाय।
दियेलायकरकृष्णके हरिदियेरुक्मिनिजाय

## चौपाई

तबसतभामागृहमुनिआये दीन्हीयाविधिसार लगाये ॥
रुकुमिनिहरकहंअधिकैप्यारी पुष्पसुगंधताहि दिय डारी।
सतभामाकेउरसिभयऊ याबिधिहरितेहिधीरजदयऊ
सुरतरुतवगृहरोपव लाई सुनतबचनतेहिसीस पराई

धरनिकियेदिन एकतप भारी दरशन दिये विष्णु सुख चारी
कहादेहु अस बर भगवाना पावौं पुत्र महा बलवाना ॥
जोकाहूसे मरै न मारे ॥ तबअस बरदीन्हा असुरारे
होत पुत्र भौमासुर नामा ॥ जीतनसकत कोउ संग्रामा

दोहा

सबभूपन को जीत के देवन जीतन सोइ ॥
सोरहसहस अरु एक सत धरत सुता नृपगोइ

चौपाई

जबहरिलेहिंकृष्णअवतारा तबआयसुतेहिकरिहैंसंहारा
असकहिते भयअंतरध्याना। धरनीतबनिजउर अनुमाना
कहिहौंसुतकिमिलेजो प्राना जबअवतरिहैंहरिगुनखाना
असजिय जानि तजा तपसोऊ कछुदिनमहं एकसुतनेहिहोऊ
अतिबलवंतभया सोनिस्चा जीतिनृपतिकन्यालैनिजघरा
सोलहसहस एकशत रखी औरहु लावन कोअभिलाखी
नृपनसुताउरविलखत भारी तहांदेवऋषिजादु उचारी।
जनिसोचहु तेहैंगिरिधारी लेजैहैं सबही मुद भारी ॥

दोहा

सुनिषबहरि सुमिरनलगीं भौमासुर बलवान
गयाइन्द्रतेयुद्ध को भय सुर दुखितनिदान

चौपाई

कुंडलतबहिंअदीतिहिदीना छत्रदेवराजा को लीन्हा ॥

निजपुर जाय साधु दुख देना दून्दुगवेतब जहं सुर केना
करिअस्तुतिदुख दिये सुनाई भौमासुर प्रभु अधिक सताई
सुनिहरिइन्द्रहि धीरज दीन्हा तबनिजलोकगमनसोकीन्हा
हरि चढ़ि सत्यभामा संग जाना छन महं गये असुर अस्थाना
निरमिन कुधर दुर्ग अति भारा अंतर रचे शस्त्र को सारा ॥
तृतियदुर्ग महं नीर भराई ॥ चौथे मांह अग्नि लहराई ॥
पंचम दुर्ग वायु भरि रहेऊ। षष्टम मनुजाणहि निरसयऊ
सप्तम शस्त्रघात निरमावा। तहां वास भौमासुर छावा।

## दोहा

तहंहरि आय सुपाइके चक्र सुदर्शन धाय।
गरुड साथ गढ़ तोड़िके दीन्ही मार्ग बनाय

## चौपाई

सप्तम द्वार निकट जब गे हरि लक्षवीर आये तहं रिस करि॥
छन महं खगपति सबहि संघारे तब हरिकीन्ह संख धुनि भारा॥
सुनत शब्द तहं जागु मुरारी सोचन लागु हृदै निज भारी॥
कौन वीर अस देखो जाई ॥ ताहि समय मंत्री कह आई
या बिधि सोच करहु क्यों राई हम देखि हों जाइ तेहि पाई
मंत्री मूर त्रिशूलहि लीन्हे ॥ आयो अरुन नयन तहं कीन्हे
आइ त्रिशूल चलावा जबहीं काटि दिये हरि चक्र तेतेबहीं
पांच माथ के रहा सो निसिचर ग्रसन हेत धावा हरि ऊपर

## दोहा

भयआतुर तियदेखिके कादिदीन्ह संग्राम।
जगन्नाथ प्रभु याहिते भयो मुरारी नाम॥

## चौपाई

सुवन सातु सुनि पिता संहारा आयदल लेइअति बिकरारा
चक्र सुदर्शन ते हरि काटा। सुनि भौमासुर तबलेदूदाटा
आवा युद्ध करन हरि पाहीं। गदा चलावत कादत जाहीं
सस्त्र भुसुण्डि आदि बहु छंडे लीलहि कृष्णसभीकहु खंडे
तबकरि कोप खड्ग एक मारा। सोउन लगा तेहि भादुखभारा
जाइ त्रिशूल लाइ गृह भारी। मारन चाहा हरिहि सुरारी।
महि अवतार तबहि सतभामा हतन कहा तेहि श्री घनस्यामा
तबहरि कादिदीन्हतेहि माथा बरखहि सुरनसुमननरनाथा

## दोहा

तबधरनीहै बिकलउर लेइपोता रुप तोह
कुंडल छत्र हुलाइके भेटदेइरिपु मोह॥

## चौपाई

स्तुति करनलगी हरखाई॥ तुम्हरी महिमा जानिन जाई
रक्षा प्रभू मोहि अस बरदाना मम आयसुबिनुसुतननसाना
काहेहनेप्रभू मम बालक॥ तबकरि सैन कहारिपुघालक
सतभामा महि की अवतारा सुनतहिलज्जित भईअपारा
क्षमा करहु प्रभु सुतअपराधा करहुअभयतेहिसुतलखिसाधा
तबतेहिसुतपर कर हरिफेरे। धीरजदिये और निज हेरे॥

धरा पुतोह कहा सुनु साई पावन करहु गेह मम जाई
जाय मनोरथ पूरन कीन्हा राजतिलक भौमासुर दीन्हा

दोहा

भौमासुतभगदत्ततबहि सबही बसन पेन्हाइ
दीन्हेसिराजकुमारिकवि सिबिकामाह चढ़ाइ

चौपाई

नारिनहूं छवि धाम बिलोकी चहाकरन पतिस्वामिविलोकी
हरितिन्ह प्रीत जानिततकाला पढ़ईगेह अनन्द बिसाला ॥
हस्तीसाढ स्वेत नृप दीन्हा। सेहुनारिन संगपठवनकीन्हा
सतभामा संग तब यदुराई। कुंडल छत्र लेइ हरखाई।
गे अमरावति पुरी सुहाई सुरपतिसिंहासन बैठाई॥
अस्तुतिकरन लगा हरषीये। सुनतहिदेव ऋषीतहं आये
कुंडल छत्रतवहिं हरि दयऊ सुरमाता आनन्दितभयऊ
कहहरिमुनितुम इन्द्रतेजाई कहुसुरतरु मांगत भौजाई
नारद कहा सोतिय पहंगयऊ समाचार सबभारवतभयऊ

दोहा

नारिकहातेहिदेहुजनि यहीहरी तब टेक।
याहीगिरिपुजवायऊ कीन्हेसिबिपतिअनेक

चौपाई

तबमतिअंध कहा मुनिपोंई नंदनतरु सकतहुंन जाई
जोलैजाय रूषा बरजोरा ॥ करबयुद्ध तबहम अतिघोरा

कहामुनीसुन गर्व प्रहारी । वृक्ष उखारि गरुड़पर धारी
गयेसतीय द्वारका धामा । किये विवाह सबतेघनस्यामा
दुन्दुभिपुनि नारद सममावा युद्धकरन तातें नहिंआवा
रचारहाबिसकर्मा गेहा ॥ तहांरही सब सहित सनेहा
सबगृहमेंहरिधरि एकरूपा बासकरन लागे सुरभूपा।
सतभामागृहसुरतरु जाई देवकिनन्दन दिये लगाई।

## दोहा

सोरहसहसरु एकशत नारिनसहितगुपाल
जगन्नाथहरषितरहत तेसेवहिंसबबाल।

इतिश्रीकृष्णासागरेशुकदेवपरीक्षितसंवा
देश्रीकृष्णदासजगन्नाथकृते
भौमासुरबधोनामऊ-
नषष्ठितमोऽध्या-
यः ॥

## दोहा

राजनदिनएककृष्णजू रहेरुक्मिनी गेह ॥
सोहबिछावनमखमली बैठेसहित सनेह

## चौपाई

तहांरुक्मिनी चौर डोलावै । निकटबैठिछबिधामधेयावै
हरिमायातेभातेहि गर्वा । हमप्रियअधिकतियनसेसर्वा
हरिअंतरजामी सबजाना । प्रेमपरिच्छाहितभगवाना।

कहा सुनहु नृप कन्या स्यानी छांडि सकल राजा गुणखानी
हमते किये विवाह अबूझा। हमतिन तेनसकोंकरिजूझा
औरहुजो ममभक्तन अहहीं धनविहीन संतत दुखलहहीं
जात अहीर चरावत गाई ॥ निजकुलमहंकलंक तुमनाई
अबधौं असबिचार कहुंजाई करो व्याह नृप धनी बनाई।

## दोहा

सुनिरुक्मिनी कठोरता रोवन लगी बेहाल।
तबधौं हरिधीरज दिये हांसी किन्हेउ बाल।
राखि चतुर्भुज रूपदोउ करते लीन्ह उठाय।
एक करते मारुतकरत एक ते अलक बनाय

## चौपाई

तब हरिदेखि कहत सो बाला असकठोर किमि कहेउ गुपाला
हौं मनक्रम ते तुम्हरी दासी तुमते बड नृपको अविनासी
तीन लोक के हौ तुम देवा ब्रह्मा रुद्र न जानहिं भेवा
तुम्हरे भक्त रहहिं धन हीना भजन न होय धनी ते कीन्हा
कहहरि कियेउ परिक्षा प्रीती सो पाई सब भक्ति की रीती
अवजनि सोच करहु तुम बाला रहहु प्रसन्न हृदे सब काला।
प्रेम देखि तोहि लायउं गेहा छांड़िदेहु मन के संदेहा ॥
सुनिहरषित भइ रुक्मिनि नारी सेवन लगी गोबर्धन धारी ॥

## सोरठा

कहहिं सुनहिं जे लोइ प्रीति कथा यदुवीर की

प्रीति तिनहुंहिय होइ जगन्नाथदम्पति विषे
इति श्रीकृष्णासागरे शुकदेवपरीक्षितसम्वादे
श्रीकृष्णदास जगन्नाथकृते श्रीरु-
क्मिनीमानलीलावर्ननोना
षष्टिमोऽध्यायः

## दोहा

सोरहसहस अधीकशत आठनारि में श्याम
धर्मगृहस्ती राखही पतिव्रत राखत बाम

## चौपाई

दशदश पुत्र सभी कहजाये श्यामरूपशोभा अधिकाये
एक एककन्या सुन्दर भारी कोकहिसकतहरनमहतारी
एकलक्षएकसठसहसमहीसा भयेसुवन श्रीपतिजगदीसा।
सोरहसहसएक शत आठा एतेभयेसुता के ठाठा ॥
तिनते पुत्र भयेजग जेते। सकेन कबि कोउभाषन नेते
भयेप्रद्युम्न आदि रुक्मिनी भान आदिसतभामहिंधनी
साम्ब आदिजाम्बवतीसुहाई सुरतिआदिकालिंदिहि राई
श्रीमानादिक सत्या जानो वरधोरवादिलछमना मानो
वरक आदिमित्रविन्दा केरे जुह्नीत भद्रादि घनेरे ॥
नाम्रजितदूजे दत मानो ॥ एदोऊभ्राता हलधर स्याना
रहेरोहनी के दोउ जाये ॥ क्षीरकहींनृपसुनुचितलाये

## दोहा

प्रद्युम्नज अनिरुद्धभा तिनके सुत बलनाभ
हरिपुत्रन करसिसुचरित मातुन को सुखलाभ

## चौपाई

हरिसुत होनसुनाजब काना रुकमजाइ असतियहिबखाना
कन्या व्याह करन के हेतू ॥ स्वयं स्वयम्वर असउर चेतू
रुक्मिनि बहिन मोर सुतसंगा बोलिपठावहु हृदय उमंगा
सुनि सो बिप्र पठावा लेखा सुनि रुक्मिनी कहा सुखलेखा
आयसुपाइ पुत्र संग लीन्ही नगरभोज कटजावा कीन्ही
देखिहृदयदम्पति सुख पाये रुकमनारितब कहहरषाये
करो बिवाह सुता ते मेरी ॥ अरुनिज सुततेमोद घनेरी
सुनिरुक्मिनिकहकरुजनिब्याहा भ्राताचरितनजानत काहा
करैकदापियुद्धविकराला । सुनतरुकमआनन्दविशाला
लगाकहनकरि होंनहिं रारी करोंनिवाहनात नव भारी

## दोहा

असकहिसंगप्रद्युम्नले गयासभा के बीच
रहेजहांवरभूप सब नृपपरमति के नीच

## चौपाई

रुकमावतीफिरी चहुँओरा मालपेन्हायोसुतचित चोरा
तबरुकमाग्रजसुता बिवाही जौनुकदेइबिबिधबिधताही
बिदाकियोसंगसुतासम्मानी रुकमिनिलेइचलीहरषानी
संगमहंभूपनघेरो आये ॥ सरतेसुतहरिसबहिभगाये

गये द्वारका रुकमिनि राई। घरघर होवन लगी बधाई ॥
लेगद्द दुल्लह दुलहिन गेहा बिते दिवस कछु विनु संदेहा
तबभा पुत्र प्रद्युम्नहि राई। नाम भया अनिरुद्ध सुहाई
दिये हरिदान द्विजन सन्माना भयो योति विन कहं सुखनाना

## दोहा

पौत्र होन सुनि रुकम अस लिखा पत्र सुनुनाथ
मम पौत्री तेव्याहकर आपन पौत्र के साथ ॥

## चौपाई

सुनिहरि लेद्द राजायसुतबहीं हलधरसहित गयेतहंसबहीं
भाविवाह अनिरुद्धहि राई जौतुक रुकम दिये बहुताई
तबकलिंगदेशीय नृपाला कहा रुकम से सुनहु भुआला
पांसा खेलवहलधर साथा बोल लेहु तुम रेवती नाथा
जीतिसको नहि आनउपाई सुनितेद्द बोलिलियो हरिभाई
खेलतप्रथमहारिगे हलधर बोलतभे रुकमहि प्रभुरिसकर
दसक्रोडकी बाजी लाई ॥ अब कीअवस जीतिहों राई
याबाजी जीतौ हरि मीता भूपन कह्यो रुकम गो जीता।
तबतेहि छाड़ि बाजिपुनिलाई सर्बदर्ब जीते हरि भाई ॥

## छन्द

तब छाड़िहलधरबहुरिबाजी जीतिलीन्ही सर्बकी
सबभूपबोलेबहुरिजीतो रुकम नृप सब दर्बकी।
सुनिरीस करि हलधरबहोरी छाड़िपुनि जीततभये

सबभूपरुकम समेतबोलेरुकमसबधनजितगये

## छन्द

तबभानभवानीजितगुनखानीप्रीतनआनीभूपनमन
हलधरीसमानीमूसलआनीकियेनिदानीरुकमतन
तबकलिंगकेराजाकहसुखसाजाऔरसमाजाभूपनके
केहुतोड़ानासाप्रभुसुखरासाचरनतरासाऔरन के

## सोरठा

काहुभजेनिजधाम याविधिहरिनिजपुत्रको
गयेद्वारकाराम करिबिवाह मंगल सहित
घरघरमंगलचार होनलगे भूपाल सुनु ॥
उग्रसेनसुखभार कहाकृष्णरुकमबधन।

इतिश्रीकृष्णसागरेशुकदेवपरीक्षितसम्वादे
श्रीकृष्णदासजगन्नाथकृतेअनिरु-
द्धबिवाहरुकमबधोनाम
एकषष्ठितमो
ऽध्यायः

## दोहा

नरपतिनृपबलिकेरहे सतसुतअतिबलवान
अतिसहिबानासुरभया नृपसोनितपुरजान।

## चौपाई

सोतपकियोउमापति भारी दरशदियेतबही त्रिपुरारी।

दीजेमोहिप्रभु अस बरदाना सुरनरकरेनकोउ निदान
सुनिनेहिबचन कहात्रिपुरारी सहसभुजातोहिहोवतभा
जीतिनसकतभुवनदसचारी सुनिबरभयासुदिततेहिभा
प्रभुप्रतापउतनहिभुजपावा सुरनरजीतकेनिजबसल
मिलानकोइकरन युधजबहीं संकरषनअसभारवातब
विनुयुधकियेभुजालगभारी बतादेहुप्रभु बली बिचा
जानूंतुमसमजगनहिंआना तातेतुमहिलरहु हरख

## दोहा

कहशिवकछुदिनगतभये लीहेकृषणअवतार
तबकरिहेयुधितोहिसन सुनिपुनिबानिउचारि

## चौपाई

किमिजानबप्रभु हरिअवतारा ध्वजाएकसंकर दय ।
याध्वजरखनिजमन्दिरऊपर दूटततबजानेहुभैयदुबर
सुनिअसध्वजालाइरखिदीन्ही सत्रुजनेकबआसा कीन्ही।
नारिबड़ीबानावति तेही ॥ पुत्रीजनीएक सुठि देही ॥
ऊखानाम भई सो कन्या ॥ अतिलावन्यरूपतेहुध
सातबर्षजब ताके भयऊ । संकरपहं गुनसीखनग
कछुदिन महंसीखी सबगाना गाइदेतप्रभुकहंसुखन
दिनएकसंकर शिवा समेतू करनलगेबिहार वृषकेत
कन्यादेखिहृदय पचताई यदिहमहूंकछुजातनि
याविधिकरतिहुंहमहुंबिहारा उमाजानिगइताहिवि

श्री कृष्ण जी व शिवजी से लड़ाई होना वास्ते बाणासुर के ॥



## दोहा

कहा मिलन पति स्वप्न में मुनि सोभद्र सुरधामि
निज गृह जाइ के सर्वदा करत चिन्तना स्वामि

## चौपाई

पिता जानि ताकी तरु नाई रवि महल तेहि परम सुहाई।
दिये बैठाइ पाहरू सारा ॥ तेहि कोउ सकै न ताहि निहारा
सोवत स्वप्न तहां तेइ देखी भद्र आनन्दित हृदय बिसेखी
स्याम सुन्दर छवि ताविधि आही ताबिधि नारि निरख्यो ताही
देखि जबहि लालसा मीलन चाही निद्रा भंग भई नृप ताही ॥
तब नहिं देखन महं कछु आई रोदन करन लगी पचताई ॥
देख सचढ़े सो उठी न तबहीं चित्र रेखा एक आली तबहीं।
कहा जाइ क्यों अहहु दुखारी कहो पुरावब आस तेहारी॥
बिधि केयर जाऊं सब ठामा कहु कन्या किमि अहहु दुखधामा।

## दोहा

सुनि रुखा सब कहि दिये तब सो चित्र बनाइ।
दरसावा किन्नर सुरन कहु पति यामें आइ।
कहा नहीं तब रुपा के रूप दिखावो स्याम॥
देखि भई लज्जित महा देखि सुरंजिमि बाम

## चौपाई

तब अनिरुद्ध रूप दरसावा जानि स्वामि ताके मन भावा
चीन रूप लेगद सो नारी। पुरी द्वारका मिलन बिचारी

चक्रसुदर्शन कर रखवारी पाई जाननजब सो नारी ॥
हरिइच्छा नारद तहं आवे दीन्हो मंत्र बताय सुहावे ॥
साधुरूप धरि जादु जो ताहा जानपावतवहीं मन चाहा।
मुनिअस कहि कीन्हा अस्थाना सोधरिरूपगई सो थाना ॥
जहं अनिरुद्ध करत रहे सयना सेज उठाय धरी तेहि अैना।
ऊखादेखि परी तेहि चरना धन्यसखी तुम दुख के हरना
परहितसम नहिं अपरभलाई असकहि सोनिजगेह सिधाई

## दोहा

तबऊखानिजवीनको बजवा शब्द रसाल॥
मुनिप्रद्युम्नसुत चौंकिके उठतभये ततकाल

## चौपाई

पितुसमानमोहिभइगतिआजू आयेयहांकौन ही काजू ॥
तबनारीहिपूछी कुसलाई॥ आवनकथादीन्ह सब गाई
तबकरि दोउ गंधर्ब बिवाहा करन लगेबिलास नर नाहा
भोजन लगी खिलावन सोई भेटनजान कोइ अस गोई॥
गईदिवस एक देखन माता पुरुषसंग तकि फिरी लजाता
चारमासलगि रखाछिपाई। तबभाप्रकट भेद समुदाई
मनबिचार ऊखा गइ बाहर संसय कोइ करै जनि मोपर
चहुंदिसिहेरि गई पति पासा लगेबिहारकरन सुखरासा
रखवारन मनमहं अनुमानी तुरतबिलोकि गई कोरानी
कारनतासुनउर कछु पावा। अकसमात बानासुर आवा

## दोहा

ध्वजा नदीखत पूछसब कहा सुनहु नर नाथ।
दृष्टि गई दिन अमित भा सुनिहरषा अह गाथ।
एक पाहरू कहत तब प्रभु एक नर के बयन।
सुने उसुता के गेह तब मधुर नारि सुखदयन

## चौपाई

नहिं जानों सो केहि विधि आवा बाना सुर तब देखन धावा
देखा सेन किये नर सुन्दर ॥ जाना है यह योग सुता बर।
तदपि अजित ह्वै फिरि तहं आई कहा सुनहु सुभटन समुदाई
सोवत हतन चाहिये नाहीं जगे तबहि कहिहहु हम पाहीं
अस कहि अरु सुभटन बहुतेरे खवाकरन रखवार घनेरे ॥
गया सभा महं इत दोउ जागे चौसर खेलन लगे अनुरागे
चौसर शब्द सुनत भट धाये समाचार तेहि दीन्ह सुनाये
तब बाना सुर कोपि अपारा निरखि जाय द्वारे ललकारा

## दोहा

ऊखा कों भय देखि के पढ़ा मंत्र अनिरुद्ध।
उपल एक सत आठ कर मिला करन लग युद्ध
सोइ मिलते सब बीर को बध कीन्हा अनिरुद्ध
तबहि असुर अहि फांसते बांधा करि उर क्रुद्ध

## चौपाई

सभा मांझ लै जाइ बैठारा ॥ जब ऊखा अस पतिहि निहारा

बिगतलाज बैठी ढिग आई। तब बानासुर उरिसि छाई
कहा पुत्र स्कन्द से जाहू ॥ बहिन बुलाय भवन धरि आहू
सुनि तेहि गृह धरि राखा जाई अरु अनिरुद्धहि कैद कराई
सोचत नारि पुरुष के छोहू उत अनिरुद्ध तीय के मोहू
तब नारद अस आइ सुनाई जनि सोचहु अनिरुद्ध चिताई
औहैं दलली श्री यदु राजू ॥ हनिहैं सब निश्चरन समाजू
तब धौं जाइ असुर सन भाखा कैद करन की तजु अभिलाखा

## दोहा

औहैं श्री यदुबंस मनि सुनितेहि भानहि त्रास
मुनि अस कहितहं तें गये उर अनिरुद्ध हुलास

इति श्री कृष्णमागरे शुकदेव परीक्षित सम्वादे
श्री कृष्णदास जगन्नाथ कृते ऊषा
स्वप्न अनिरुद्ध ग्रहनो नाम
महिषष्टितमोऽ
ध्यायः

## दोहा

भूपति जब अनिरुद्ध के बीति गये बहु मास
प्रगट भया नहिं भेद जब भै यदुबंसि उदास।

## चौपाई

तहां देव ऋषि आइ जनावा जीते हैं अनिरुद्ध दुरावा।
कैद कियेउ बानासुर ताही अहै नगर सोनित पुर माही

सुनिप्रद्युम्न संग यदुराये ॥ चढ़ि खगेश पर तहां सिधाये
अक्षौहनि दादश लै साथा। गये बहुरि श्रीरेवति नाथा ॥
मग बहु नगर उजारत जाहीं पहुंचे जब सो नित पुर माहीं
दूतन बाना सुरहि जनावा। आये हरि संग फौज बनावा
सुनि बानासुर मंत्रिहि टेरी। कहा युद्ध करु लाव न बेरी।
सुनि दादश अक्षौहनि सैना लेइ गयो जहं हरि बल अैना

## दोहा

आपलागु शिव तपकरन हरषित भे त्रिपुरारि
तब बानासुर युद्धलगि गयो सैन ले भारि ॥

## चौपाई

जानि भक्त दुख निजसेनालय युद्धहेतु गे जहं करुनामय।
भूतबिताल प्रेत गन जेते ॥ आये युद्ध करन सब तेते
देखि उमापति करहि सहाई भानिश्वर उर हरष बनाई।
कहा शंभुते तब कर जोरे। तुम बिन कौन सहाई मोरे।
जनादियो तब हरि दलमाहीं जोरि जोरि सब भीरत जाहीं।
भोलानाथ संग यदुनाथा बानासुर अरु सात्विक साथा
स्वामकार्तिक अरु हरि ताता हलधर अरु कुभांड रंग राता
चारुदत्त एक सुत यदुनाथा अरु स्कन्द लड़हि दोउ साथा
कुम्भकरन मंत्री बाना कर ॥ और साम्ब एक सुत श्रीगिरधर
होनलगा या विधि तहं युद्धा जोरी जोर लरहि करि क्रुद्धा

## छन्द

बजमारू बाजा सुरन समाजा कौतुक देखहि मुदित हिये
दोउ प्रभुरन भ्राजा बल गुन साजा सायक घोर चलान भये।
जब ब्रह्मा बाना शिव संधाना हरि निज सरतें काटि दिये
किय प्रगट समीरा शिव रनधीरा निज बल नेहर दूरि किये

## छन्द

तब शिव पावक बान चाला तब भगवान
भगे जल के बान करि शिव बान निदान
सायक पावक चाल शिव गन भये बिहाल
शंभुत जे जल बान राखे गनन के प्रान ॥
पुनि नारायन बान छाडन चहा रिसान ॥
उर कछु सोच विचारि गरबि दयो त्रिपुरारि।
तब हरि आलस बान तजि काटहि हरखान
शिव छाड़े सर तीन काटे हरि परवीन ॥
तब कोपि के श्रीभगवान मारा ऐसो बान।
गिरे शंभु महि आइ छन छन लै जमुहाइ

## दोहा

कार्तिक श्री प्रद्युम्न दोउ युद्ध करहि रिसिआय
तीन बान प्रद्युम्न तब मारा मोरहि धाय ॥

## चौपाई

उड़िये व्योम सो करत जुमारा तब प्रद्युम्न रूप महरिहि उचारा
नाते कार्तिक करत जुमारा देहु निदेश करों संघारा ॥

कहा स्याम तब सरहति नाना गिरा दीन्ह मूर्छित अकुलाना
हलधर साम्ब मंत्रि दोउ मारे तब बाना सुर भगा दुखारे ॥
दो दो शर एकहि धनु धारी ॥ लागु करन युध संग मुरारी ॥
तब हरि निज सर मारि गोसांई काटि दिये तेहि तिल की नांई
अश्व सारथी सकल निपाता बाना सुर भागा दुख पाता ।
पांचजन्य हरि संख बजावा ताके पाछे जान हंकावा ॥
नाम कोट राजा की माना आई नगन जहां सुख दाता
नयन मूंदि दीन्हा यदुराई कारन पाप होय बहु नाई ॥

## दोहा

तब लगि बाना सुर तुरत एक अछौहनि सैन
लेइ आवा रनभूमि में जहां रहे बल अैन
तब कोटर भवन गई भया युद्ध अति भारि
तन महँ रिस सब को हते गया सरन त्रिपुरारि

## चौपाई

भक्त दुखित लखि भोलानाथा बिषम ज्वर जाके त्रिय माथा
त्रिय पद त्रिय चक्षु अरु षट हाथा पठवा आइ सो दल यदुनाथा
कीन्हा ज्वर ते बिकल भुआला तब ते सरन गहा जन पाला ।
शीत ज्वर पर्गट किये यदुबर हारगया तब ही शिव के जर
कहा बचावहु शंभु पराना ॥ सीत ज्वर दीन्हो दुख नाना ।
कहा शंभु जाहू हरि पाहीं ॥ तिन्ह बिनु रक्ष सकत को नाहीं
सुनत हिं गया कृष्ण के सरना छमा किये भक्तन भय हरना

ममभक्तन जनि सतवहु काऊ जाहुनिकट शिव तुमसतिभाऊ

## दोहा

याचरित्र जोनरसुनिहि ज्वरनहिंव्यापतनाहि
यद्यपिहै छुटजायतो सुनत गया शिवपाहि

## चौपाई

भैयदुबंसी सकल सुखारी ॥ बानासुर लै सस्त्रन भारी ॥
करसहस्त्र महं आवा धाई चक्र सुदर्शन ते यदुराई ॥
चारिभुजातनिसबदियेकाटी मिलिगागर्बतनाहि नृप माटी
तबशिवलै तेहि आपनसाथा छमा करावनगे जहं नाथा ॥
अस्तुतिकरहि प्रचारि प्रचारी जय उत्पतिपालनलयकारी
निजजन हेतु सगुनतनधरहू दुष्टनहति महिके दुखटरहू ॥
जन्मपाइ नर तुमहि नभजहीं तेविषलेइ अमियकहंतजहीं
जापरकृपा करौ जग नाथा सोजानहि कछुतुम्हरी गाथा

## दोहा

तुम्हरीकृपा तेहमहु अज देहि काहु वरदान
सोसबसत्यतुमहिकरहु धन्यजोरतभगवान

## चौपाई

बानासुरहै बस अजाना ॥ जानतरहा मोहि भगवाना
ताहिछमहु अपराधगोसाई करहु अभय संतनसुखदाई
सुनिप्रभुकहा सुनहु गौरीसा हमतुममेंनहिं भेद जगीसा
हमतुमभें जो भेद बखाना सोनर जानहु नरकनिसाना

याको अभय रहा वर आगे सुनि तुम संशय करहु त्यागे।
अस सुनि शंभु गये निज धामा बानासुर कह करि परनामा।
पावन करहु गेह सम जाई निज सुत बालक लेहु बिवाई
सुनि हरि गये ताहि के गेहा चरन धोइ तब सहित सनेहा।
सादर भोजन दीन्ह कराई॥ दिये अनि रुद्धहि बंदि छुड़ाई
ऊखा बोलि बिवाहे दोऊ। यौतुक बहु धन दीन्हा सोऊ
सिंहासन हरि ताहि बैठाई। सब बिधि धीरज दिये बनाई

## दोहा

याबिधि पौत्र बिवाहके गये द्वारका धाम॥
होहिं नगर मंगल महा मुदित कृष्ण की बाम

इति श्री कृष्णसागरे शुकदेव परीक्षित सम्बादे श्री कृष्णदास जगन्नाथ कृते ऊखा चरित्र वरननो नाम त्रिषष्ठितमोऽध्यायः॥६३॥

## दोहा

भूपति नाग के बंस में अति धर्मी नृग राज॥
पाई गिरि गिट देह सो तनिक दोष के काज

## चौपाई

तिनकर कथा सुनहु चित लाई कहौं नृपति सोइ सकल बुझाई
रहा नियम अस राजा राई॥ दिन प्रति करत दान बहुताई

सहस गाइ विनु कीन्हे दाना करत न भोजन भूप सुजाना।
किया रहा दिन एक गो दाना गई भागि सो धेनु निदाना॥
सोइ अपर द्विज को देदीन्ही प्रथम बिप्र निज गो कहं चीन्ही
लरत गये दोउ जहं रह राई कहा भूप तब तिनहिं बुझाई
बिप्र एक लछ मुद्रा लेहू॥ गाय एक ब्राह्मण कहं देहू।
सुनत बचन काहू नहिं माना गये कोप करि गेह अपाना।

## दोहा

दूत सोचा नृप भांति बहु भया दोष अनजान।
कछु दिन में भा मृत्यु तेहि कह यमराज बखान

## चौपाई

धर्मधुरंधर हौ तुम राया॥ पर एक अघ पुन बीच समाया
सो अघ तुम कीन्हा अनजानी प्रथम हि भोग करहु का ज्ञानी
कह नृप प्रथम भोगि अघ जाला पाछे धर्म कर्म सुख माला।
गिरिगिट होय कूप तब आया ताहि निकरगे सुत यदुराया
लगे निसारन जब नहिं पाये समाचार तब हरिहि सुनाये
तहं अंतर जामी भगवाना चरन छुवाये जादु सुजाना।
धरि तेइ रूप भूप सम राऊ॥ अस्तुति करन लगा तति भाऊ

## दोहा

मांगा बर हरि भक्ति तब दीन्हा श्री यदुबीर॥
चढ़ि बिमान सुरलोक को गयो भूप मतिधीर
दूत हरि निज बालक सहित गये प्रबोधत गेह

मानहु सब बिप्रन कथन सेवहु सहित सनेह
कहा सकल उग्रसेन ते क्रोध प्रबल महि देव।
जगन्नाथ तिन सुनतही करन लगे द्विज सेव।

इति श्री कृष्णसागरे शुकदेवपरीक्षित सम्वादे श्री कृष्णदास जगन्नाथ कृते राजा नृग मोक्षनो नाम चतुःषष्टितमो ऽध्यायः॥

## दोहा

राजन हलधर एक दिन कहा हरिहि समुझाय
ब्रज बासिन सुधि नहिं लिये तिन्ह धीरज दै जाय

## चौपाई

आयसु देहु जांउ तह भाई॥ जान कहा तब यदुकुल राई॥
हल मूसल लै रथ असवारा॥ चले रेवती रमन सुखारा॥
मग में भूप मिलहिं सब जेते आदर करहिं सकल मिलि तेते
सांदीपन गुरु के गृह आये दश दिन तहं रहि बहुरि सिधाये
आय गये वृन्दावन माहीं॥ तहं सब दुखित निहारत जाहीं
गायन चरहिं न पंथ निहारत। ग्वाल बाल प्रभु विरद उचारत
सुना आगमन प्रभु तहं धाये। गोपी ग्वाल मातु नन्द राये॥
कीन्ह दंडवत हरि पितु माता भये सकल तहं पुलकित गाता

## दोहा

नन्दरानी हर्षित महा लेइ गई निज गेह॥

कुसल कृष्णसब द्वारका पूछा सहित सनेह ॥

## चौपाई

नीके उग्रसेन यदुराई ॥ जिन ढानी ऐसी निदुराई ।
जिन बिन निमिष रहीं नहिं जाई राजपाट सो रहे लुभाई ॥
अति अहै दूर द्वारका रामा करत्यूँ नन दरसन सुख धामा
कबहूँ धौं सुधि लेहि बिहारी अस कहि रोवत हरि महतारी
तिन्ह धीरज हलधर बहु दीन्हा संध्या समय गमन बन कीन्हा
राधादिक गोपिन तहं आई ॥ पूछन लगीं कुसल यदुराई ॥
कबहुं कि सुध प्रभु लेहिं हमारी जब ते गे सब सखिन बिसारी
तब तें जोग कथा समुझावन । ऊधो कह भेजा मनभावन
कोउ कह राम बहुत हरि ब्याहे सब का सखिन मिलिन चित चाहे

## दोहा

राधा ते प्रीतम नहीं ताहु विसारी नाथ ।
स्याम बरन सम स्याम मन सदा कपट रह साथ

## चौपाई

हलधर गौर बरन छल हीना इनते राखहु प्रीति नवीना ।
सुनि हरि भाना कहत बुझाई रहिहु इ मासा रास बनाई ॥
पूर्ण मनोरथ सब के करिहौं । अति सुख देइ सकल दुख हरिहौं
चांदनि रात पूर्निमा माहीं ॥ सब सखियन सजि आई ताहीं
कहा करहु प्रभु रास बनाई ॥ अंगीकार किये हरि भाई ॥
तब सब रास करन को साजा आपहि बने आइ गे बाजा ।

सीतल मन्द सुगंध बयारा॥ बहन लगी तहं जमुन किनारा
तहं निरतत ससिश्रम संग हलधर बरुन लाइ दियबारुनि मुदभर
सखियन संग पान करि राई॥ कहा जमुन ते कृष्ण के भाई

## दोहा

बिहरन हित मोहि लाउ जल करबहु मोहि स्नान
सुनि जमुना नहिं लायऊ तब प्रभु कोपि निदान
खींचि लीन्ह जल यमुन कर हलते हलधर बीर॥
तिय सरूप धरि कहन लगि चीन्हें उनहिं मतिधीर
क्षमा कीन्ह अपराध तब कीन्हो जलहि बिहार
गा विधि करि दुइ माम प्रभु रासदिये सुखभार॥
दिन को सुख देनन्द महरि निसि सखियन संग रास
पुरी द्वारका जान को तब बोले मुख रास॥

## सोरठा

मातु तबहि यदुबीर हित दीन्हो बहु बस्तुले
सखियन को दै धीर कालिन्दी भेदन चले
कहा हाल सब जाय तादिन ते यमुना तहां
बांके बहत सुहाय जगन्नाथ हरि भ्रात कृधा।

इति श्री कृष्ण सागरे शुकदेव परीक्षित सम्वादे श्री कृष्णदास जगन्नाथ कृते बलदाऊ वृन्दावन गमनो नाम पंचषष्ठि तमोध्यायः॥

## दोहा

भूपतिकोउकाशीनृपति पौंडरीकजेहि नाम ॥
बलतेगर्वितहोयके रखा रूप घनस्याम ॥

## चौपाई

दारुभुजा दुइ लिये बनाई ॥ कृष्णायुध सब रखा सजाई ॥
कहासबहि कह पूजहु मोही मृषाकृष्णसबजानहु वोही
हमहिंरूपधरीबिबिधप्रकारा रावनादिअसुरन को मारा ॥
मूढ़ सकल पूजन लग नाही। ज्ञानीसपनेहु सुमिरतनाहीं
मानतजेपूजहिनिरलाजा। देततिनहिंदारुन दुखराजा
भानेहिउरतबगर्वबिसाला पढ़वाबिप्रजहां गोपाला ॥
कहेहु विप्र छांड मम वेखा। नतकरिहों मैं युद्ध बिशेखा
सुनिसो बिप्र गयाहरिपासा आदरकान्ह बहुत सुखरासा

## दोहा

समाचारसब कहिदिये सुनिबोले यदुनाथ।
जाहु बिप्र कहु राजते आइ लड़व तेहिसाथ।

## चौपाई

असकहिलै यदुबंसिनसाथा कछुदिनमें पहुंचे यदुनाथा
जाइ नहां हरिशंख बजावा तबनृपसंग सेन ले आवा ॥
दुइ अच्छौहनि रहा प्रमाना अपरबंधुतेहि संग बखाना
पारसंगरह भूप प्रयागा ॥ तीनअक्षौहनितेहिसंगलागा
आयेजहं बसुदेव कुमारा ॥ मारुमारुधरु करहिंपुकारा।

मारु ग्रादि बाजा नहं बाजहिं कादर डरहिं प्रान लै भाजहिं
चक्र सुदर्शन कहं बल ग्रयना कीन्ह निदेश हनहु सब सयना
ग्रापउतारे मदुक सो राजा॥ कौन मृषा ग्रब कहु निलाजा

## दोहा

भालज्जित सोभूपतब उनसबसैना मारि
कहा चक्र हरि ग्राइके तब कहगिरिवरधारि

## चौपाई

हनहु सपदि ग्रब दोनो राई सुनतचक्र दोउ भुजा गिराई
भाजापौंडरीक तेहि काला काटिदीन्ह तबचक्र विशाला
तासुमित्रकह बहुरि संहारा नृपकर सीस गिराधर डारा।
हरि परसाद भुक्ति सो पाई॥ सतीभई तेहि नियसमुदाई
नृपसुत नाम सुदक्षिन राऊ लगाकरन तप शिवसतिभाऊ
इत हरि सब यदुबंसिसमेता गयेद्वारका कृपा निकेता॥
भयेप्रगट शिवतबबर मांगा बैरि हतो यदि जाचन लागा।
कह शिव बेदमंत्र करिउलटा जापियज्ञ करुनबलेहु पलटा
प्रकट होत एकनिश्चर ग्रार्इ सोइ लड़त तब ग्ररि ते जाई।

## दोहा

ग्रस कहि ग्रंतरहितभये कियायज्ञतेहि काल।
कृत्या नामक राक्षसी प्रकट भई विकराल॥
कहन लगी है शत्रुकहं ग्रहै द्वारका धाम॥
सुनतेहि नगर उजारते गई जहां रह स्याम॥

तबहरिचक्रनिदेसकिय ताहिखदेरा जाय॥
उलटे बिप्रनभूप सुत दीन्हेसिसबहिजराय

## सोरठा

तबकाशीकोजारि आय कह्यो हरि से कह्या
कासिपुरीकीनारि गारि देहि पौंड्रीक सुत

इतिश्री कृष्णसागरे शुकदेवपरीक्षित संवा
दे श्री कृष्णदास जगन्नाथ कृते पौ-
ण्ड्रीकवधोनामषट्षष्टि-
तमोऽध्यायः॥

## सोरठा

कहनृपसुनु मुनराय अपरचरित बलरामके
कहियेमोहिसुनाय कहहिमुनीसुनुकर्ण दय

## चौपाई

भौमासूर मित्र एक बन्दर। द्विबिदनामसुग्रीव सखाबर
दश सहस्रगजबलतेहिरहऊ भौमासूरमरन जबसुनेऊ।
करिअनिकोपद्वारका आवा नगरजरायोसब दुख पावा।
सिलगानलेइ कंदरा नाचै॥ रुधिरोपलबहुबिधिबरषावै
याबिधिबहु उत्पात मचाई गया जहां श्री कृष्ण के भाई
रेवत परबतनिकट तलावा तहं समूहगंधर्बनि छावा।
करतेरहे विहार तहं बन्दर गयाबैठ एक तरु के ऊपर
विष्ठा करन तहां सोइ लागा नारिनचीर किन्हेसिमलपागा

तोड़ि दियो बारुनि घट जाई हलधर निसर तहां ते आई।

## दोहा

मारा कंकरि एक तब दिन्हेसि फारि सबचीर
तबतेहि हलधर गहिलिये करिलघु भजासरीर

## चौपाई

धारि सूधरा कार सरीरा ॥ आवा सन्मुख हलधर बीरा
गिरिपादप महिलिये उषारी मारनलागहिविद बलभारी
हललेइधाये हलधर तेहिपर तरु उपारिधावा तब बन्दर
तबहलधर मूसल ते मारा॥ फटासीसबहसोनित धारा
पुनि एक तरुलै मारन धावा मूसलते प्रभु तोरि गिरावा
तबमलयुद्ध करन लगदोऊ देखिसपचर्जमान सब कोऊ
नारिनभयलखितबश्रीहलधर प्रानअंतकिबेदाबिग्रीवबर
देवन आइसुमन वररवाये आनन्दितनिजलोकसिधाये

## दोहा

मारिताहिउडारकरि गये द्वारका धाम ॥
नगर बासिफुल्लितभये सकलपुरुषअरु बाम

इतिश्री कृष्णसागरेशुकदेवपरीक्षित संवादे श्री कृष्णदास जगन्नाथ कृते द्विविद कपि वधो नाम षष्टितमोऽध्यायः

## दोहा

राजन दुर्ज्योधन सुता नाम लक्ष्मना जाहि ॥
भई बिवाहन योग जब भया स्वयम्वर ताहि

## चौपाई

तहं बहु भूपन भये उपस्थित साम्ब गये तहं सुत हरि हर्षित
मोहित भये देखि सो कन्या जयमाला लिये सोहित धन्या
धरि वर जोरि चढ़ा रथ ऊपर चले साम्ब सब गुन बल के घर
दुर्ज्योधन आदिक लै सेना कीन्हो पाछ जहां बल सेना ॥
देखि सबहि रथ कीन्हा ठाढ़ी दुहु दिस सीस तहां पर बाढ़ी ।
कह हरि सुत आवो एक बारा अथवा एक एक समरन हारा
सुनि सन्मुख गा कर्न रिसाई मैं जानो तोहि बल अधिकाई
सजग होहु अब मारों बाना अस कहि बान बिपुल संधाना

## छन्द

तब साम्ब निदारि सिकरि बाना हति रथ बाना रथ घोरे
पुनि दस दस सर दुर्ज्योधन ऊपर अरु सेना बर दिय छोरे
तब निन्ह तेहि काटी ह्वै एक ठाटी बान उलाटी मार लिये
तब हरि सुत ध्याना करि भगवाना सायक नाना काढ दिये

## छन्द

रथ अरु अश्व निपात सबहि तब एक पांति
करही अधरम युद्ध हते बाजि करि क्रुद्ध ॥
सारथि दीन्हे मारि काटि ध्वजा धनु सारि॥

कूदिपरे तब सम्ब कीन्ही युध अविलम्ब ॥
तब कर्ण साम्बहि धारि रथ चढाइ मुद भारि।
भजा हस्तिनापूर कह दुर्ज्योधन कूर ॥
पुरुषारथ कह तोरि भजा सुता लै मोरि ॥
कीन्हेसि कैद मुरारि नारद आय बिचारि।
कहा न कैद करेहु तनिक नहीं दुख देहु।
ऐहैं हरि के भाइ करिहैं अधिक लराइ।
तदपि न छाड़ा कूर मुनि गे जहं सुख मूर
कही सकल दुख बात हरि नाना रिसियात

## सोरठा

कहा जादु लै सैन दुर्ज्योधन जहं युधि करै॥
सुनि कह हलधर बैन हमलाउब श्रीकृष्ण सुत

## चौपाई

युद्ध करन कोनहिं कछु कामा हमलाउब हरिसुत बल धामा
अस कहि ऊधो आदि बुलाई संग अक्रूर चले हरि भाई ॥
जादू बाग महं डेरा दयऊ। तब अक्रूर सभा में गयऊ ॥
समाचार सब दिये सुनाये। दुर्ज्योधन जाना गुरु आये ॥
सादर मिलन गया प्रभु भ्राता पूछन लगा सकल कुसलाता
छुडवन हेत बाल गोपाला पठवा उग्रसेन महिपाला॥
नहिं एहु उचित कांह तुम कीन्हा सिसु कह सकल कैद करि लीन्हा
सुनि सकिय उग्रसेन हि निंदा देखिहउ गे कोपि फनिंदा ॥

## दोहा

हलगडाइमहिपूरिको लीन्ही कोन उपारि॥
यमुनामहं डुबवनचहा तबमिलिकौरव मारि

## चौपाई

अस्तुतिकरनलगे संकर्षन नहिंजान्यो प्रभुतुमअनंततन
याबिधिस्तुतिसुनिहरिभ्राता कोपशान्तिकीन्हाजनत्राता
तबदुर्य्योधनसुताबिवाही यौतुकबहुबिधिदीन्हेसिताही
द्वादससहस गजन केयूथा दससहस्रपुनिअश्वबरूथा
षटसहस्ररथसहसअनुचरी येसबदेइबिदातेइकरी ॥
आयेहलधरसाम्बसतियलय पुरीद्वारकाजहंकरुणमय
कौरवादिकियगर्वबिहीना कहासकलहरिभ्रातप्रवीना

## दोहा

भयेमुदितपुरबासिसब तादिनतेभूपाल।
हस्तिनपुरदक्षिनदिसा ऊचोअहै बिसाल।

इतिश्रीकृष्णसागरेशुकदेवपरीक्षितसंवादेश्रीकृष्णदासजगन्नाथकृतेसाम्बबिवाहकथनोनामअष्षष्ठितमोऽध्यायः

## दोहा

नरपतिदिनएकदेवऋषि गेअमरावतिपूर।
सुरपतिकीदोउतियनको लखतलखासुखमूर

## चौपाई

तब मन मेंकीन्हा अस संशय हैं अनेक तिय श्री करुना मय
सब गृह करहिं स्याम किमि गमनू देखन गये जहां दुख दमनू ॥
तहां बिलोका सोहत बागा फूले सुमन तरुन फल लागा
बोलहिं डार खगन हरषाई गुंजहिं मधुकर सुमन मझाई
बापितड़ाग अमित तहं रहई दुर्गबिसाल सिंधु चहुं अहई
माली गावहि गीत सुहाये नारिन भरहिं नीर तहं आये
महलन रत्न जड़ित तहं देखी प्रथम गये रुक्मिनि गृह पेखी

## दोहा

मोरमूरत तहं असबनी मोहहि जंगलि मोर ॥
आवहिं उड़ि उड़ि देखिके नाचहि तहं चहु ओर

## चौपाई

तहं हरि पहिर गले बन माला पीत पिताम्बर ओढ़ बिसाला
केसर तिलक भाल आसीना रुक्मिनि नारि डुलावत बीना
देखि मुनी कहं उठे मुरारे धोइ चरन सादर बैठारे ॥
किरपा करि मुनि दरसन दीन्हा सब बिधि मोहि कृतारथ कीन्हा
साधु चरन मुनि आवत जहवां सुख सम्पति छावत सब तहवां
तब बोले मुनि हे भगवाना धरि अवतार चरित करु नाना
तुम्हरी महिमा जानन कोई करहु कृपा जानत कछु सोई।
तुम्हरी कृपा आदि भैनाथा दरसन पायो भयउ सनाथा
अस कहि मुनि तहवां ते गवने आदि गये सतभामा भवने ॥

## दोहा

चौसर खेलत तहं लखा ऊधो संग मुरारि ॥७॥
ताबिधि तहं आदर किये जिमि गृह रुक्मिनि नारि

## चौपाई

दय आसीस गये मुनि ताहां हरि तिय जाम्बवती रहि जाहां
तहां फुलेल लगावत देखी फिरे मुनी असजानि बिसेखी॥
निगम मांह कीन्हो है वरजन करिय प्रनाम न आसिष तेहि खन
कालिन्दी गृह गये बहोरी सैन करत पाये संग गोरी ॥
चरनदाबि मुनि देखि सयानी दिये उठाय कृष्ण गुन खानी
कीन्ह प्रनाम तबहि जगदेवा बहुरि देव ऋषि आसिख देवा
तब मित्रबिन्दा के गृह आवत देखा हरि बिप्रन को जेमावत
मुनि कहं देखि कहा यदुराई आपहु भोजन कीजे आई
कह मुनि पाछे करब अहारा सत्या के गृह बहुरि सिधारा
करत बिहार तहां मुनि देखी उलटे पग फिरि गये बिसेखी

## दोहा

भद्रा के गृह तब गये असन करत तहं पेखि
गये लक्ष्मना गेह पुनि मज्जन तहां बिसेखि
सोरह सहस्र एक सत याबिधि सब गृह माहिं
नारद मुनि देखत भये हरि बिनु कोउ गृह नाहिं
तब उर महं सोचन लगे कीन्हेउ अनि अपराध
कृष्ण आइ धीरज दिये हौ मुनि वर तुम साध

माया मम अति सैप्रबल फसे जगत जेहि माह।
क्षमा कीन्ह अपराध प्रभु मुनि भक्ती पद चाह॥

## सोरठा

भक्ति दिये यदुबीर मुनि कहँ वर परसन्न ह्वै॥
संकर रहित मनि धीर जगन्नाथ अजलोक गय

इति श्री कृष्णसागरे शुकदेव परीक्षित सम्वादे श्रीकृष्णदास जगन्नाथ कृते नारद माया दर्शनो नाम ऊन सप्तति तमोऽध्यायः॥

## सोरठा

राजन श्री भगवान जौन समय जो कर्म कर
सो सब कहौं बिधान नर उपदेश कहेन अब

## चौपाई

दंड दूइ बाकी रहे राता ॥ सब गेहन तेउठि जन चाता॥
नित्य कर्म करि पुनि गृह जाई लगवत तेल नारि समुदाई॥
मज्जन करि पूजा अनुसरें ॥ चौदह सहस दान गो करें ॥
बिप्र अरपि भोजन करि आपू बैठत सभा हरत जन तापू॥
सुनें पुरान कबहु हरषाई॥ कबहूं नट नृत देखें राई ॥
रहा सुधर्मा नाम सभा कर दिन एक रहु बैठे तहं यदुबर
तेहि षन एक बिप्र तहं आवा हरि अनुचर सब हरिहि सुनावा

## दोहा

तक्षन बिप्रहि बोलि के सादर आसन दीन्ह

केहिकारन आवनभयो कहियेद्विज परवीन ॥

## चौपाई

कहिद्विज जरासंध अभिमानी जीतिगर्व्वयुतबहुनृपआनी
बिंशसहस्व अष्टसत राजा कैदकिये सब भूप समाजा ॥
तेसबमोहिपठवा यदुराई तुमबिनुजानिनकोइसहाई।
जिमिगज अरुप्रह्लादबचाये तिमिप्रभुमेरोकरहुसहाये ॥
द्विजकहिदियहरिधिज्जकराये ताहिसमयनारदऋषि आये।
कहानाथपांडव मखकरहीं तुम्हरेमिलन आसमनधरहीं
तेहिरवनदूतपांडवन आवा समाचारसोइतेहु सुनावा ॥

## दोहा

तबऊधोतेहरिकहा तुममोहि प्रानसमान
प्रथमकहा जानोउचित कहुनिज उरअनुमान

इतिश्रीकृष्णसागरेशुकदेवपरीक्षितसंवादे
श्रीकृष्णदासजगन्नाथकृतेनृपयु-
धिष्ठिरसंदेशो नामसप्तति-
तमोऽध्यायः।

## दोहा

तबऊधोबोले प्रभू प्रथम पांडु पुर जाइ ॥
तापाछे सबभूपकी दीजे बन्दि छुड़ाइ ॥

## चौपाई

तबहरिकहाबिप्र समुझाई सपरिवार हम करब सहाई।

मुनिकहँ कहाधीजेतिन्हदेहू आवहुप्रथमतिन्हहिके गेहू।
असकहिमुनिद्विजबिदाकराये तेसबजादू धीर धरवाये ॥
दूतहरिउग्रसेन कहँभारवी। हलधरको पुर रक्षक राखी ॥
संग सुन्दरि आठौ पटरानी। रथपरचढ़ि संतन सुख दानी।
सेना लेढ़ गये तिन्ह पूरा ॥ सुनेजबहि आवन सुख मूरा।
तबहि युधिष्ठिर संग सबभाई वस्तुभेट लै आतुर ताई ॥
आयेनिकट श्री यदुराई। मिलेहरषि उरबरनिन जाई
प्रेमसहित हरिको गृहलेगय हरषितभये दरसि करुनामय

## दोहा

कुन्ति आदिके चरन पर गिरे हरषि यदुराय ॥
जोरी जोरी ते मिले आसिष छोटन पाय ॥
सबभाइनते राखते अर्जुन अधिक सनेह
जगन्नाथ तहं वासकिय मुदित कृष्णातिनगेह
इतिश्री कृष्णसागरे शुकदेव परीक्षित सम्बा-
दे श्री कृष्णदासजगन्नाथ कृतेश्रीकृ-
ष्ण हस्तिनापुर गमनो ना-
म एक सप्त तित-
मो ऽध्यायः

## दोहा

भूपतिदिन एक कृष्णजू रहे सभा आसीन ॥
तहां युधिष्ठिर जायके बिनय कीन्ह अतिदीन

## चौपाई

राजसूय एक यज्ञ कृपाला ॥ करनचहूं प्रभु दीन दयाला ॥
बिनु तव कृपा सकत होइनाहीं मुनिबोले हरि भूपति पाहीं।
तुम निजप्रेम बिबस मोहिकीन्हे अबधौं कहा सकुच उर दीन्हे
देहु भेज नृप चारौ भाई ॥ चहुंदिस भूपन जीतें जाई
जीति सकल लय दर्ब ते आवैं करु तव यज्ञ भाग सुर पावैं॥
सुनतहि भ्रातन दीन्ह पठाये दक्षिनदिक सहदेव सिधाये
पूरब भीम सेन पग धारे ॥ उत्तर गे अर्ज्जुन सुख भारे।
पश्चिम नकुल गये भूपाला जीत नृपन लै दर्ब बिशाला

## दोहा

आये गृह तब हरि सखा ऊधो कहा सुनाय।
बिनु जीते जरासिंधु के होत न यज्ञ सहाय।

## चौपाई

काहू बिधि तेहि सकहु न जीती मोरे मन अस भा परतीती॥
जरासिंधु है नृप अति दानी देत दान जो चाहहिं ज्ञानी ॥
ताते हरि धरि बिप्र के बेषा युद्ध दान जाचहीं बिशेषा।
अंगीकार करत जब राजा तब तेहि जीतिहै हरि शुभसाजा
मुनि अस भये उदास नृपाला तब बोले प्रभु दीन दयाला
अर्ज्जुन भीम कहहुं सग जाना धरहु धीर तजु सोच सुजाना
मुनि अस कहा जान तिन्ह राई तब तिन्ह सहित चले बलभाई
धरे बेष हिज सोहहिं कैसे ॥ सत रज तम गुन तन धरि जैसे

भोजन समय गये तेहि देसा बैठारे तिन्ह मगध नरेसा ॥

## दोहा

बहु विधि आदर करिकहा चलहु सकल अवखाना।
कह हरि अबहि न खाउहम सुनिये कृपानिधान
एक दान जो मांगऊ सो मोहि दीजे आज ॥
कत नृप दानी तर गये दान देन के काज ॥

## चौपाई

हरिश्चन्द्र बलि आदि नृपाला दानहि ते पाये जन पाला ॥
सुनि बोला महीप तत काला नाम यथारथ कहहु रसाला
तब मैं दान देव सुनि काना बोले हंसि श्री पति भगवाना
हम श्री कृष्ण भ्रात ये अहहीं अर्ज्जुन भीम इन्हे जग कहहीं
युद्ध दान मांगन हम आये सुनि सो तीनों निज गृह लाये
भोजन बिबिध कराइ बखाना करत युद्ध मोहि लाज निदाना
तुम भागे रहु समर ते यागी अर्ज्जुन छोट भीम युध भागी ।
या ते करब युद्ध असभारी एक गदा तेहि दी एक रारी ॥

## दोहा

दोऊ अखारे जायके करहिं युद्ध हरषाइ ॥
एक मारे एक रोकले याविधि दिवस बिताइ

## चौपाई

सांझ समय करि भोजन राई सोवैं एक संग हरषाई ॥
प्रातःसमय हरि कहेउ बुझाई चलहु भागवा कुरुक्षेत्र ॥

मल्लयुद्ध तबलगे दोउकरना बांहबांह ते पद ते चरना ॥
छब्बिसवें दिन करि रिसभारी मुष्टिकाजरासिंधु एक मारी॥
लगी सोभीमसेन की छाती भया बेयाकुल सो सब भांती
तब तहंकर फेरा यदुबीरा गर्द्व्यथाभा कुलिश शरीरा ॥
लरतसताइस दिन भा राई तब हरियाबिधि मानबताई
चीरि दियेतृन एक कृपाला भीमसमुझिधरि चरनबिशाला
भूमिपटकि तेहिपदएकधारी चीरिदियेमरि गयो मुरारी ॥

## दोहा

देवनसबबरषनलगे सुमनहृदय हरषाय ॥
नारितादि बिलाप्तमहा कहा कृष्ण से आय
जोतुमको सरबसदयो असतातें किये नेह ।
सुनि हरिधीरजदेइके बिदा किये तेहि गेह

## सोरठा

ताकेसुतसहदेव सरन गयो तेहि राज दिय।
पूजहु सुतमहिदेव बोलतभै करुनायतन

इतिश्री कृष्णसागरे शुकदेवपरीक्षितसंबादेश्रीकृष्ण
दासजगन्नाथकृतेजरासिंधुवधो
नामद्विसप्ततितमो
ध्यायः

## दोहा

राजनमगधनरेशसुत संग लेइ यदुबीर ॥

गये जहां सब भूपगण व्याकुल रहे शरीर ॥

## चौपाई

देखा जाय तहां एक कन्दर तेहि महं भूपन सिला द्वार पर
नख बढ़ि गय बढ़िगे अति केसा ऐसी दशा बिलोकि नरेसा ॥
आय मुदित सहदेव निसारे करन लगे सब बिनय मुरारे ॥
तुम बिनु हिंस हाय जग आना छूटि गयो दुख दरसन नाना ॥
छौर कर्म सहदेव कराये ॥ भूषन बसन अमित पहिराये ।
तब हरि धारि चतुर्भुज रूपा दर्शन दिये सकल तहं भूपा ॥
कहन लगे तब सकल सुनाई अब बन जाइ भजब यदुराई ।

## सोरठा

बनते नहिं कछु काम सुमिरहु मोहि चित लाइके ।
करौ राज सुख धाम यहि बिधि बनते गृह भलो ।
जबलगि हम नहिं जाउं तबलगि सब पुरि हस्तिना
आवहु मुदित सो ठांउ करिहिं युधिष्ठिर यज्ञ तहं

## दोहा

तिन्ह असभारि बिदा किये हस्तिनपुर गै स्याम
संगी युग साथे गये कहा सकल शुभ काम

इति श्री कृष्ण सागरे शुकदेव परीक्षित संवादे श्री कृष्ण
दास जगन्नाथ कृते राजन बंदि मोचनो
नाम त्रिसप्ततितमोऽ-
ध्यायः

## दोहा

भूपतिकैदीराजगण और सकल महिपाल ॥
दिनकरहिमकरबंसके आयेनेवतबिशाल

## चौपाई

दुर्य्योधनकौरव नरपाला नकुल बुलायेमुदित बिशाला
बन्दीगनराजा सब जेते ॥ यज्ञ कर्म करहीं सब तेते ॥
आगलेनहित देवन आये मुनिबरनिकरकहानहिंजाये
नृपसब कहं सादर बैठारी यज्ञ हेत बैठे संग नारी ॥
अग्निकुंड बिप्रनरचिलीन्हा तहां युधिष्ठिर आहुत कीन्हा
हाथपसारि भाग सुरलीन्हा भूपति दान मुनिनकहँ दीन्हा
याबिधिमखपूरन भाजबहीं सुरनसुमन बरषाये नबहीं।
तब पूछानृप सुनु सहदेवा प्रथम पुजो केहिको बर देवा

## दोहा

कह सहदेव सुनहुनृपति हरिसब देवनदेव।
प्रथम पूजिये कृष्णको इन सेवासब सेव ॥

## चौपाई

सुनिनृपसंग आठो पटरानी पूजनकिये कृष्णगुन खानी ॥
धूपदीपनैबेद्य सुहाये ॥ पीतपिताम्बर हरिहिचढ़ाये।
भये मुदित सुरमुनितेहिकाला देखिजरावहु जडसिसुपाला ॥
कहनलगाअसमबहिसुनाई सभामाहं सब बुद्धि गँवाई ॥
तजिइन्द्रादिक देवनभारी पूजनकिये कृष्ण रुचि सारी ॥

जेहिपितुमातुढिकानोनाहीं बनमहंजायकेधेनुचराहीं ॥
याविधिसदबहुनिन्दाकीन्हा गिनेजाहिंहरिदयमहिचीन्हा
सुनिनिन्दाबहुमारनधाये बर्जनकियेतिन्हैयदुराये ॥

## दोहा

राजनजबतेहिजन्मभा रहायही बरदान ॥
सतअपराधसोकरतजब तबहतिहैंभगवान
याहीतेचीन्हादिये पूरेवसत अपराध ॥
हत्योतबहिहरिचक्रते पाईगतिजिमिसाध

## सोरठा

भापूरनइमि यज्ञ नृपहरषितसबकियबिदा
तबयदुपतिसर्बज्ञ सनियसैन गे द्वारका ॥

इतिश्रीकृष्णसागरेशुकदेवपरीक्षितसम्वादेश्रीकृष्णदासजगन्नाथकृते सिसुपालमोक्षो
नामचतुःसप्ततितमोऽध्यायः

## दोहा

केवलदुर्योधनगया असंतुष्टतेहिकाल ॥
कहनृपसोकिमिभामलिन कहमुनिगिरासाल

## चौपाई

सुनिनृपरहेयुधिष्ठिर ज्ञानी सबकर्मकरनयोग सबजानी
याविधिबांटि दियेसबकाजा करनलगेहरषित सब राजा ॥

भीमकरावतभोजनसबही अर्जुनसेवनहदैन कबहीं ॥
पूजालगिसहदेवहिराखा। चरनधोवेंहरिद्विज अभिलाखा
लावतनकुलदर्बबहुतेरे बांटतदुर्ज्योधन सब केरे ॥
जानिहोतउपहास नरेसू घरतदर्बभूपनि के देसू ॥
जहांदेन एक तहंदसदेता सुकृतपायबाढ़त धन नेता
रहाचक्र एक ताके हाथा याहूते बाढ़त नर नाथा ॥

## दोहा

सोनहिंजानतरहनृपति तातेभयादुखारि
यज्ञहोतनृपनारिसंग मज्जनकियेसुखारि
भयकृतसभामेंजायके बैठत भये भुवाल॥
गंधर्वन्हलगुगानतहं सोभाजिमि सुरपाल
दुर्ज्योधनगातेहिसभा बिनुजलथलजलजानि
वस्त्रउतारनलागुजब हंसे सभा सुखमानि

## सोरठा

लज्जितफिरिगाधाम जोनहिंपलटालेउहम
महिंदुर्ज्योधननाम होतहमारो जगतमहं

इतिश्रीकृष्णसागरेशुकदेवपरीक्षितसम्वादे श्रीकृष्ण दासजगन्नाथकृतेदुर्ज्योधनमानमर्दनो नाम पंचसप्ततितमोऽध्यायः

## दोहा

महाराजजेहिदिवसमहं हस्तिनपुरधनस्याम

रहे मारताके सहित साल्वनृपति बलधाम

## चौपाई

रुक्मिनि ब्याह जो हरितेहारा सोइ अब पलटा लेन बिचारा॥
लगा करन तप श्री गौरीशा भये प्रसन्न ताहि पर ईशा॥
मांगा देहु मोहि एक जाना चलत जो उड़ि मगते असमाना
तब शिव मय निश्चर कहं टेरी कहा बनाव हुलाव न बेरी॥
सुनि मय रचा जबहिं तेहि जाना तब चढ़ि संग सेन लय नाना॥
आवा पुरी द्वारका माहीं डारत तोडि वृक्ष जहं ताहीं॥
व्याकुल भये नगर समुदाई भारवा उग्रसेन ने जाई॥
साम्ब प्रद्युम्न कृष्ण सुत टेरी कहा करहु युध लाव न बेरी॥

## दोहा

तब दोउ भ्राता सैन ले सन्मुख गे ततकाल॥
तिनहि देखि सायक तजा भया तिमिर विकराल

## चौपाई

तब प्रद्युम्न निज सस्त्र चलाई छन महं तम सब दीन्ह नसाई
एक सरते रथ ध्वजा गिराई एक ते सूतहि दीन्ह नसाई॥
तीजे रथ के बाजि निपाता सकल सैन कीन्ही बिकलाता
तब तेहि असप्रद्युम्न बलेसी मानाभय उर माहिं बिशेषी
धरि लघु रूप कबहुं तहं जाता कबहुं उपल न भने बरसाता
देव मान तेहि मंत्री आये। लगा करन युध संग हरिजाये
सायक एक चाला तेहि ऊपर भया विकल पुनि उदा संभलकर

गदाएक हरि सुत सिर मारी मुरछि परेस्यन्दनहि मझारी॥

## दोहा

सूततबहिरनभूमिते लाया बिलगभुवाल
मुर्छातजि बोलतभये तबहि कृष्णकेलाल
कछुनहिंकी न्हविचारउर लायोरनतेमोहि
होतजगतउपहासमम सत्रीकहरनसोहि

## सोरठा

कहतसूतसुनुह्याल मूर्छाजानके लायऊ
बदनधोइततकाल रथचढ़िगोनसाल्वजहं

इतिश्रीकृष्णसागरे शुकदेवपरीक्षित सम्बादे श्रीकृष्णदासजगन्नाथकृते प्रद्युम्नमूर्छानाम षट्सप्ततितमोऽध्यायः

## दोहा

जानहिललकारतभये तिष्ठतिष्ठसुरघाति
भागिकहाभारतसवहि करिहोंआजनिपाति

## चौपाई

लागसठछाडनबहुबाना भयक्रोधितवसुतभगवाना
चारबानतेबाजिहिमारा एकबानते सूत संघारा॥
एकतेध्वजएकछत्रगिराये एकधनुपुनिसरतीनचलाये
तातेहनिरीन्हादेवमाना सास्वकिये सब सैन निदाना
कादरभजेसमरतेप्राना लड़ासताद्सरिन परमाना

तबहरिनहंअस सपनादेखा करतयुद्ध कोइनगरबिसेखा
तहंतेहोइविदादोउभाई रथचढ़िआये अतुरताई।
आपनिकटगे युद्धके हेतू पढबागृहआतहिजगकेतू।

## दोहा

हलधरपुररक्षनगये इतनृपहरिकहंपेखि
माराएकसरसूतकहं हरिदियेकाटिविसेखि

## चौपाई

षोडससरमारे रथ ताका धुर्मनलगानृपतितेहिचाका।
तेइहरिपरमारा एकभाला काटिदिये सूरन महिपाला।
अमितबानहरिचलिबहोरी ब्याकुलकियेसाल्वनृपकोरी
सजगहोइपुनिसाल्वनृपाला मारासरकर वाम कृपाला॥
खसाधनुषमहिभाजगत्रासा कहासाल्वतबहृदयहुलासा
दिछनरहो तो मारों तोही पलटालेउ मित्रके द्रोही॥
कहाकृष्ण सूरनजग जेते॥ निजपरसंसाकरहिन तेते॥
भईदशाजो नृपसिसुपाला करिहोंछनमहंतोहिसोहाला

## छन्द

करिहोंनिमिषमहंसोइदशा असकहिगदामारतभये
लगिमाथरुधिरअपारनिसरे असुरतबमाया किये
बरषानलगपावकतबहि एकस्यामसर मारेरिसा।
भएविगतमायारथसहित नृपसाल्वगाधरनी खसा॥

## सोरठा

बहुरि संभारि सो मारि गदा एक श्री कृष्ण को
हरि तेहि तुरत संघारि गदा मारि मुर्छित किये

## चौपाई

हंस चेत धरि दूत सरूपा ॥ मंत्र के बल गा जहं सुर भूपा॥
कहा देवकी कहेउ संदेसा साल्व देत तव पितहि कलेसा
पुनि सोधरा आपनो बेखा रचा कृष्ण के पिता विशेखा।
हरि सन्मुख माधव सुदेवा काटि दिये भे मुर्छित देवा ॥
पुनि करि ध्यान लखी तेहि करनी भये मुदित कछु जात न बरनी
गदा एक अस कीन्ह प्रहारा गिरा सहित रथ सिंधु मझारा।
रथ ते कूदि गदा एक मारी ॥ हरि दीन्ही तेहि तुरत संघारी
बिपुल गदा हरि ता को मारी बिपुल गदा तेइ दिये संहारी

## दोहा

हरि भाय सुते चक्र तब काटि दिये तेहि नाथ
देवन सब दुंदुभि हने जगन्नाथ धन नाथ

इति श्री कृष्णसागरे शुकदेव परीक्षित संवा
दे श्री कृष्णदास जगन्नाथ कृते सौ
ल्व बधो नाम सप्त सप्ततितमो ऽध्यायः ॥

## दोहा

राजन साल्व बधन सुनि दिभ्राता सिसुपाल।
दंत बक्र अरु बिन्दु रथ आये को पि कराल ॥

## चौपाई

कहनलगे सठ हरिहि पुकारी हमते सकहुन जीति मुरारी॥
मित्रभात बध पलटा लैहौं तुम्है मारि यमपुरहि पठैहौं॥
प्रथम चलावहु अस्त्र अपाना हतिहहु तदपि न सोच पराना
असजल्पत एक गदा प्रहारी सपदि दीन्ह तेहि श्याम निवारी
सजग होहु तम दंतवक्र अब हनी गदा अस कहि छाती तब
रुधिर बमत मर गया मुरारी योनि समाई बदन मुरारी॥
बिदुरथ ताके भाइ निहारी खड्ग चर्म लेइ करन मझारी॥
आवा युद्ध करन जहं नाथा चक्र ते काटि दिये तेहि माथा

## दोहा

भात्रिलोक में हरष अति देवन मुदित विशाल
अस्तुति करनलगे तहां धनवसुदेव के लाल

## चौपाई

तुम्हरी महिमा जानन कोऊ निरगुन ने सरगुन तुम होऊ
जय अरु विजय दूत यदुराई पाइ श्राप मुनि गन दहुताई॥
हिरन्याक्ष हिरनकसिपु दोऊ निश्चर भये जान सब कोऊ
नरहरि रूप धारि तब नाथा तारि दियो तिनको सुरमाथा
सुनि दोउ भये असुर बलवाना रावन कुंभकरन जग जाना॥
राम अवतार लेइ प्रभु तारे सरवत भेद प्रभु कौन तुम्हारे
अब भै दंतवक्र सिसुपाला नारेउ कृष्ण रूप ते लाला॥
ये सब भजा सत्रुजिय जानी तिन्हहि मुक्ति दिये को असरानी

अस कहि सुनि जलोक सिधाये इति सखेजश्रीपति यदुराये
आये पुरी द्वारिका माहीं ॥ बोले हरि तब हलधर पाहीं ॥

## दोहा

कौरव पांडव मध्य में होत युद्ध है तात ॥
अब चलनो तहं चाहिये सुनि बोले हरि भ्रात

## चौपाई

करि तीरथ हम आवब पाछे सुनि हरि चले पूर जहं आछे
पुरी हस्तिना गय यदुराई ॥ हलधर इत गंगादि नहाई ।
नैमिसारि तीरथ महं आवत सखा सूत मुनि कथा सुनावत
शौनकादि मुनि आदर कीन्हा सूतन उठे रहे आसीना ॥
गर्व जानि कुशअरि एक हाथा मंत्र पढ़त डारे मुनि माथा ।
कटि गा माथ तुरत मुनि केरे सौनकादि बोले तब हेरे ॥
महाराज यह हरि यश गावा ताहि हत्यो यह नीति न भावा
तब प्रभु कहा गर्व तेहि जानी हते उठाउ अब बालक ज्ञानी
अस कहि बोलि सूत मुनि बालक बिद्या दीन्ह असुर कुल घालक
व्यासगादि पर दीन्ह बैठाई ॥ बोले प्रभु सुनु मुनि समुदाई

## दोहा

पाप छुटत कैसे महा कहा करहु अस्नान ॥
सब तीरथ में जाइके पातक होत निदान ।

## सोरठा

कह मुनि रेवतिनाथ बिल्वल नाम एक बान

करन उपदुव साथ हलधर कहा हनव तेहि
इतिश्रीकृष्णमागे शुकदेव परीक्षित सम्वादे श्रीकृ
ष्णदासजगन्नाथकृते सूत वधो नाम
अष्टसप्ततितमो
ऽध्यायः

## दोहा

महाराज जब मुनिन सब करनलगे मखजानि
हलधरको सुखदानिजिय तबबांदरबलवानि

## चौपाई

आय लगा वरसावन लोहू हलधरकोलखिउपजाक्रोहू
किये स्मरन हल अरु मूसल भये उपस्थितयुगल सोदथल
हलतेखींच मुसलदुकमारा निसरा प्रान फारि सिर भारा
सौनकादि मुनि अतिसुखपावे पुष्पमालदियेगलहिपेन्हाये
बिदाहोयसब तीर्थ अन्हाई पहुंचे कुरुक्षेत्र हरिभाई ॥
तहां अष्टदसवांदिनभारी दुर्य्योधन अरु भीम मझारी
होत रहा युधबरनिन जाई हलधर जादबकुलसमुझाई ॥
तजानयुद्धतदपि न फावी हलधर तजा जानिअसभावी
क्रोधितभीम तबहिसुनुराई दुर्य्योधनपर गदा चलाई ॥

## छन्द

रिसियायकियेउ प्रहार जंघमें दुर्य्योधनकी एकगरा
गद्दटिजंघा तबहिसोवल दाउरेयाविधिवदा

गुरुकृष्णकेबलपाइयह दिये तोडि मेरी जंघको
सुनिगैनिकटहरिसुनहुभाता नहिउचितअसभंगको

## दोहा

कहतस्यामपतिदेवता रही द्रौपदी नारि ॥
ताहिपतितदुर्य्योधन चहाजंघ वैदारि॥
भीमसेनतबपनकियो जंघ तोडि हौं एहु ॥
तातेतोड़िदियेहृदय सोच सकलतजिदेहु

## सोरठा

सुनिके श्रीबलराम आवतभै पुरि द्वारिका।
भये मुदित संग बाम करि तीरथ पातक गयो

इतिश्रीकृष्णसागरे शुकदेव परीक्षित सम्बोदे श्रीकृष्णदास जगन्नाथ कृते बिल्वल वानर बधो नाम उनासीतितमोध्यायः

## दोहा

गजनदक्षिनकीदिसा अहै द्राविड़ी देश ॥
तहंके नरधर्म्मात्मा धर्मधुरन्ध नरेश ॥

## चौपाई

तहंद्विज एक सुदामा नामा हरिगुरुभाइभजतसुखधामा
अतिदरिद्रसोबिप्रगुसाईं। तदपिमगनसुमिरतयदुराई
ताकीनारिसुसीला रही ॥ पतिव्रतधर्मजगत सो लही

परमदुखी तद्यपिपतिसेवा करतसंगसुमिरत जगदेवा॥
दिवस एक ऋषऋषवरआवा दुइदिनबीतिगयेबिनखावा
चारपुत्ररह बिप्रहि राई॥ ह्वैसुतभये छुधाबिकलाई
कहतसुशीला पतिसेबानी तुम्हरेमित्र हैंहरिपतिदानी
करिहैंअवसिकृपाप्रभुतुमपर जाहुद्वारका उरआनन्दभर

## दोहा

कहद्विजबीतेतीनपन सुमिरतश्रीजगनाह
वृद्धावस्थाजाउंकहूं सुमिरतहोतनिबाह।

## चौपाई

मगजोगिरोभयउजरजरतन होतनामलोभीप्रियवहपन
लातेजायबनहि सोदामा॥ सुनिबोलीपुनितियदुखधामा
जाहुदरसपावन यदुराई॥ होइहौपतिकृतार्थ बनाई॥
याबिधिजानिनाथअभिलाषा सपदिसुदानतीयसनभाषा
बिनाभेटदियेगेह प्रवीना सकनजाइकेउसुनुप्रियदीना
सुनिप्रियजाचिनिकटकबासी चारमुष्टितंदुलहि दुलासी
देनहेनदीन्हो पति हाथा गमनकरद्विजहंविभुवनाथा
बांधिपोटरीनंदुल कोरी॥ दाबिकारवले लोटा डोरी॥
चले जहांश्री कमला कंता रुक्मिनिपतिजेहिध्यावतसंता
मगमहंसोचकरहिंबहुतेरे कैसेजाव कृष्ण के नेरे॥

## दोहा

पहुंचेजबपुरिद्वारका लखासिंधु बहुभांहि

घर घर देखत हरिभजन गैहरिमंदिर पाहि।

## चौपाई

बिप्रजानि रोका नहिं कोऊ हरि पहँचर एक भाखासोऊ
बोलिलीन्ह सादरजन त्राता पूछनलगे सकल कुसलाता
दृगबिलोकि नयनजलछावा आपहितेपग धोइ बैठावा
रुकमिनिचौर डोलावनलागी भोजनबिबिधिधरेतेहिलागी
कीन्हाअसनदियेतब पाना। रानिनदेखत अचरजमाना
होतअसमरन मित्र हमारे॥ हमतुमपढेरहे एक बारे॥
कीन्हकृपा संदीपन भारी। तिन्हते कबहुन उरिन हमारी
मोसमगुरु कहं जानहिजोई दयामोरतिन्ह प्रतिअतिहोई

## दोहा

तादिनते अबहीमिल्यो भामोहिहर्षअपार
सुननसुदामाजोरिकर अस्तुतिकियेमुरार
अगमअगोचरनाथतुम महिमालखेनकेहु
जगन्नाथनरउद्धरन जगतसिखावन देहु।

इतिश्रीकृष्णसागरेशुकदेवपरीक्षितसम्वादेश्रीकृष्णदासजगन्नाथकृते सुदामाद्वारका गमनोनाम अशीतितमो ध्यायः॥

## दोहा

याविधिअस्तुतिकीन्हवहु जबबोलेजनत्रात

मित्रभाभिजो दीन्ह मोहि सो दीजे सौगत॥

## चौपाई

लज्जित होइ सुदामा जबहीं लगे छिपावन तण्डुल तबहीं
छीनि लिये श्री रुकमिनि नाहा खान लगे हर्षित चित चाहा
प्रेम सहित अर्पहि मोहि जोऊ अल्पहि लगत नीक मोहि सोऊ
प्रेम विहीन लक्ष मन माहीं॥ करत प्रसन्न मित्र जग माहीं
मुष्टि दुइ खागे प्रभु जबहीं करगहि लीन्हो रुकमिनि तबहीं
हैं प्रभु हम न तुम्हारी दासी॥ छाड़हु हम सब हित अविनासी
दिये लोक दुइ ताहि विहारी दै त्रिलोक की होव भिखारी॥
कह हरि द्विज कर्म भूलेउ अबहीं व्याह समय कस सुख दियेतबहीं

## दोहा

भई रैन द्विज सैन किये हरि विश्वकर्महि टेरि
कहा जाय मंदिर रचहु लावहु नहिं कछु देरि
जहां सुदामा की पुरी घटे न धन कछु ताह॥
जाइ सपदि ते इरचि दिये पाइ वचन जगनाह

## चौपाई

प्रात समय किय विप्र बिदाई तेहि मग जात सोच अधिकाई
आयउं जा बिधि चलेउं ताहि विधि मागेउ दर्व न कछु करुनानिधि
जाइ उतर का देब सुसीला या बिधि सोचत रत हरि लीला
आये निज पुर मंदिर देखी जाना कोउ नृप गेह विशेखी
भूलत मग आयउ एहि काला पूछत भये दूत से हाला॥

काके सुन्दर मंदिर याविधि कहत सुदामा कीयह सुखनिधि
तबलौं निकट सुसीला आई लेवू गई गृह पति हरखाई ॥
वैभव देखिके भये उदासा कहत नारि तब हृदय हुलासा ॥

दोहा

काहे भये उदास तुम कहात बहि हरि मीत।
भजन न होवत दर्वते धरत कृष्ण पद प्रीत।
बिन मांगे माहि दीन्ह हरि कहन लगी तब नारि
मम उर यह नहि वासना ताते दीन्ह मुरारि।

सोरठा

दम्पति आनन्द साज हरि सुमिरे काटे दिवस
अंत गये यदुराज धाम भये तहं दास हरि ॥
जो नर सुनहि स प्रेम अति पावन दंपति कथा
जग में रहहि सक्षेम अंत मुक्ति पद पावहीं।
इति श्री कृष्ण सागरे शुकदेव परीक्षित सबादे श्री कृ-
ष्ण दास जगन्नाथ कृते सुदामा दरिद्र
मम नो नाम एका सीतित
मोऽध्यायः ॥

दोहा

भूपति दिन एक रबि ग्रहन में हरि कहा बुलाय।
नाना जू कुरु क्षेत्र में जोजन मज्जहिं जाय॥

चौपाई

गुन सहस्त्र फल होत गुसाईं करत दान जो नर सोइ पाईं ॥
तातें नहां चलहु हरषाई ॥ सुनि यदुबंसी कह समुदाई
अस महात्म भाकहु प्रभु कैसे कह हरि सुनहु कहौं हम तैसे
परसुराम तहं क्षत्रिन मारी तर्पन कीन्ह रुधिर ते भारी
मुनि सब मिलि तहं पूजन कीन्ह तातें अस महात्म अनुसरेऊ
सुनि नृप यदुबंसी नर नारी कृष्ण तियन युत अरु महतारी
बढ़ि सिबिका सेना संग लेई चले भ्रात युत छबि अति देई

## दोहा

छत्र निकर हरि देखि कै उतरि गये अस बारि
गये मुदित मन सेन युत मज्जन किये सुखारि

## चौपाई

अश्व गजादि कीन्ह बहु दाना धेनु सुवसन रत्न बिधि नाना
तहं पांडव कौरव नृप जते मिले तियन युत हरि से तेते
कुन्ती कह सुनहु बसुदेवा जन दुख दरन भये जग देवा
सेवन कीन्ह सहाद मोरी ॥ दुर्ज्योधन दिये दुख सब कोरी
कहव सुदेव कर्म की रेखा मेटि सकै नहिं कोइ बिसेखा
हरि आवन सुनि नंद यशोदा गोपिन गोप सहित अति मोदा
आये मिलन देखि हरि माता हलधर सहित गिरे पद माता
बहुरि नन्द पद गिरे मुरारी मिले ग्वाल बालन ब्रज नारी ॥

## दोहा

राधादिक ते प्रेम बस मिले बरनि नहिं जाय

सोचहरष मेंमगन भै तनकी सुधि बिसराय
नन्द मिले बसुदेव से हरि तब सबहि बुलाय।
तुम्हरी भक्ति बिबस रहौं धन गोपी पितु माय

## सोरठा

तुम्हन मिलन के काज करि बहान मज्जन करन
आयो सहित समाज जगन्नाथ ह्वै प्रेम बस ॥

इति श्री कृष्ण सागरे शुकदेव परीक्षित सम्वादे श्री कृष्ण दास जगन्नाथ कृते हरि हलधर कुरुक्षेत्र गमनो नाम द्वासीतितमो ऽध्यायः॥

## दोहा

राजन रानी द्रोपदी कह रुकुमिनि ते आइ।
का बिधि पायो कृष्ण पति सो सब कहो बुझाइ

## चौपाई

कह रुकुमिनि सुनु द्रोपदि रानी पिता जानि मोहि भई सयानी
चाहा ब्याह करन संग गिरिधर भ्राता के मन भायो नहिं बर॥
चाहा ब्याह करन सिसुपाला हिज भेजा हम जहां दयाला॥
सो हिज जादव कहा हरि पाहीं तब आये हरि सो पुर माहीं॥
जान शिवा कहं पूजन तेहि छन आइ गये सच्चिदानंद घन॥
रथ चढ़ाइ निज पुर प्रभु आना तहं बिवाह भा वेद बिधाना॥
सुनि द्रोपदि सत भामा नारी जाम्बवती कालिंदि बिचारी

भद्रा मत्या अरु मित्र बिन्दा पूछेउ लक्षमना हिं आनन्दा

दोहा

सोरह सहस्र एक शत आठौ रानिहि जाइ ।।
व्याह कथा पूछत भयौ तेसबही कही बुझाइ।
तबरुकमिनि बोलत भई सुनहु द्रोपदी नारि।
व्याह कथा तुम आपनी हमते कहो सुधारि।
भद्रा सेयानी जबहि मैं कहति पांडवन्ह नारि।
पिता स्वयम्बर रच्यो तब याबिधि परन बिचारि।
धरा कडाह में मत्स एक जो नर एष्ट की आड़।।
दारुते वेधे मत्स को सोनर जीते होड़ ।।
अर्ज्जुन वेधो ताहि विधि तिन्ह कहं दीन्ही बोलि
निज मातहि अर्ज्जुन कहा लायउं वस्तु अमोलि

सोरठा

बोली अर्ज्जुन मातु जानि बस्तु कछु असन को
बांटि लेहु सब भ्रातु बांटि लियें सब तबहिते।
भैपति पांच हमार एकहि हम सुनु रुकमिनी ॥
जगन्नाथ सुखभार ऐसे परस्पर बोलती ॥

इति श्री कृष्ण सागरे शुकदेव परीक्षित सम्बादे श्री कृष्ण दास जगन्नाथ कृते स्त्रीगी नवर्ननो नाम त्रासी ततमोऽध्यायः

## दोहा

सभामध्य बैठे रहे एक दिवस जगदेव ॥
तेहि छन आये देवऋषि तब बोले बसुदेव

## चौपाई

भवसागर के तरन उपाऊ कहहु नाथ मोपै समुझाई ॥
कह मुनि जा के सुत भगवाना ताहि तरन कहु कौन विधाना ।
तदपि कहौं सुनिये चितलाई सोम जज्ञ तुम करहु बनाई ॥
सुनि बसुदेव किये तैयारी । आये बहु नृप जग्य मझारी ॥
तबही तात सहित निजरानी करन लगे मख सुनु नृप ज्ञानी
आहुत किये जबहि बसुदेवा लियेभाग परगट ह्वै देवा ॥
हरषित दुन्दुभि लगे बजाना गंधर्बन लागे जस गाना ॥
नितनन लगीं अप्सरा आई भा जब पूरन यज्ञ बनाई ॥
किये अर्पन हर्षित बसुदेवा मख के फल श्रीपति जग देवा
दिये अचाज को बहु दाना हेम धेनु मणि आदिक नाना ।

## दोहा

सुख मांगा दिये जाचकन बिदा किये नृप लोग
गये निकट तब नंद के या विधि कहा सजोग
तुम ते मित्र उरिन नहिं रहहु इहां चौमास ।
सेवा करि सुख पाइहौं रहे सकल सुख रास ।
हरि सेवा सिन्ह करन लग नितनव प्रीत बढ़ाय
बीते अवधि द्वारका गमन कहा यदुराय ।

सोरठा

मुर्छि परे ब्रजबासि तबहरि दीन्हो फेरिचित
बिदाकिये मुखरासि ते ब्रजगय हरिद्वारिका
इति श्री कृष्णसागरे शुकदेव परीक्षितसम्वादे श्री कृ॰
ष्णदास जगन्नाथ कृते वसुदेव मख कर॰
नो नाम चतुरशीतितमो॰
ध्यायः

दोहा

भूपति दिनएक प्रातही हरि हलधर सुखधाम
मातु पिताकहं जाइकै कीन्हा जबहि प्रनाम

चौपाई

चरननमहं गिरिगे वसुदेवा हौतुमहरि देवन के देवा ॥
प्रथम पुत्रकरि जानत रहेऊं नारद बचन ज्ञान युतसुनेऊं ॥
तब प्रभुपहिचान्यू अवतारा तुमहि रचहु पालहु संघारा ॥
ताते देहु ज्ञान मोहि लाला चीन्हो तुमहि न परुभव जाला
कह हरि मम स्वरूपजगजानहु सबहीमहं मोहि व्यापक मानहु
तवमायानहिं व्यापत ताता भजनलगे तेहि विधिहरि दाता
माता ते बोले यदुराई ॥ जो मागहु सो देहौं माई ॥
तुमते होउ उरिन नहिंमाता सुनिबोलीसो पुलकित गाता ॥
छौसुत मोहि दिव कंस संघारी लाद देहु सोई बनवारी ॥

दोहा

सुनि हरिगयपातालमें जहं के बली भुवाल
आवतसादरहरषिहिय बैठारे गोपाल ॥
कहाकृष्णासुनुबलिनृपति हनेजोबालककंस
तबगृहलीन्हाजन्मते देहुहंसनिजबंस ॥

## सोरठा

दीन्होतुरतभुवाल गयेमातुपहं लेइ के ॥
लगीजननितत्काल दुग्धपिलावनबालकन
भयेप्रफुल्लितगात सकलनारिनरनगरके
मातुहर्षनहिंजात जगन्नाथ मोपै कह्यो

इतिश्रीकृष्णसागरे शुकदेवपरीक्षितसम्वादेश्रीकृष्ण
दासजगन्नाथकृतेदेवकीपुत्रदर्शनो
नामपंचासीतितम·
मोऽध्यायः

## दोहा

राजनश्रीहरिकीबहिनि नामसुभद्रा ताहि॥
भयीविवाहनयोगजब तबहर्षितमनमांहि

## चौपाई

कहवसुदेवकौन ते व्याहू। करौंसुभद्रा कह नर नाहू ॥
कहाकृष्णअर्ज्जुनतेकरिये हलधरकहदुर्ज्योधन बरिये
हरिकीमतिसबहीमनभाई तबहलधरउररिस भरिआई
उठिबैठे दूसर अस्थाना उतअर्ज्जुनहरि मूच्छा जाना

धरिसन्यासीरूपकृपाला ॥ बैठा आइ नगर गोपाला ॥
चतुर्मास तहं रहा सो जबही जानिभिखारी हलधर तबही
भोजनहित लेगै गृह माहीं देखि सुभद्रा जान्यो ताही॥
है कोउभूप वेख संन्यासू । देखिभयो मोहित मन तासू

## दोहा

इत अर्जुन तेहिदेखिके मोहितभा मनमांहि
सोचित आसन परगयो केहि बिधिपैहौंताहि

## चौपाई

एकदिन संभुरात व्रजजानी बाहर गैपुरजन सुख मानी॥
तिनके मध्य सुभद्रा गई । जब संकर कह पूजत भई ।
चढ़ि हरि रथ अर्जुनतनकाला लियेबैठारि सुभद्रा बाला
भाजिगये आपन पुर माहीं हलधररिसि आयेलखिताही
सैनालय चाहा तेहि मारन तब समुझायेअसुरसंघारन
चाहिय नाहिं हतन तेहिभाई निन्दा होत मोहि सब ठाई॥
करी प्रीति पुनि बैर बिसाहा देखिके अस जगभाषत काहा
तबहलधर बैठे पचताई॥ तुम्हरी है करनी यह भाई॥

## दोहा

अस अर्जुन पुरजाइके किये बिवाह बनाइ
बस्त्राभूषन अनुचरन हरि तहं दीन्ह पठाइ
नृपबहुलाश्व श्रोबिप्रइक श्रुतिदेव तेहिनाम
रहे भक्त दोउ कृष्ण के तहां जाइ सुख धाम

सोरठा

पूर्ण मनोरथ कीन्ह दिन एकैस हि दोउ भवन।
दरसि जन्म फल लीन्ह हरि ग्राये निज पुर विखे

इति श्री कृष्ण सागरे शुकदेव परीक्षित सम्वादे श्री कृष्णदास जगन्नाथ कृते सुभद्रा हरनो नाम षडशीतितमो ऽध्यायः

दोहा

कह नृप भाख्यो प्रथम मुनि अस्तुति करत है वेद
हरि रहही निर्गुन सदा सो किमि पायो भेद ॥

चौपाई

कह मुनि जो हरि रचा पराना इंद्री मन अरु बुद्धि निदाना
अर्थ धर्म कामादिक जोऊ निर्गुन रूप रहत नृप सोऊ
महा प्रलय जब होत सुजाना सयन करत तब ही भगवाना
यही प्रश्न नारद मुनि गाई पूछा नर नारायण पाई ॥
वेद करत अस्तुति जाही विधि कहउं तुमहि हम सबताही विधि
सनक सनंदन अपर सनातन सनत कुमार भाइचारो जन ॥
नारद मुनी सनन्दन इनही कहहि कथा तेत्रियमिलि मुनही
सृष्टि करन इच्छा जब होई ॥ वेद करत अस्तुति तब सोई

दोहा

वेगि रचहु प्रभु सृष्टि को त्यागहु निद्रा भारि

माया बस यह जगत है तुम बिन किमि निस्तारि

## चौपाई

बिनु तव कृपा सकत नहिं जीती जापर राखहु तुम परतीती।
सो माया ते बचन गोसाईं तुम्हरी महिमा जानि न जाई।
तुम उपजावहु पालहु नासा तरन नाम बिनु जपे न श्वासा
नृप यह कथा सनंदन गाई सनकादिक मुनि ने हरखाई
नर नारायन नारद पाहीं नारद व्यास सों मोहि सक नाहीं
सोइ चरित मैं तुमहि सुनावा बा बिधि वेद ब्रह्म जस गावा

## दोहा

यह अस्तुति जो नर करहिं सुनहिं हृदय हरखाहि
जगन्नाथ जग सुख लहहिं अंत बिष्णु पुर जाहि

इति श्री कृष्ण सागरे शुकदेव परीक्षित सम्वादे श्री कृष्ण दास जगन्नाथ कृते नर नारायण नारद सम्वादे नाम सप्तमो तितमोऽध्यायः

## दोहा

मुनिबर हरि के भक्त जन रहहिं दरिद्र दुखेश।
धन आदिक बहु लहहिं ते पुजहिं जो देव महेश

## चौपाई

सो कारन मोहि कहहु बुझाई कहन लगे मुनि मनु चित लाई
भजन होत हरि दर्ब बिहीना तातें हरि राखहिं जन दीना

धनते नर होवहिं अभिमानी माया बस मति रहति भुलानी।
रुद्र बहुत असुरन बर दीन्हे आपै कष्ट अन्त तिन लीन्हे॥
वृकासुर दिन एक तप लागी बनगा मिलिगै नारद त्यागी
पूछा सुनि कहु मोहि बुझाई सपदि प्रसन्न को होत गोसाईं
विष्णु कमल भव अपर महेशा इनमें को अस पुछेउ नरेसा॥
कहा सपदि होहीं त्रिपुरारी तातें निन्ह तप करहु मुरवारी
सुनि होमन लगु काटि के मासा सप्त दिवस तप किये हुलासा

## दोहा

अष्टम दिवस अन्हाइ के काटन चाहा माथ
अग्नि कुंड ते प्रकट तब होगै भोला नाथ॥

## चौपाई

नीर कमंडल तेहि तन सींचा दिव्य रूप पावा सो नीचा॥
मांगन कहा तबहि बरदाना कहा देहु मोहि अस भगवाना
जाके माथ धरौं मैं हाथा होय भस्म तच्छन सो नाथा॥
अैसहि होत कहा जब राई तब निश्चर के मन अस भाई
इन के माथ राखि कर मारी हरिलै जाउं पारबति नारी॥
अस जिय ठानि के धावा जबहीं भागे शिव संकर तहं तबहीं।
रक्षा कोउ सकानहि करना। तबगै जहं प्रन तारत हरना॥
समाचार सब दीन्ह सुनाई। धरा रूप हरि बिप्र सुहाई॥

## दोहा

जहं निश्चर आवत रहा गये तहां असुरारि

पूछत भये सो कहिदिये जिमिरहबर त्रिपुरारि

## चौपाई

कहहरि रहशिव भंगकेमाते बचन सत्य होवत किमि ताते
निजसिरधरिकरिलेहुपरिच्छा पूरनकरहुतबहिनिजइच्छा
सुनतहिकरनिजमस्तकराखा धरतहिमात्र भया तन रारवा
हर हरषे हरि के गुन देखी मुदितभये सब सुरन्ह बिसेखी
बरषावन लग सुमन नरेशा बिदाकिये हरि तबहिमहेशा
मुक्तिदीन्ह भस्मासुरनाथा पुनि ऋास हरि ऋापन हाथा

## दोहा

रुद्रज्ञान लीला महा कहै सुनै नर जोइ ॥
जगन्नाथ जग सुखलहै ऋंत मुक्तिफल होइ

इतिश्रीकृष्णसागरे शुकदेवपरीक्षितसम्वादे श्रीकृष्णदासजगन्नाथकृते भस्मासुरबधोनामऋष्टासीतितमोऽध्यायः

## दोहा

राजन सप्त ऋषीश्वर भृग्वादिक ऋासीन।
नदी सरस्वति तीर पर तहां बात ऋस कीन

## चौपाई

सबदेवन में को बड़ ऋहई विष्णु कोउ शिवभज कोउ कहई
भृगु मुनि कह जो लखन बुराई मंद करत जो समझ भलाई ॥

प्रभु महँ प्रेम सोइ जगजानी करव परिच्छा अस मन मानी
अस कहि अज के लोक सिधाये बिना दंड बैठे तहँ आये ॥
विधि चाहा सराप मुनि दीन्हा पुत्र जानि नृप नहिं कछु कीन्हा
जानि रजोगुन मेंजग कर्त्ता पुनि गे जहां रहे संघर्त्ता ॥
मुनिहि देखि शिव मिलिवे आये छूवहु नहि अस मुनी सुनाये
तुम्हरे गले मुंड की माला सुनिभा शिव कहं कोप बिसाला

## दोहा

लै त्रिशूल मारन चले दीन्ही उमा बचाय ॥
इन्ह हित तमो गुन जान बस मुनि बैकुंठ सिधाय

## चौपाई

तहँ बिनु रवि ससि रह उजियारा सोहत महि हाटक आकारा
कूप बापि बर सोह तड़ागा सब ऋतु तरु पुष्पित फल लागा
तहँ मुनि गे हरि मन्दिर माहीं जहां रहे सोवत सक नाहीं ॥
चरण एक छाती महँ मारा तुरत उठे हरि करत उचारा ॥
कोमल चरण कठिन मम छाती कष्ट सह्यो मुनि तुम सब भाँती ॥
तुम मोहि कीन्ह पवित्र गुसाईं ताते चरण चीन्ह सुख दाई ॥
सब सदा हम भेद न नाहीं बोलत भै अस प्रभु मुनि पाहीं
देखि मुनी अस विष्णु सुभाऊ अस्तुति करन लगे मन भाऊ

## दोहा

रमा चहा मुनि नाथ को देनो कछुक सराप ॥
हरि त्रासन सो नहिं दिये किये विदा तब आप

## चौपाई

तब मुनिश्राद् ऋषिनकेपासा तिनहु परिछा कीन्ह प्रगासा
लछमीपति सम दूसर नाहीं हैदयाल मुनिगन जग माहीं।
सुनत श्रटलभा प्रेम सभीकहें सब सुरतजिलग भजन हरी कहें
राजन दिन एक हरिपुर माहीं कहा बिप्र एक श्रस नृप पाहीं
हौ श्रधर्मरत सुनु तुम राजा मरे पुत्र मम सप्त सुकाजा ॥
जहँ के भूप होत श्रघ रवानी तहां होत श्रस बिपति निदानी
श्रस कहि सप्त पुत्र तहँ लाई रविदीन्हो द्विज सभा मझाई
गर्ब बिवस श्रर्जुन तहँ भाखा करब पुत्र तुम्हरो मैं राखा।

## दोहा

पुत्र जनन मोहिं लीजिये बोलि बिप्र दुख माहिं
तब मम तेहि रक्षा करब या में संशय नाहिं॥

## चौपाई

नाहि त जरब श्रग्नि लहरावा द्विज कह सुवन समै नब श्रावा
बोलि लिये श्रर्जुन निज श्रोरा गये धनुष लै गर्ब न थोरा ॥
बानन ते लीन्हो गृह घेरी ॥ पुत्र जन्यो कछु भई न बेरी ॥
होय गयो श्रदृश्य नृपाला श्रर्जुन कहें गा गर्ब बिसाला
सब लोकन महँ फिरे बहोरी तदपि न हाल मिलो तेहि कोरी
लज्जित होइ द्वारका श्रावा जरन हेत सब साज बनावा
गर्ब हरन तब श्री कंसारी ॥ तेहि मग लेइ तहां पगु धारे॥
रमानाथ श्रष्टा भुज जहवां शेषासूढ़ रहहिं प्रभु तहंवां।

## दोहा

देखि स्याम अस्तुति किये तब बोले भगवान।
तुमहि मिलन हम विप्रके लीन्ह सुतनके प्रान
मंगादिये तब बालकन हरि तब हरषिनिदान
करि प्रनाम लै बालकन कीन्ह द्वारका प्यान।

## सोरठा

अर्जुन द्विज कहं जाय पुत्रन दै लज्या छुडेव
चरन पड़ा यदुराय जीत्यूं भारत नाथ बल॥
भोजन सुनहिं सप्रेम जगन्नाथ यह हरिकथा
तिनके सुतन सछेम रहहिं लहहिं सुख संपदा
इतिश्री कृष्णा सागरे शुकदेव परीक्षित सम्वादे श्री कृ-
ष्णदास जगन्नाथ कृते श्रेष्ठ देव बिचार
करनो नाम एको नन वतितमो ऽध्याय:॥॥

## दोहा

भूपति लीला अकथ प्रभु पावे नहिं कोउ पार।
धन मैं अरु पुनि धन्य तुम कहा सुनेउ श्रुति सार

## चौपाई

राजन पुरी द्वारिका माहीं अतिशोभा रहबरनि न जाहीं॥
बाग तड़ाग सोह बहु जाहां फूले फले वृक्ष बहु ताहां॥
आदु महाजन बहुत मकेरे निज व्यवसाय करे बहुतेरे॥

मल्लयुद्ध करते सब बीरा सिंघनाद ने करें गभीरा ॥
सन्ततनहां पुरी के बासी सुमिरन करें कृष्ण अबिनासी
सोलह सहस्र एक सत आठा जान प्रभुकी नारिन कर ठाठा
सेवा करें हरिहि हरषाई ॥ दिवस एकजलनिधि में जाई
सबनारिन संग धरिएकरूपा बिहरनलगेजगत सुरभूपा॥

दोहा

चकई बोलि उठी तहां तेहि लखिकहएकबाल
मैंजानी तेरी दशा पतिबिनु बकत बेहाल।

चौपाई

सिंधुशब्दमुनिकह एकबाला यामेंसयनकिये जन पाला
तातेबोलतजलधिसुखारी। पुनिदूकससि कीओरनिहारी
बोली तुमहरि दरशन पावा निजतनके सब रोग नसावा
पर्वतदेखिकहत एक नारी तुमकिय तप गोबर्द्धन धारी
राजन या विधिसबहरिबाला प्रेममगन कह बचन रसाला
याविधिकरत बिहारबिहारी सेवतपुरत मनोरथ नारी।
पुत्रबढ़े बहु श्री बनवारी ॥ गुरुसंख्या तिन्ह कहोंविचारी
तीनकोटि चत्वारिस आठा इतेसहस्र अरु बिंसत ठाठा।
दीनबन्धुसंतन जन प्राना करत रहे रक्षा कुल दाना ॥

छन्द

करतेदुतेजो दानरक्षन बंस आपन के लिये
सोएक ऋषिदुर्वास स्रापित लड़परस्पर मरगये

हरिबंशएक अनिरुद्धबालक वज्रनाभह्वोमहा
सोइभयोराजानगरमथुरा प्रजन्हसुखअतिसयलहा
तेहिबंशमेंव्रतबाहुअरु सतसेनभै राजाबली ॥
दोउधर्मपालकदानिद्विजसुखइमिबढ़ीवंसावली
श्रीराधिकाअवतारलक्ष्मी सखिनसंगलीलाघनी
सोसकल मथुरा द्वारका कीजगन्नाथकछुकभनी

## सोरठा

भयहरिअंतरध्यान करिलीला पावन महा।
दशमस्कन्धबखान कीन्हेउ मैं हरिकीकृपा।
करहिंसुनहिंजेलोइ निहछलहैहरिभक्तियुत।
कलिहिकलुषसबखोइ अंतमुक्ति पावहिंअवस

## चौपाई

अतिदुर्लभहरिकेपदप्रेमा पावहिंपढ़हिंसुनहिंकरिनेमा
भर्ताभावसुने जो नारी ॥ पावहिगतिसमान व्रजनारी
सबतीरथमज्जनफलपावहिं पुरहिमनोरथजो मन लावहिं
जपतपमखकीन्हेफलजोई हरिजसकहतलहतनर सोई
सबपातकजगतूलसमाना यदुपतिकथाकहसानुबखाना
कलमलकढिनग्रस्योनसनारी रहहिंविषैमदते मतवारी ॥
तिनहुअवणचितदैजोकरिहैं बिनुप्रयासभवसागरतरिहैं
मैं जड़मनुजकुटिलकुविचारी कथाकथातेलीला सारी ॥
कहेउकरहुसंतनअवछोहू दास जानिमोहिनिरतविमोहू

दोहा

मोसमाननहिंपातकी तुमसमपावन देव।
भक्तिअभयवरदीजिये हेनन्दन वसुदेव।
जगदाधार जगत्पति श्रीपति नन्दकुमार।
जगन्नाथको सरन लखि करुभवसागरपार।

सोरठा

कियेउकृष्णगुनगान अपनीमतिअनुहार मैं
बालबुद्धिअज्ञान लेहु सुधारिसुजानजन ॥

दोहा

अंगरेजीनित पढ़तहौं समयमिलत बहुथोर।
मासतीन के मध्यमें कहेउ चरित चित चोर।

इतिश्री कृष्णसागरे शुकदेवपरीक्षितसं-
वादेश्री कृष्णदासजगन्नाथकृते
श्रीकृष्णवंशविस्तारवर्णो-
नोग्रन्थसमाप्तोना-
मनवतित-
मोऽध्या
यः
*

## अथ आरती

श्री आरति कीजै श्री मोहन लाल जी की ॥ बिनसत पाप कोटि जन्म के पावन सुख सब काल ॥ धु० कमल नयन सिर मुकट बिराजै कानन कुंडल धारी ॥ कोटिन कामदेव छबि लज्जित सोभत चन्दन भाल ॥१॥ उर बैजन्ति के माल बिराजै अंग पितांबर धारी ॥ कर बंसी सोभा अधिकार्इ टेरत श्री नंदलाल ॥२॥ कटि किंकिनि पग नेपुर बाजैं शोभा सिंधु बिहारी ॥ माखन चोरि करत घर घर प्रभु संग हि गोपन बाल ॥३॥ सो छबि मेरे हृदय बसो प्रभु हे गोबरधनधारी ॥ याहि सुखद जगन्नाथ दास के हे दीनन के दयाल ॥ ४ ॥ आरति कीजे श्री मोहन लाल जी की ॥

## अथ छन्द गीतक श्रीकृष्णद्विजकृत

निजबंस कमल प्रगास रबि सम ज्ञान अम्बुधि मानिये
जस उजागर नीति आगर भाग सागर जानिये ॥
नामदेव चन्दलाल कायथ करन जग में सब कहै ॥
श्रीराम पद पाथोज षट पद सरिस मन जिन के रहै ॥१॥

## चौपाई

राम चरन तिन के सुत भयऊ संत चरन रत निसिदिन रहेऊ ॥
पढ़े जमन विद्या परबीना गुन गाहक हरिपद लव लीना
बिष्णु प्रसाद तिन हि सुत भयऊ बिष्णु प्रसाद नाम तेहि दयऊ

निजकुलकमलप्रकाशितकरही दानदेइ द्विजगनसुखभरही

छन्द

जगन्नाथसहायतिनसुतजानियेगुननिधिमहा।
सकलसास्त्रप्रवीनजानोकृष्णसागरजिनकहा
तिनअनुजहैयदुनाथतिनकोवर्षत्रयकेजानहू
बाललीलाकरतबहुविधिपितहिसुखनिधिमानहू ॥४॥

सोरठा

वर्षअष्टदसजान जगन्नाथ के जन्म ते
तिनभाषेउपरमान यहपुस्तकलिखिदेहुमोहि ॥५॥
हरिहरनाथसहाय जगन्नाथं कहं सुतभये
बालचरितहरखाय करतबहिक्रमवर्षदुइ ॥६॥

दोहा

निजगुनसमश्रीकृष्णद्विज लिखिसंपूर्णकीन्ह ॥
जगन्नाथके हुकुमते तिनमोहिबहुधनदीन्ह ॥६॥
त्रयनिसिकेरग्रहअनंनियुतसंवतसंख्याजानु
फाल्गुनशुक्लचतुर्दशी शनिवासरअनुमान ॥७॥

इतिजगन्नाथसहायकृतकृष्णासागरसंपूर्ण

सोहा

जोजनजहांतेआयऊ कथासुन्योमनलाय॥
सोसबनिजनिजधामको विदाहोंयहरषाय

| नामकिताब | नामकिताब | नामकिताब |
|---|---|---|
| सतसई रामायण | कल्यसूत्र भाषा | इन्द्रजाल नागरी |
| कवितावली रामायण | विनय पत्रिका सटीक | कायस्थ कुल भास्कर |
| गीतावली रामायण | किताब पढ़वारी ४ भाग | क़िस्सह गोपीचन्द भरथरी |
| रामायण दोहावली | रसराज | बहार बिन्द्रावन |
| सुन्दरी चरित्र | कुल प्रिया | पद्मावती खण्ड लालचंद |

## कुलसागर का शुद्धाशुद्धपत्र॥

| पृष्ठ | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| ४८ | ३ | पायो | पाई |
| १०७ | ८ | सारा | हारा |
| २१७ | ११ | हम | मैं |
| २२० | १३ | हम | मैं |

इति

| | | |
|---|---|---|
| हारीत स्मृति नागरी | मार्कण्डेय पुराण | गुलसनोवर नागरी |
| भगवद्गीता सटीक नागरी | बैताल पच्चीसी | चित्र चन्द्रिका |
| रामायण राम विलास | दानलीला नागलीला | छन्दोर्णव पिङ्गल |
| यमुनालहरी | सभाविलास | हितोपदेश नामामालगुजारी |
| षट्पञ्चाशिका | विक्रम विलास | हितोपदेश नामा बन्दोबस्त |

## कृपासागर का शुद्धाशुद्ध पत्र॥

| पृष्ठ | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| ९ | १२ | हम | मैं |
| १० | १४ | हम | मैं |
| ११ | १० | हम | मैं |
| १५ | १७ | हम | मैं |
| ५४ | १६ | हम | मैं |
| ५७ | ५ | हम | मैं |
| ६१ | १७ | हम | मैं |
| ६० | ४ | हम | मैं |
| १२१ | १२ | हम | मैं |
| १२८ | १० | हम | मैं |
| अथ उत्तरार्द्ध | | | |
| १५२ | १२ | हम | मैं |
| १७९ | १२ | भारा | हारा |
| = | १५ | हम | मैं |
| १८१ | १७ | हम | मैं |
| १८२ | १६ | हम | मैं |
| १८३ | २ | हम | मैं |
| १८६ | १ | गये | गई |
| २०७ | ११ | हम | मैं |
| = | १२ | हम | मैं |
| २१२ | १७ | हम | मैं |
| २१४ | ११ | भा | भद्र |
| २१५ | ३ | हम | मैं |
| = | १७ | भा | भई |
| २२६ | ५ | हम | मैं |
| २३३ | ३ | हम | मैं |
| २३४ | १३ | हम | मैं |
| २३५ | १४ | हम | मैं |
| २४० | १२ | हम | मैं |
| २४४ | १५ | हम | मैं |
| २४५ | १० | ह | मैं |

| नामकिताब | नामकिताब | नामकिताब |
|---|---|---|
| सतसई रामायण | कल्पसूत्र भाषा | दून्द्रजाल नागरी |
| कवितावली रामायण | विनय पत्रिका सटीक | कायस्थ कुल भास्कर |
| गीतावली रामायण | किताब पढ़वारी ४ भाग | क़िस्सह गोपीचन्द भरतरी |
| रामायण दोहावली | रसराज | बहार बिन्द्रावन |
| सुन्दरी चरित्र | कृष्ण प्रिया | पद्मावती खण्ड शालखंड |
| रामायण नानार्थ नो | भाव गीता विष्णु सहस्र | लावनी व शोर बनारसी |
| सङ्कृहावली | नाम सहित | युगल विलास |
| दूसरी रामायण माला | ज्ञान स्वरोदय | भाषा महाभारत विजय मु- |
| तीसरी रामायण गीतावली | भरतरी गीत | क्तावली |
| चौथी ज्ञान दोहावली | देवी भागवत नागरी | जनक पच्चीसी |
| पांचवीं रस सारिणी | रामध्याहोत्सव | शृंगार प्रकाश |
| छठी तिथि बोध | बिहारी सतसई सटीक | दोहावली रत्नावली |
| सातवीं पुस्तक मानदन्तक | विश्राम सागर | स्त्री दर्पण |
| सत्यनारायण की कथा | रामलगन | समर बिहार विन्द्रावन |
| शनिश्चर की कथा | मनुस्मृति उर्दूटीका सहि | रमल सार |
| राम कलेवा | वैष्णवी सन्ध्या | कथा चित्र गुप्त |
| तुलसी शब्दार्थ प्रकाश | याज्ञवल्क्य भाषाटीका | कायस्थ दर्पण |
| कविकुल कल्पतरु भाषा | प्रबोध चन्द्रोदय नाटक | कृष्ण बाल लीला |
| प्रेमरत्न | आनन्दाऽमृतवर्षिणी | गीत गोविन्द सटीक |
| बनयात्रा | निर्णयसिन्धु | रामाभिषेक नाटक |
| भजनावली | ज्ञानमाला | दून्द्रसभा नागरी |
| बारहमासा फ़क़ीर शलाव | देवज्ञाभरण | सिंहासन बत्तीसी |
| रत्ना | ज्ञान चालीसो | शुक बहत्तरी |
| बारहमासा बलदेव प्रसाद | शङ्कर दिग्विजय भाषा | शपूर्च्छ कथा अर्थात गु- |
| मनोरञ्जन | योग बाशिष्ठ देवनागरी | ल बकावली |
| हारीत स्मृति नागरी | मार्कण्डेय पुराण | गुल सनोबर नागरी |
| भगवद्गीता सटीक नागरी | बैताल पच्चीसी | चित्र चन्द्रिका |
| रामायण राम विलास | दान लीला नाग लीला | छन्दोर्णव पिङ्गल |
| यमुना लहरी | सभा विलास | हिदायत नामा मल गुजारी |
| षट पञ्चाशिका | विक्रम बिलास | हिदायत नामा बन्दोबस्त |

| नामकिताब | नामकिताब | नामकिताब |
| --- | --- | --- |
| बिसार्थी की प्रथमपुस्तक | अर्थात् का नूनलगान | वर्णमालाशिक्षा |
| बालबोध | मुक्तावलिफलगरबोधशि- | मङ्गलकोष |
| गरुड़पुराणप्रेतकल्प | माली | पत्रदीपिका |
| मनोहरकहानी | ऐक्ट २३ सन् १८७४ ई० | भारतखण्डका |
| सौख्यतत्त्वकौमुदी | ऐक्ट २० सन् १८७२ ई० | क्षेत्रप्रकाश |
| अवतारकथामृत | सा पूते तालीम की | पत्रहितेषिणी |
| क़ानून | पुस्तकें | रामायणसातोंकाण्ड |
| नाज़ीरएतहिन्दअर्थात् | भाषालघुव्याकरणसा | बालकाण्ड |
| ऐक्ट ४ सन् १८५४ ई० | तथा २ | अयोध्याकाण्ड |
| ऐक्ट २५ सन् १८६६ ई० | धात्वर्थमंजरी | आरण्यकाण्ड |
| ज़ाबितेफ़ौजदारी | अक्षरावली | किष्किन्धाकाण्ड |
| मज़मूआ ऐक्टलगानस- | अक्षरदीपिका | सुन्दरकाण्ड |
| वधजिसके साथजोचेलि | विद्याङ्कुर | लङ्काकाण्ड |
| खे हुये ऐक्ट संयुक्त हैं॥ | बालबोध | उत्तरकाण्ड |
| ऐक्ट १० सन् १८७२ ई० नदीर | भाषाचन्द्रोदय | अक्षरारम्भ |
| ऐक्ट १९ सन् १८६३ ई० | दुग्लिस्तानकादूतिहास | भाषातत्त्वदीपिका |
| ऐक्ट १४ सन् १८६४ ई० | गणितत्लना १ भाग | बालाभूषण |
| ऐक्ट १६ सन् १८६१ ई० | तथा २ तथा ३ | हितायतनामा मुदर्रिसान् |
| ऐक्ट नं० १६ सन् १८६६ ई० | गणितप्रकाश १ भाग | हस्तकबन्दी |
| ऐक्ट १० सन् १८६६ ई० | तथा २ तथा ३ तथा ४ | शिक्षावली |
| ऐक्ट १५ सन् १८७० ई० | शिशुबोध | भोजप्रबन्धसार |
| ऐक्ट १० सन् १८५४ ई० | पशुचिकित्सा | राजनीति |
| ऐक्ट ५ सन् १८६१ ई० | क्षेत्रचन्द्रिका १ भाग | स्त्रियोंकी हितोपदेशिका |
| ऐक्ट १० सन् १८६२ ई० | तथा २ | अवधभूगोल |
| ऐक्ट १८ सन् १८६४ ई० | रेखागणित १ भाग | कवित्वरत्नाकर |
| ऐक्ट २६ सन् १८६७ ई० | तथा २ | भूगोलदर्पण |
| ऐक्ट नं० १६ सन् १८६० ई० | सूरजपुरकीकहानी | बीजगणित १ भाग |
| क़वायदरेलवेकोएक्टके | विद्याचक्र | कैथीवर्णमाला |
| साथक़ानून भी हैं॥ | भूगोलतत्त्व | महाभारतभाषाछन्दबंध |
| ऐक्ट २९ सन् १८७१ ई०- | पदार्थविद्यासार | |

